3 राजधानी
भाषा विवि में दाखिले की समय सीमा बढ़ी

6 अभिमत
भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति

11 विदेश
इजराइल की सीरिया में गोलीबारी, 18 की मौत

12 स्पोर्ट्स
भारत ने जापान को 5-1 से हराया

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 315
लखनऊ, मंगलवार, 10 सितंबर, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

मुक्त व्यापार समझौतों को संशोधित कर रहा भारत

राष्ट्रीय-10

69 हजार सहायक शिक्षकों की नई चयन सूची तैयार करने के आदेश पर रोक

भाषा। नई दिल्ली

नई दिल्ली में सोमवार को मामले की सुनवाई करती प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेवी पारदीवाला तथा जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ।

उच्चतम न्यायालय ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के उस आदेश पर सोमवार को रोक लगा दी, जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार को राज्य में 69,000 सहायक शिक्षकों की नई चयन सूची तैयार करने को कहा गया था। शीर्ष अदालत ने जून 2020 और जनवरी 2022 में जारी शिक्षकों की चयन सूचियों को रद्द करने संबंधी उच्च न्यायालय के आदेश पर भी रोक लगा दी, जिनमें 6,800 अभ्यर्थी शामिल थे। उच्च न्यायालय के फैसले पर रोक लगाते हुए प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने रवि कुमार सक्सेना और 51 अन्य द्वारा दायर याचिका पर राज्य सरकार और उप्र बेसिक शिक्षा बोर्ड के सचिव सहित अन्य को नोटिस भी जारी किए। शीर्ष अदालत ने कहा कि वह इस मामले में अंतिम सुनवाई करेगी। साथ ही, न्यायालय ने संबंधित पक्षों के वकीलों से कहा कि वे अधिकतम सात पृष्ठों के संक्षिप्त लिखित नोट दाखिल करें।

पीठ ने कहा कि वह याचिका पर सुनवाई 23 सितंबर से शुरू होने वाले सप्ताह में तय करेगी। उप्र सरकार की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी शीर्ष अदालत में पेश हुईं। उच्च न्यायालय ने अगस्त में, राज्य सरकार को प्रदेश में 69,000 सहायक शिक्षकों की नियुक्ति के लिए नई चयन सूची तैयार करने का निर्देश दिया था। उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ ने महेंद्र पाल और अन्य द्वारा पिछले साल 13 मार्च को एकल न्यायाधीश के आदेश को चुनौती देने वाली 90 विशेष अपीलों का निस्तारण करते हुए यह आदेश जारी किया था। खंडपीठ ने निर्देश दिया था कि नई चयन सूची तैयार करते समय, वर्तमान में कार्यरत सहायक अध्यापकों पर किसी भी नुकसानदेह प्रभाव को कम किया जाना चाहिए, ताकि वे जारी शैक्षणिक सत्र को पूरा कर सकें। खंडपीठ ने कहा था कि इस निर्देश का उद्देश्य छात्रों के पठन-पाठन में व्यवधान को रोकना है।

उच्च न्यायालय की खंडपीठ ने पूर्व में जारी आदेश को संशोधित किया था और कहा था कि सामान्य श्रेणी की मेधा सूची में स्थान बनाने वाले आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों को उसी (सामान्य) श्रेणी में डाला जाना चाहिए। उच्च न्यायालय ने एकल न्यायाधीश के उस फैसले को बरकरार रखा था, जिसमें आरक्षित श्रेणी के 6,800 अभ्यर्थियों की पांच जनवरी 2022 की चयन सूची को रद्द करने का फैसला किया गया था। खंडपीठ ने राज्य सरकार और अन्य संबद्ध प्राधिकारों को तीन महीने के भीतर नई चयन सूची जारी करने की प्रक्रिया पूरी करने का निर्देश दिया था। उच्च न्यायालय एकल न्यायाधीश के फैसले के खिलाफ उस याचिका पर सुनवाई कर रहा था, जिसमें दलील दी गई थी कि 69,000 शिक्षकों के चयन में राज्य द्वारा प्रदान किया गया आरक्षण सटीक नहीं था और 6,800 शिक्षकों की नियुक्ति की वैधता पर सवाल उठाया गया था। एकल पीठ ने अपने निर्णय में कहा था कि शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) में आरक्षण का लाभ लेने वाले अभ्यर्थियों को सामान्य श्रेणी का कट ऑफ मार्क्स पाने पर अनारक्षित वर्ग में रखा जाना सही है, क्योंकि टीईटी किसी अभ्यर्थी को सिर्फ सहायक शिक्षक भर्ती परीक्षा में भाग लेने के लिए उपयुक्त बनाता है। हालांकि, बाद में खंडपीठ ने स्पष्ट किया था कि यदि ऐसे अभ्यर्थी पात्रता मानदंड को पूरा करते हैं, तो उन्हें सामान्य श्रेणी में स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए।

जांच में युवक एमपॉक्स पॉजिटिव निकला, केंद्र बोला, चिंता की बात नहीं, सतर्क रहें

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सरकार ने सोमवार को कहा कि हाल ही में एमपॉक्स प्रसार वाले देश से यात्रा करने वाले युवा पुरुष के परीक्षण में उसे इस वायरल बीमारी पीड़ित पाया गया। हालाँकि, आशंकाओं को दूर करने के लिए, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने यहां जारी एक बयान में कहा कि यह वायरस पश्चिम अफ्रीकी क्लैड 2 का है, जिसका वर्तमान क्लैड 1 सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल से कोई संबंध नहीं है। मंत्रालय के बयान में कहा गया है, व्यक्ति, एक युवा पुरुष, जिसने हाल ही में एमपीओएक्स ट्रांसमिशन का अनुभव करने वाले देश से यात्रा की थी, वर्तमान में एक निर्दिष्ट तृतीयक देखभाल अलगाव सुविधा में अलग-थलग है। रोगी चिकित्सकीय रूप से स्थिर है और किसी भी प्रणालीगत बीमारी या सह-रुग्णता के बिना है। इसमें कहा गया है कि यह एक अलग मामला है, जो जुलाई 2022 के बाद भारत में सामने आए पहले के 30 मामलों के समान है। (शेष पृष्ठ 9)

उप्र सरकार ने आईएएस अधिकारी को बलि का बकरा बनाया : कोर्ट

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को उत्तर प्रदेश सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि उसने एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी को अदालत को गलत जानकारी देने के लिए बलि का बकरा बनाया है तथा आदर्श आचार संहिता लागू होने के दौरान दोषियों की सजा माफी से संबंधित फाइलों पर कार्रवाई न करने के लिए मुख्यमंत्री कार्यालय पर दोषारोपण किया। शीर्ष अदालत ने कहा कि राज्य सरकार के अधिकारियों ने जेल अधिकारियों का वह ईमेल नहीं खोला जिसमें उन्हें अदालत के आदेश के बारे में बताया गया था कि लोकसभा चुनाव के कारण छह जून तक लागू आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) सजा माफी संबंधी फाइलों के प्रसंस्करण में आड़े नहीं आएगी। न्यायमूर्ति अभय एस. ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने कहा कि वह सच्चाई का पता लगाने के लिए मामले की गहराई से जांच करेगी। पीठ ने राज्य सरकार को माफी से संबंधित फाइलों पर कार्वाई करने के अपने 13 मई के आदेश के बाद की घटनाओं का सही क्रम बताते हुए अपनी स्थिति स्पष्ट करने का एक आखिरी मौका दिया।

पीठ ने कहा, हम राज्य के मुख्य सचिव को 24 सितंबर तक इस अदालत में एक व्यक्तिगत हलफनामा दायर कर पूरे प्रकरण और राज्य तथा उसके अधिकारियों के आचरण के बारे में स्पष्टीकरण देने का निर्देश देते हैं। शीर्ष अदालत ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के वरिष्ठ अधिकारी राजेश कुमार सिंह को भी कारण बताओ नोटिस जारी किया, जो हाल तक उत्तर प्रदेश के जेल प्रशासन विभाग के प्रमुख सचिव थे, जिन्हें राज्य सरकार ने अदालत को गुमराह करने के लिए सात सितंबर को हटा दिया था।

पीठ ने सिंह को नोटिस जारी करते हुए पूछा कि उनके खिलाफ आपराधिक अवमानना की कार्यवाही क्यों न शुरू की जाए। न्यायालय ने कहा, प्रथम दृष्टया हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हलफनामे में उनके (आईएएस अधिकारी) द्वारा लिया गया रुख 12 अगस्त को उनके द्वारा दिए गए बयानों के विपरीत है, जब वे डिजिटल माध्यम से अदालत के समक्ष पेश हुए थे। पीठ ने कहा, उनके कारण किसी की स्वतंत्रता दांव पर लग गई। साथ ही पीठ ने निर्देश दिया कि अदालत के समक्ष विरोधाभासी बयान देने के लिए झूठी गवाही की कार्यवाही शुरू करने की खातिर आईएएस अधिकारी के खिलाफ नोटिस भी जारी किया जाए। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल के.एम. नटराज ने कहा कि आईएएस अधिकारी को हाल ही में सभी कर्तव्यों से मुक्त कर दिया गया है और उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू की गई है। पीठ ने राज्य सरकार की ओर से पेश अतिरिक्त महाधिवक्ता गरिमा प्रसाद से कहा, प्रथम दृष्टया, हम पाते हैं कि उन्हें राज्य सरकार द्वारा बलि का बकरा बनाया जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि रिकॉर्ड से (शेष पृष्ठ 9)

नई दिल्ली में रक्षा मंत्रालय ने रक्षा सचिव गिरिधर अरामाने और वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी की उपस्थिति में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।

एसयू-30 एमकेआई के लिए एचएएल 26 हजार करोड़ में बनाएगा इंजन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

'आत्मनिर्भर भारत' पहल को बढ़ावा देते हुए, रक्षा मंत्रालय ने सोमवार को सरकारी एयरोस्पेस प्रमुख हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के साथ एसयू-30एमकेआई विमानों के लिए 240एएल-31एफपी एयरो इंजन के लिए 26,000 करोड़ रुपये से अधिक की लागत पर एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि एयरो-इंजन का निर्माण एचएएल के कोरापुट डिवीजन द्वारा किया जाएगा और उम्मीद है कि यह एसयू-30 बेड़े की परिचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए भारतीय वायु सेना की आवश्यकता को पूरा करेगा।

इंजनों का सौदा भारतीय वायुसेना के लड़ाकू स्क्वाड्रनों के घटते बेड़े और एचएएल द्वारा तेजस जेट की आपूर्ति में देरी पर चिंताओं के बीच हुआ है। भारतीय वायुसेना के लड़ाकू स्क्वाड्रनों की संख्या कम से कम 42 की अधिकृत ताकत के मुकाबले घटकर लगभग 30 रह गई है। अनुबंध समझौते पर रक्षा सचिव गिरिधर अरामने और वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी की उपस्थिति में मंत्रालय और एचएएल के वरिष्ठ अधिकारियों ने हस्ताक्षर किए। एचएएल अनुबंध वितरण कार्यक्रम के अनुसार सालाना 30 एयरो-इंजन की आपूर्ति करेगा। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, सभी 240 इंजनों की आपूर्ति अगले आठ वर्षों में पूरी हो जाएगी। अधिकारी ने कहा, विनिर्माण के दौरान, एचएएल ने देश के रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र से समर्थन लेने की योजना बनाई है, जिसमें एमएसएमई (शेष पृष्ठ 9)

मोदी व क्राउन प्रिंस ने रिश्तों को नया आयाम दिया

पीटीआई। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को नई दिल्ली में हैदराबाद हाउस में अबू धाबी के क्राउन प्रिंस शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से मेंट की। *फोटो: रंजन डिमरी*

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अबू धाबी के वली अहद (युवराज) शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के साथ व्यापक वार्ता की तथा दोनों देशों ने समग्र रणनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करते हुए ऊर्जा सहयोग बढ़ाने के लिए सोमवार को चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए। अबू धाबी नेशनल ऑयल कंपनी (एडीएनओसी) और इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड के बीच दीर्घकालिक एलएनजी आपूर्ति के लिए एक समझौता और एडीएनओसी और इंडिया स्ट्रेटेजिक पेट्रोलियम रिजर्व लिमिटेड (आईएसपीआरएल) के बीच एक समझौता चार समझौतों में शामिल हैं।

विदेश मंत्रालय के अनुसार, अमीरात परमाणु ऊर्जा कंपनी (ईएनईसी) और न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल) ने भी बाराकाह परमाणु ऊर्जा संयंत्र के संचालन और रखरखाव के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। चौथा समझौता अबू धाबी तटवर्ती ब्लॉक-वन के लिए ऊर्जा भारत और एडीएनओसी के बीच उत्पादन रियायत समझौता है। भारत में फूड पार्क स्थापित करने के लिए गुजरात सरकार और अबू धाबी डेवलपमेंट होल्डिंग कंपनी पीजेएससी के बीच एक अलग समझौता किया गया।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने कहा कि मोदी और युवराज अल नाहयान ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने के उद्देश्य से भारत और यूएई के बीच बहुआयामी संबंधों पर चर्चा की। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारत-यूएई संबंधों में शानदार प्रगति हो रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज अबू धाबी के युवराज शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से मुलाकात की। जायसवाल ने कहा, दोनों नेताओं ने बहुआयामी भारत-यूएई संबंधों और नए एवं उभरते क्षेत्रों में व्यापक रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने के अवसरों पर चर्चा की। नाहयान अपनी दो दिवसीय भारत यात्रा के तहत रविवार को नई दिल्ली पहुंचे। मोदी से बातचीत के बाद शाह ने राजघाट जाकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी।

नाहयान ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से भी मुलाकात की, जिसके दौरान उन्होंने पश्चिम एशियाई देश में 35 लाख से अधिक भारतीय नागरिकों के कल्याण, विशेष रूप से कोविड महामारी के कठिन समय के दौरान विशेष देखभाल सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त अरब अमीरात नेतृत्व की प्रशंसा की। राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है कि मुर्मू अमीराती समाज के सभी पहलुओं में महिलाओं की भागीदारी और योगदान की उच्च दर को देखकर भी खुश थीं। बयान में कहा गया, 'दोनों नेता इस बात पर सहमत हुए कि भारत और यूएई के बीच एक समन्वित और बहुसांस्कृतिक विरासत वाला समाज है और महात्मा गांधी और हिज हाइनेस शेख जायद द्वारा दिखाया गया शांति, सहिष्णुता और सद्भाव का मार्ग हमारे राष्ट्रीय चरित्र में गहराई से समाहित है।'जायसवाल ने एक अन्य पोस्ट में कहा, उनकी शिक्षाएं हमें प्रेरित करती रहती हैं। हम यूएई के साथ अपनी दोस्ती को मजबूत कर रहे हैं। समझा जाता है कि अपनी बातचीत के दौरान मोदी और अल नाहयान ने गाजा में स्थिति सहित वैश्विक चुनौतियों पर भी विचार-विमर्श किया। भारत-यूएई संबंधों में पिछले कुछ वर्षों में काफी प्रगाढ़ता आई है। (शेष पृष्ठ 9)

विदेश में राहुल गांधी के बयान पर भाजपा का तीखा हमला

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अमेरिका के टेक्सास में भारतीय समुदाय को संबोधित करते राहुल गांधी।

भाजपा ने सोमवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर संयुक्त राज्य अमेरिका में उनकी नवीनतम टिप्पणी को लेकर तीखा हमला किया और उन्हें भारतीय लोकतंत्र में 'काला धब्बा' बताया। पार्टी ने आरोप लगाया कि यूपीए शासन के दौरान कांग्रेस और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बीच कथित तौर पर हस्ताक्षरित एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) के अनुसार, राहुल जब भी वह विदेश में होंगे, अपनी टिप्पणियों से भारतीय लोकतंत्र को कमजोर करने की कोशिश करेंगे।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने दावा किया कि कांग्रेस ने अपने शासन के दौरान 'चीन के साथ पार्टी-टू-पार्टी एमओयू' पर हस्ताक्षर किए थे। पार्टी ने अपने बयान में कहा, 'राहुल गांधी भारतीय लोकतंत्र को कमजोर करने के लिए जो प्रयास कर रहे हैं, वह उसी एमओयू का नतीजा है। अगर मैं गलत हूं तो मैं राहुल गांधी और (कांग्रेस अध्यक्ष) मल्लिकार्जुन खड़गे को एमओयू को सार्वजनिक करने की चुनौती देता हूं। राहुल की हालिया विदेश यात्रा पर भाजपा की यह पहली प्रतिक्रिया थी। उन्होंने कहा, हर कोई जानता है कि राहुल गांधी एक अपरिपक्व और अंशकालिक नेता हैं। लेकिन जब से वह (लोकसभा में) विपक्ष के नेता बने हैं, लोगों ने उनके कंधों पर एक बड़ी जिम्मेदारी डाल दी है। लेकिन मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि राहुल गांधी एक अपरिपक्व और अंशकालिक नेता हैं। भाटिया ने भाजपा मुख्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'राहुल भारतीय लोकतंत्र में काला धब्बा है। उन्हें यह भी नहीं पता कि जब वह किसी विदेशी देश का दौरा करते हैं तो क्या बात करनी है।' वह अमेरिका में एक कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के खिलाफ राहुल की टिप्पणी पर पत्रकारों के सवालों का जवाब दे रहे थे। राहुल ने भारतीय-अमेरिकी समुदाय को अपने संबोधन में कहा कि भारतीय (शेष पृष्ठ 9)

कालिंदी एक्सप्रेस मामले में आतंकवाद रोधी दस्ते ने शुरू की जांच

● पूछताछ के लिए छह संदिग्ध हिरासत में

भाषा। कानपुर, लखनऊ

कानपुर जिले में एलपीजी सिलेंडर और अन्य विस्फोटक सामग्री को ट्रैक पर रखकर कालिंदी एक्सप्रेस को पटरी से उतारने की कोशिश के सिलसिले में सोमवार को दो स्थानीय हिस्ट्रीशीटरों समेत छह लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया। कानपुर पश्चिम के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) राजेश कुमार सिंह ने इसकी पुष्टि की है। सिंह ने बताया कि हिरासत में लिए गए लोगों से गहन पूछताछ की जा रही है, लेकिन मीडिया से विस्तृत जानकारी साझा करने से इनकार कर दिया। पुलिस का कहना है कि इस खुलासे से जांच प्रभावित हो सकती है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि मामले में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 287 (आग या ज्वलनशील पदार्थ के संबंध में लापरवाही पूर्ण आचरण), 125 (दूसरों के जीवन या व्यक्तिगत सुरक्षा को खतरे में डालने वाला कृत्य) और विस्फोटक अधिनियम, 1884 तथा रेलवे अधिनियम के प्रावधानों के तहत अज्ञात आरोपियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है।

कानपुर जिले में एक बड़ा रेल हादसा होते-होते टल गया जब अज्ञात लोगों ने प्रयागराज से भिवानी जा रही

कालिंदी एक्सप्रेस के सामने पटरी पर रसोई गैस सिलेंडर रख दिया। इसे देखकर चालक ने इमर्जेंसी ब्रेक लगा दी और सिलेंडर उससे टकराकर दूर जा गिरा। घटना में आतंकवादियों का हाथ होने की आशंका के मद्देनजर आतंकवाद रोधी दस्ते ने भी मामले की अलग से जांच शुरू की है। एटीएस के पुलिस महानिरीक्षक (आईजीपी) नीलाब्जा चौधरी ने बताया कि उन्होंने अपनी जांच के तहत हर पहलू पर गौर किया है और एटीएस जो भी निष्कर्ष निकालेगी, उसे जल्द ही मीडिया के साथ साझा किया जाएगा। अपर पुलिस आयुक्त (कानून व्यवस्था) हरीश चंद्र ने बताया, रविवार रात आठ बजकर 20 मिनट पर प्रयागराज से भिवानी जा रही कालिंदी एक्सप्रेस के चालक ने बिल्हौर रेलवे स्टेशन से कुछ दूर पहले पटरी पर एक रसोई गैस सिलेंडर रखा देखा। इस पर उसने आपातकालीन ब्रेक लगा दी मगर ट्रेन सिलेंडर से टकरा गई और थोड़ा आगे जाकर रुक गई। सिलेंडर भी उछलकर दूर जा गिरा। गनीमत रही कि सिलेंडर इंजन में फंसकर फटा नहीं, वरना बड़ा हादसा हो सकता था। (शेष पृष्ठ 9)

कैंसर की दवा और नमकीन पर घटा जीएसटी

● स्वास्थ्य बीमा पर कर में कमी पर विचार के लिए होगा मंत्री समूह का गठन

पीटीआई। नई दिल्ली

नई दिल्ली में जीएसटी परिषद की बैठक में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, केंद्रीय मंत्री पंकज चौधरी तथा अन्य।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को कहा कि जीएसटी परिषद ने जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर कर की दर कम करने के लिए मंत्री समूह गठित करने का निर्णय किया है। साथ ही कैंसर की दवाओं और नमकीन पर माल एवं सेवा कर (जीएसटी) को घटाने का फैसला किया है। उन्होंने जीएसटी परिषद की 54वीं बैठक लिए गए फैसलों के बारे संवाददाताओं को जानकारी देते हुए कहा कि जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर जीएसटी दर में कमी के मामले पर विचार करने के लिए मंत्री समूह के गठन का निर्णय किया गया है। सीतारमण की अध्यक्षता वाली जीएसटी परिषद में राज्यों के वित्त मंत्री शामिल हैं। मंत्री समूह (जीओएम) की अगुवाई बिहार के उप-मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी करेंगे। वह फिलहाल जीएसटी दर को युक्तिसंगत बनाने के मंत्री समूह के भी प्रमुख हैं। सीतारमण ने कहा कि जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर जीएसटी दर के बारे में विचार के लिए मंत्री समूह में नए सदस्य शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि मंत्री समूह अक्टूबर के अंत तक अपनी रिपोर्ट देगा। बीमा प्रीमियम पर करधान का मुद्दा संसद में उठ चुका है। विपक्षी सदस्यों ने मांग की थी (शेष पृष्ठ 9)

अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन प्रतिबद्धता व ईमानदारी से करे पुलिसः योगी

● मुख्यमंत्री ने 73वें अखिल भारतीय पुलिस रेसलिंग कलस्टर का किया शुभारंभ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि प्राचीन काल से ही भारत की परंपरा में खेल और खेलकूद की गतिविधियों को महत्व दिया गया है। भारतीय ऋषि इस बात का उद्घोष करता है कि 'शरीरमाद्यम् खलु धर्म साधनम्' यानी धर्म के जितने भी साधन हैं, वह स्वस्थ शरीर से ही संभव हैं। स्वस्थ शरीर के लिए खेलकूद, योगासन, प्राणायाम आदि क्रियाएं अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वस्थ शरीर ही समर्थ समाज और सशक्त राष्ट्र की परिकल्पना को भी साकार कर सकता है।

मुख्यमंत्री सोमवार को सशस्त्र सीएम बल के 73 वें अखिल भारतीय पुलिस रेसलिंग क्लस्टर-2024 का उद्घाटन करने के बाद समारोह को संबोधित कर रहे थे। सीएम योगी ने प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागियों का अभिनंदन किया। योगी ने कहा कि 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत की संकल्पना के लिए जो कार्यक्रम प्रस्तुत किए थे, उनमें खेल और खेलकूद की गतिविधियां भी महत्वपूर्ण हैं। खेलो इंडिया खेलो, फिट इंडिया मूवमेंट, सांसद खेलकूद प्रतियोगिता, गांव-राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएं आयोजित हो रही हैं। हर तबके का व्यक्ति इन आयोजनों के साथ जुड़ रहा है। पेरिस में पैरालंपिक में भारतीय खिलाड़ियों के जज्बे को पूरा देश और दुनिया देख रही है कि कैसे बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए हमारे दिव्यांग खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा और तेज का लोहा मनवाने का भी काम किया है। यह दृश्य हमारे लिए इसलिए भी प्रसन्नता का है, क्योंकि यह प्रधानमंत्री की 'एक भारत श्रेष्ठ भारत की' परिकल्पना को भी साकार कर रहा है। सीएम योगी ने कहा कि खेल अपने कार्य के प्रति समर्पण के भाव के साथ तो जोड़ता ही है, साथ ही साथ जीवन में उतार-चढ़ाव के हर एक मोड़ पर जीतने की भी प्रेरणा देता है। अति प्रफुल्लित होकर अन्य के जीवन में बाधा पैदा करने की जो कुत्सित चेष्टाएं होती है, उसे रोकने का सामर्थ्य भी देता है। अगर किसी कारणों से सफलता नहीं प्राप्त हुई तो हर खिलाड़ी के अंदर शालीनता से उसे स्वीकार करने का भी सामर्थ्य भी पैदा करता है और जीवन इसी से चलता है। बहुत बार पराजय भी बड़ी जीत का मार्ग प्रशस्त करती है। सीएम ने पुलिस बल के उपस्थित जवानों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा रहा हो या विभिन्न प्रदेशों में कानून व्यवस्था, सुरक्षा का बेहतरीन माहौल बनाने का मुद्दा। पुलिस अपने इन उत्तरदायित्वों का निर्वहन पूरी प्रतिबद्धता और ईमानदारी के साथ करने का प्रयास करती है, लेकिन इन सभी के बावजूद अन्य ऐसी गतिविधियां जो समाज को जोड़ती हो, एक दूसरे के मन में विश्वास पैदा करती हो, उन आयोजनों के साथ जुड़ना उतना ही रचनात्मक है और इसीलिए केवल पुलिसिंग ही नहीं, बल्कि हमें अन्य रचनात्मक कार्यों के साथ भी जुड़ना होगा। सीएम योगी ने कहा कि पीएम मोदी के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश में खेल और खेलकूद की गतिविधियों के लिए व्यापक कार्ययोजना को आगे बढ़ाया है। हम लोगों ने खेल नीति भी बनाई। ओलंपिक, कॉमनवेल्थ, एशियाड व विश्व चैंपियनशिप में जो खिलाड़ी मेडल प्राप्त करते हैं, उन्हें सीधी भर्ती के माध्यम में उत्तर प्रदेश पुलिस बल का हिस्सा बनाने की कार्रवाई हो रही है।

अब तक ऐसे 500 से अधिक खिलाड़ियों को हम लोगों ने उत्तर प्रदेश पुलिस में सीधी भर्ती करने की कार्रवाई के साथ जोड़ा है। उनके बेहतरीन प्रदर्शन आज उत्तर प्रदेश पुलिस बल को नई गति देने में योगदान दे रहे हैं। खेलकूद की गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए 57000 ग्राम पंचायत में खेल का मैदान, 825 विकास खंडों में मिनी स्टेडियम और 75 जनपदों में स्टेडियम निर्माण के कार्यक्रम को युद्ध स्तर पर आगे बढ़ाने वाला राज्य उत्तर प्रदेश है। योगी ने कहा कि नाम भले ही अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन सबका कार्य व मिशन एक ही है और वह है भारत की सुरक्षा। यह हम सभी के लिए सर्वोच्च मायने रखती है। भारत नेपाल सीमा हो या भारत भूटान सीमा, वहां पर इन देशों के साथ भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंधों पर कोई आंच आए बगैर एसएसबी इन सीमाओं की सुरक्षा के लिए बेहतरीन प्रयास कर रहा है। उत्तर प्रदेश के अंदर साढ़े पांच सौ किमी. की सीमा नेपाल से जुड़ी हुई है। उत्तर प्रदेश पुलिस एसएसबी के साथ ज्वाइंट पेट्रोलिंग में भाग लेती है। राष्ट्रीय सुरक्षा का उत्तरदायित्व मिलकर हम एक साथ निभाएंगे तो सीमाओं के क्षेत्र में आमजन का विश्वास भी अर्जित करेंगे। सुरक्षा के साथ कहीं पर कोई खरोच भी नहीं आने देंगे, इस विश्वास के साथ बेहतरीन तालमेल के माध्यम से यह कार्यक्रम आगे बढ़ते हैं तो अनेक रचनात्मक गतिविधियों को भी वहां पर उस क्षेत्रवासियों के लिए एसएसबी द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इस अवसर पर यूपी के डीजीपी प्रशांत कुमार, सशस्त्र सीमा बल के डीजी दलजीत सिंह चौधरी आदि मौजूद रहे।

दुग्ध मूल्य का भुगतान समय पर किया जाएः दुग्ध विकास मंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि दुग्ध उत्पादन के साथ ही पौष्टिक एवं गुणवत्तायुक्त दूध आम जनता को उपलब्ध कराना हमारा उद्देश्य है। इसलिए सिंथेटिक दूध पर प्रभावी अकुंश लगााने के लिए दूध की जांच विभाग द्वारा कराये जाने के संबंध में प्रस्ताव बनाया जाए और जांच कार्यों के लिए संबंधित विभागों से भी समन्वय स्थापित कर सहयोग लिया जाए। एक सप्ताह का अभियान चलाकर जांच कार्य सम्पादित किया जाए।

सिंह ने प्राथमिकता के आधार पर किसानों एवं पशुपालकों को दुग्ध मूल्य का भुगतान करने, दुग्ध समितियों के सुव्यवस्थित संचालन एवं प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के संबंध में तेजी से कार्य करने के निर्देश दिये हैं।

उत्तर प्रदेश के दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने सोमवार को विधान भवन स्थित कार्यालय कक्ष में दुग्ध विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा की।

साढ़े सात साल में विकास और निवेश के नए युग में यूपीः मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नोएडा में स्थापित हो रहे आइकिया स्टोर का वर्चुअल माध्यम से शिलान्यास किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि साढ़े सात वर्ष में उत्तर प्रदेश ने देश-दुनिया के निवेशकों का विश्वास अर्जित किया है। आइकिया इंडिया उन्हीं निवेशकों में से एक है। आइकिया इंडिया द्वारा उत्तर प्रदेश में 5500 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश भारत के अंदर अब इन्वेस्टमेंट का ड्रीम डेटिनेशन बन गया है। उन्होंने कहा कि पिछले साढ़े सात साल में उत्तर प्रदेश ने विकास और निवेश के नए युग में प्रवेश किया है।

सीएम योगी ने कहा कि इंग्का सेंटर्स की इस नई परियोजना में आइकिया रिटेल स्टोर, होटल, ऑफिस स्पेस और शॉपिंग सेंटर खोला जाएगा। इसके माध्यम से 9 हजार से अधिक युवाओं को रोजगार प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि 2017 के बाद से इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, निवेश की नई संभावनाओं के विकास, स्किल डेवलपमेंट और परंपरागत उत्पादों के प्रोत्साहन में उत्तर प्रदेश ने अनेक कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं, आज उसके परिणाम हम सबके सामने है। सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश की ओडीओपी योजना देश की अभिनव योजना बन गई है। साथ ही बेहतरीन कानून व्यवस्था से उत्तर प्रदेश ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में देश में अग्रणी है। सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश भारत की आबादी का सबसे बड़ा राज्य है, जो वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था में 9.2 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। आज उत्तर प्रदेश देश में दूसरे नंबर की अर्थव्यवस्था वाला राज्य है, जो तेजी के साथ भारत के विकास के ग्रोथ इंजन के रुप में आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि 2017 में उत्तर प्रदेश ने अपनी औद्योगिक विकास नीति बनाई थी, उस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हम लोगों का मार्गदर्शन करते हुए कहा था कि इन्वेस्टमेंट को एम्प्लॉयमेंट के साथ जोड़ना चाहिए। आइकिया इंडिया के स्टोर का शिलान्यास उसी का परिणाम है।

सीएम योगी ने कहा कि देश की सबसे बड़ी और प्रतिभावान युवा आबादी उत्तर प्रदेश में निवास करती है। विगत साढ़े सात वर्ष में उत्तर प्रदेश की बेरोजगारी दर घटी है। 27 अलग-अलग सेक्टर की सेक्टोरियल पॉलिसी के साथ उत्तर प्रदेश भारत के विकास में अपना योगदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश का नोएडा, ग्रेटर नोएडा और यमुना अथॉरिटी का क्षेत्र इस वर्ष के अंत में पब्लिक ट्रांसपोर्ट की सुविधाओं के साथ ही भारत के सबसे बड़े नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के साथ जुड़ जाएगा। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र लॉजिस्टिक की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ईस्टर्न और वेस्टर्न डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का जंक्शन इसी क्षेत्र के गौतमबुद्धनगर जनपद में पड़ेगा। उत्तर प्रदेश अनलिमिटेड पोटेंशियल का प्रदेश है, इसकी संभावनाओं का लाभ भारत और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के हित में है।

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,

सम्मान कैपिटल लिमिटेड (CIN:L65922DL2005PLC136029) (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते अधोहस्ताक्षरी ने सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **श्याम सैनी, वरुण सैनी, शंकर लाल, मोहित सैनी, राधा सैनी और सर्वेश** को **29.10.2021** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HLAPAGR00308252** की राशि **रू.22,49,069.04 (रूपये बाईस लाख उनचास हजार उनहत्तर और चार पैसे मात्र)** और **25.10.2021** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी।

धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **04.09.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है।

विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू.22,49,069.04 (रूपये बाईस लाख उनचास हजार उनहत्तर और चार पैसे मात्र) 25.10.2021** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **सम्मान कैपिटल लिमिटेड (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)** के आधीन होगा।

उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

श्री कृष्णा क्यूरियस मार्बल 30/91 खसरा नंबर1076 /2, मौजा बसई ताजगंज वार्ड फतेहाबाद रोड, होटल मुगल शेरेटन वेस्ट साइट बॉब बैंक आगरा के सामने, आगरा, उत्तर प्रदेश- 282001।

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
सम्मान कैपिटल लिमिटेड
दिनांक: 04.09.2024
स्थान : आगरा **(पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)**

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,

सम्मान कैपिटल लिमिटेड (CIN:L65922DL2005PLC136029) (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते अधोहस्ताक्षरी ने सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **जनक सिंह और दयाल प्रभा उर्फ प्रभा देवी** को **29.10.2021** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLAGR00353582** की राशि **रू.16,80,813.31 (रूपये सोलह लाख अस्सी हजार आठ सौ तेरह और इकतीस पैसे मात्र)** और **26.10.2021** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी।

धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **04.09.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है।

विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू.16,80,813.31 (रूपये सोलह लाख अस्सी हजार आठ सौ तेरह और इकतीस पैसे मात्र) 26.10.2021** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **सम्मान कैपिटल लिमिटेड (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)** के आधीन होगा।

उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

मकान बेअरींग नं. 22 के सभी भाग और खंड जिसका कुल क्षेत्र 100 स्क्वे. यार्डस यानी 83.61 स्क्वे. मीटर्स (20 फीट *45 फीट), खसरा नं. 2123 में, आदर्श नगर में स्थित, नगला रामबल, मौजा नरैच, तहसील एत्मादपुर, जिला आगरा, आगरा-282006, उत्तर प्रदेश और जो सीमा निम्नुसार परिबध्द है: -
पूर्व में : प्लॉट नं. 23 पश्चिम में : अन्य की संपत्ति
उत्तर में : 20 फीट सड़क दक्षिण में : सौदान सिंह डिग्री

सही/-
प्राधिकृत अधिकारी
सम्मान कैपिटल लिमिटेड
दिनांक: 04.09.2024
स्थान : आगरा **(पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)**

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

मेरे मकान 22/14 इंदिरा नगर, लखनऊ का मूल आवंटन पत्र दिनांक 27-02-1985 खो गया है। जिसका प्रयोग अवैध होगा। सौरभ जैन पार्टनर, श्री वर्धमान वेंचर।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी एल०आई०सी० पालिसी संख्या 228377293 में मेरा नाम रूबी देवी अंकित है। जबकि मेरे सभी दस्तावेजों में मेरा नाम रागनी देवी अंकित है। रूबी देवी एवं रागनी देवी एक ही व्यक्ति के नाम है। रागिनी देवी (रूबी देवी) पुत्री रामकुमार ग्रा० व पो० अजीतपुर, रायबरेली।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मकान संख्या F-2090 राजाजीपुरम लखनऊ का मूल आवंटन पत्र दिनांक 16.1.78 व मूल कब्जा पत्र व मूल पट्टा विलेख दिनांक 26.4.90 दस्तावेज संख्या 26233 विक्रय विलेख दिनांक 26.4.90 दस्तावेज संख्या 26236 वास्तव में कहीं खो गये हैं। इनका किसी अन्य द्वारा प्रयोग अवैध माना जाएगा। अभिलाष श्रीवास्तव पुत्र स्व. गजेंद्र लाल श्रीवास्तव F-2090 राजाजीपुरम लखनऊ मो. 7398290880।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा सही नाम ओम प्रकाश गुप्ता पुत्र शीतला प्रसाद है जो मेरे आधार कार्ड, पैन कार्ड तथा भारतीय सेना से सम्बन्धित कैन्टीन कार्ड में अंकित है त्रुटिवश मेरी सेवा से सम्बन्धित अभिलेखों में मेरा नाम ओम प्रकाश पुत्र शीतला प्रसाद अंकित हो गया है। उपरोक्त दोनों नाम मेरा ही है। भविष्य में मुझे मेरे सही नाम ओम प्रकाश गुप्ता पुत्र शीतला प्रसाद के नाम से जाना व पहचाना जाय। ओम प्रकाश गुप्ता पुत्र शीतला प्रसाद पता-11ए सदर बाजार न्यू कैण्ट, प्रयागराज।

आवश्यकता है

श्री बच्चू राम राम स्वरूप सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अढ़ौली-धाता, फतेहपुर (उ०प्र०)
कालेज कोड- 2006 में स्नातक कला संकाय हेतु हिंदी साहित्य, संस्कृत विषयों में एक-एक सहायक आचार्यों की और एक प्राचार्य की आवश्यकता हैं। शैक्षिक योग्यता एवं वेतनमान यू०जी०सी० के मानकानुसार।
आवेदन की अन्तिम तिथि-10 अक्टूबर 2024
मुख्य ट्रस्टी/प्रबन्धक
मो0. 6306376276, 9935406738

भाजपा आरक्षण समाप्त करने का कुचक्र कर रहीः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● महाराष्ट्र एनसीपी के दर्जनों पदाधिकारी सपा में शामिल

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के नेतृत्व एवं समाजवादी पार्टी की नीतियों पर आस्था जताते हुए सोमवार को महाराष्ट्र एनसीपी (अजीतगुट) के दर्जनों पदाधिकारी एनसीपी के राज्य महामंत्री इरशाद भाई जागीरदार के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए।

अखिलेश यादव ने एनसीपी नेताओं को समाजवादी पार्टी में शामिल होने पर बधाई देते हुए उम्मीद जताई है कि इनके आने से समाजवादी पार्टी को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी सामाजिक न्याय की लड़ाई शुरू से ही लड़ती आई है। जातीय जनगणना की मांग पूरी होने पर ही समानुपातिक भागीदारी तय हो सकेगी और सभी को हक तथा सम्मान मिलेगा। भाजपा आरक्षण समाप्त करने का कुचक्र कर रही है। समाजवादी पार्टी लोकतंत्र और समाजवाद के लिए प्रतिबद्ध है। समाजवादी पार्टी सामाजिक न्याय और सद्भाव की पक्षधर है। अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों में विस्तार के पक्ष में है। समाजवादी पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी की स्वीकृति दिलाने के लिए अन्य राज्यों के चुनावों में पूरी सक्रियता से भाग लेंगे।

मंगेश यादव का एनकाउंटर एक सुनियोजित हत्याः अजय राय

● सपा के बाद अब कांग्रेस ने सुल्तानपुर पुलिस मुठभेड़ पर उठाए सवाल, न्यायिक जांच की मांग की

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के बाद अब कांग्रेस ने भी सुल्तानपुर पुलिस मुठभेड़ पर सवाल उठाए हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा है कि सारी परिस्थितियां एनकाउंटर के फर्जी होने की तरफ इशारा कर रही हैं। इतना ही नहीं जिस तरह से घटना के मुख्य आरोपी विनय सिंह को एस.टी.एफ. और पुलिस की नाक की नीचे से कोर्ट में सरेंडर कराया गया और बाकी आरोपियों को भी पैर में गोली मारकर गिरफ्तार किया गया उससे एक बात और चर्चा में है कि कहीं मंगेश का एनकाउंटर उसके पिछड़े वर्ग से होने की वजह से तो नहीं किया गया।

अजय राय सोमवार को जौनपुर स्थित मंगेश यादव के घर पहुंचे और परिजनों से मिलकर उन्हें सांत्वना देने के साथ ही घटना की वस्तुस्थिति की जानकारी ली। राय ने परिजनों को कांग्रेस पार्टी की ओर से हर संभव मदद का आश्वासन भी दिया। राय ने कहा कि पुलिस की कहानी में कई झोल हैं, और प्रथम दृष्टया देखने से ही ये फर्जी एनकाउंटर लग रहा है। राय ने कहा कि जो व्यक्ति इतने संगीन अपराध में लिप्त होगा, क्या वो बेखबर अपने घर पर सोयेगा? 2 तारीख की देर रात मंगेश यादव को उसके घर से पुलिस उठाती है और दो दिन बाद का एनकाउंटर दिखाती है। मंगेश के परिजनों के इस बयान के बाद पूरी पुलिसिया कहानी फेल हो गई है। लूट का अब तक केवल 10 प्रतिशत माल ही बरामद हुआ है, सवाल ये है कि बाकी माल कहां है? अजय राय ने कहा कि पूरा प्रदेश पुलिसिया खौफ में जी रहा है। योगी आदित्यनाथ के राज में पुलिस निरंकुश हो गई है। उनके राज में या तो बुल्डोजर से घर गिराए जाते हैं या फर्जी एनकाउंटर होते हैं। राय ने कहा कि मंगेश यादव फर्जी एनकाउंटर की न्यायिक जांच हाईकोर्ट के किसी सिटिंग जज से कराई जानी चाहिए। इस मौके पर पूर्व विधायक नदीम जावेद, प्रदेश कांग्रेस कोषाध्यक्ष शिव पाण्डेय एवं प्रदेश महासचिव प्रभारी संगठन अनिल यादव भी मौजूद रहे।

एक हजार से अधिक कुंभ मेला मित्र और स्वयं सेवकों की तैनाती

महाकुंभ-2025

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ प्रयागराज

योगी सरकार ने महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों की मदद के साथ बेहतर अनुभव देने के लिए एक हजार से अधिक कुंभ मेला मित्रों की नियुक्ति करने का निर्णय लिया है। इनके चयन की प्रक्रिया शुरू हो गयी है। इन सभी कुंभ मेला मित्रों को स्किल की ट्रेनिंग भी दी जाएगी ताकि श्रद्धालु और पर्यटक अपने साथ उत्तर प्रदेश की सकारात्मक अनुभव को अपने प्रदेश के लोगों के बीच शेयर कर सकें।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर महाकुंभ को दिव्य और भव्य आयोजित कराने के लिए लगातार युद्धस्तर पर काम किये जा रहे हैं। इसी के तहत योगी सरकार ने महाकुंभ में देश-विदेश से आने वाले 41 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए खास इंतजाम किये जा रहे हैं ताकि वह अपने गंतव्य लौटते समय प्रदेश की अच्छी छवि को अपने से शेयर कर सकेंगे। इसके लिए सीएम योगी के निर्देश पर कुंभ मेला प्रशासन बड़े स्तर पर कुंभ मेला मित्र और स्वयं सेवकों को नियुक्त करने का निर्णय लिया। कुंभ मेला अधिकारी विजय किरण आनंद ने बताया कि मेला क्षेत्र में 1000 से अधिक कुंभ मेला मित्रों और स्वयं सेवकों के चयन की प्रक्रिया चल रही है। इसके बाद सभी को मेला क्षेत्र में प्रतिकूल परिस्थितियों में कार्य करने के लिए स्किल ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके लिए मेला प्राधिकरण ने आरएफपी जारी की है।

शुभम् हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कं. लि.
कॉर्पोरेट कार्यालयः 425, उद्योग विहार फेज IV, गुड़गांव-122015 (हरियाणा)
फोनः 0124-4212530/31/32, ई-मेलः customercare@shubham.co वेबसाइटः www.shubham.co

वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम 2002 की धारा 13(2) के तहत नोटिस (इसके बाद इसे "अधिनियम" कहा गया)

इस नोटिस के द्वारा आपके ध्यान में लाया जाता है कि आपका ऋण खाता सुरक्षित ऋणदाता शुभम् हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कंपनी लिमिटेड, जिसका पंजीकृत कार्यालय 608 - 609, 6 वीं मंजिल, ब्लॉक-सी अंसल इंपीरियल टॉवर, कम्युनिटी सेन्टर, नारायणा विहार, नई दिल्ली-110028 (इसके बाद इसे 'एसएचडीएफसीएल' कहा गया है) के द्वारा एनपीए घोषित कर दिया गया और आप एसएचडीएफसीएल को अपने ऋण के विरुद्ध कुल बकाया का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी हैं। आप आकस्मिक खर्चों, लागत, शुल्कों आदि के साथ उपरोक्त राशि पर संविदात्मक दर पर भविष्य का ब्याज का भुगतान करने के लिए भी उत्तरदायी हैं, इसलिए, हम आपसे इस नोटिस की तारीख से 60 दिनों के भीतर एसएचडीएफसीएल के प्रति अपनी पूरी देनदारियों का निर्वहन करने का आह्वान करते हैं, ऐसा न करने पर एसएचडीएफसीएल को अधिनियम की धारा 13(4) के तहत शक्ति का प्रयोग करने का अधिकार होगा। **उधारकर्ताओं और सुरक्षित आस्तियां का विवरण इस प्रकार हैः**

क्र. सं.	ऋण खाता नं. (कर्जदार का नाम)	आवेदक का पता	मांग सूचना की तिथि और राशि	सुरक्षित आस्तियां
1.	0ALB2211000005053606, अंशु, आशा देवी, राज कुमार	कटरा हीराराम चक्रवानपुर श्रीनाथ मंदिर, सिरसा इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश - 212305	रु. 11,72,742/- & 23/08/2024	मकान नं. 110, मौजा सिरसा मोहल्ला कटरा हीरा राम टप्पा 84, तहसील मेजा जिला प्रयागराज उत्तर प्रदेश-212305
2.	0VRN1710000005008922, अबुशाद अहमद रुखसाना बेगम	सीके 40/43 घुघरानी गली सेंट गर्ज इंग्लिश स्कूल, वाराणसी उत्तर प्रदेश -221001	रु. 8,05,295/- & 23/08/2024	फ्लैट नं. ई चौथी मंजिल मकान नं. सी 2/107 मौजा हंकारटोला वार्ड चेतगंज जिला वाराणसी उत्तर प्रदेश-221001
3.	0LKI2107000005037504, मन्नो, मानशू	1 राणा प्रताप मार्ग बापूनगर हजरतगण निकट मोती महल लखनऊ उत्तर प्रदेश -226001	रु. 18,85,624/- & 23/08/2024	प्लॉट खसरा नं. 370 का मिन का हिस्सा, ग्राम भमरौली शाहपुर, वार्ड-हैदरगंज तहसील और जिला लखनऊ उत्तर प्रदेश में स्थित - 226001
4.	0LKW1705000005006048, कानूनी उत्तराधिकारी (मृतक श्री लक्ष्मी शरण अवस्थी), हर्ष नारायण अवस्थी	मकान नं. 19/890, इंद्रा नगर सेक्टर-19, रिंग रोड पानी की टंकी लखनऊ उत्तर प्रदेश-226016	रु.16,61,918/- & 23/08/2024	दुकान नं. 03, भूमि, इस्माइलगंज सेक्टर-15 इंदिरा नगर योजना ख.नं. 30, तहसील एवं जिला लखनऊ उत्तर प्रदेश-226012

स्थानः गुड़गाँव,
तिथिः 09.09.2024

प्राधिकृत अधिकारी,
शुभम् हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कंपनी लि.

कब्जा सूचना
(अचल संपत्ति हेतु)

जब कि,

सम्मान कैपिटल लिमिटेड (CIN:L65922DL2005PLC136029) (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) प्राधिकृत अधिकारी होने के नाते अधोहस्ताक्षरी ने सिक्योरिटाइजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फायनांशियल असेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट ऐक्ट, 2002 के अंतर्गत और नियम 3 के साथ धारा 13(12) के साथ सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, 2002 के साथ पढ़ते हुए प्राप्त अधिकारों का उपयोग करके कर्जदार **विमल कुमार गुप्ता, मंजू गुप्ता और तुषार गुप्ता** को **18.04.2023** की सूचना में वर्णन के अनुसार **कर्ज खाता नं. HHLKAN00512647** की राशि **रू.1,15,09,771.01 (रूपये एक करोड़ पंद्रह लाख नौ हजार सात सौ इकहत्तर और एक पैसा मात्र)** और **12.04.2023** के अनुसार उस पर ब्याज उक्त सूचना की प्राप्ती की तारीख से स्पष्ट 60 दिनों के भीतर चुकता करने का आवाहन करते हुए अभियाचना सूचना जारी की थी।

धनराशि चुकता करने में कर्जदारों के असफल रहने पर एतद्द्वारा कर्जदार और सर्व सामान्य जनता को सूचना दी जाती है कि, अधोहस्ताक्षरी ने उक्त कानून की धारा 13 की उप-धारा 4 के साथ उक्त कानून के नियम 8 के तहत सिक्योरिटी इंटरेस्ट (एन्फोर्समेंट) रूल्स, **2002** के तहत प्राप्त अधिकारों का कार्यान्वयन करके **05.09.2024** को संपत्ति पर **सांकेतिक आधिपत्य** कर लिया है।

विशेषत: कर्जदारों और सामान्यत: जनता को एतद्द्वारा संपत्ति के साथ सौदा नहीं करने के लिए सावधान किया जाता है और संपत्ति के साथ कोई भी सौदा राशि **रू.1,15,09,771.01 (रूपये एक करोड़. पंद्रह लाख नौ हजार सात सौ इकहत्तर और एक पैसा मात्र) 12.04.2023** के अनुसार और उस पर ब्याज के साथ **सम्मान कैपिटल लिमिटेड (पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)** के आधीन होगा।

उधारकर्ताओ का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के अन्तर्गत संपत्ति / संपत्तियों को मुक्त कराने के लिए उपलब्ध समय की ओर आमंत्रित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

नीचे दी गई भूमि/संपत्तियों के सभी भाग और खंड साथ ही वर्तमान और/या भविष्य की सभी संरचनाएं, इमारतें, फर्नीचर, फिक्सचर, फिटिंग, स्टैंडिंग और/या उस पर स्थापित / स्थापित की जानेवाली और/या निर्मित /निर्मित की जानेवाली प्लान्ट और मशीनरी और विमल कुमार गुप्ता के सभी वर्तमान भविष्य के अधिकार, शीर्षक/या हित।

प्लॉट नं. 1-ए पर स्थित मकान, जिसका क्षेत्रफल लगभग 400 स्क्वे. यार्डस यानी 334.4 स्क्वेर मीटर्स के समतुल्य, आराजी नं. 1676 के प्लॉट का हिस्सा, ग्राम- बक्तौरी पुरवा पर स्थित, नौबस्ता, तहसील और जिला कानपुर नगर - 208021।
सीमा:
पूर्व : 30 फीट रोड पश्चिम : आराजी का हिस्सा
उत्तर: प्लॉट नंबर 2 दक्षिण: अन्य भूमि (माँ गेस्ट हाउस)

सही/-
दिनांक: 05.09.2024 **प्राधिकृत अधिकारी**
स्थान : कानपुर नगर **सम्मान कैपिटल लिमिटेड**
(पहले इंडियाबुल्स हाउसिंग फायनान्स लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)

ट्रांसपोर्टनगर में घटनास्थल के पीछे बने कॉम्पलेक्स को भी एलडीए ने किया सील

● घटनास्थल के पीछे भूखण्ड संख्या-सी-41 पर बने कॉम्पलेक्स के स्ट्रक्चर को क्षति पहुंचने की प्रबल संभावना के तहत किया गया सील

एलडीए की टीम ने भूखण्ड संख्या-54 पर निर्मित बिल्डिंग के गिरने के बाद आसपास बनी सभी इमारतों का किया सर्वे

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कानपुर रोड योजना के ट्रांसपोर्ट नगर में भूखण्ड संख्या-सी-54 पर निर्मित भवन के अचानक ढ़हने की घटना के बाद एलडीए की टीम ने आसपास बनी सभी इमारतों का सर्वे किया है। इसके अंतर्गत घटनास्थल के ठीक पीछे भूखण्ड संख्या-सी-41 पर बने कॉम्पलेक्स के स्ट्रक्चर को क्षति पहुंचने की प्रबल संभावना के चलते सोमवार को सील कर दिया गया। स्ट्रक्चरल ऑडिट पूर्ण होने तक यह बिल्डिंग सील रहेगी। सुरक्षा में यहां किसी भी तरह की गतिविधि के संचालन पर रोक रहेगी।

सोमवार को लखनऊ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने बताया कि कानपुर रोड योजना स्थित ट्रांसपोर्ट नगर के भूखण्ड संख्या.सी.54 पर निर्मित भवन के अचानक गिर जाने के कारण आसपास के भवनों का सुरक्षा के लिहाज से सर्वे कराया गया है। जिसमें बगल में स्थित भूखण्ड संख्या.55 पर निर्मित भवन को क्षति पहुंचने की प्रबल संभावना के कारण रविवार को अग्रिम आदेशों तक के लिए सील किया गया। अभियंत्रण खण्ड.2 के अधिशासी अभियंता अजय गोयल व सहायक अभियंता उर्वशी श्रीवास्तव ने टीम के साथ पीछे के भवनों का भी सर्वे किया। इसमें पाया गया कि घटनास्थल के ठीक पीछे भूखण्ड संख्या.सी.41 पर निर्मित कॉम्पलेक्स को भी मलबा गिरने की वजह से क्षति पहुंचने की संभावना है। ऐसे में सुरक्षा के दृष्टिगत उक्त कॉम्पलेक्स को भी अग्रिम आदेशों तक के लिए सील कर दिया गया है।

उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने बताया कि शासन की ओर से सचिवए गृह विभाग की अध्यक्षता में गठित जांच टीम ने घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी है। जांच में प्राधिकरण के स्तर से सहयोग प्रदान करने के लिए अपर सचिव ज्ञानेन्द्र वर्मा के पर्यवेक्षण में प्रवर्तन जोन.2 के जोनल अधिकारी अतुल कृष्ण सिंह, सम्पत्ति अनुभाग से उप सचिव माधवेश कुमार, मानचित्र अनुभाग से सहायक अभियंता आरके अवस्थी व अभियंत्रण जोन.2 से अवर अभियंता ऋतुपाल को नामित किया गया है।

नेशनल फोरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी स्ट्रक्चरल होगी ऑडिट: नेशनल फोरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी गांधी नगर, गुजरात की टीम से इन भवनों का स्ट्रक्चरल ऑडिट करवाया जाएगा। जिसकी रिपोर्ट आने के बाद ही भवनों की सील खोली जाएगी। उन्होंने बताया कि नेशनल फोरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी की टीम मंगलवार सुबह लखनऊ पहुंचकर जांच शुरू कर देगी।

पांच हजार से अधिक के भीड़ की क्राउड मैनेजमेंट प्लान बनाने के निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● 12 सितंबर को सीएम करेंगे अटल आवासीय विद्यालय के नये सत्र का शुभारंभ

आगामी 12 सितंबर को होने वाले अटल आवासीय विद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2024-25 का शुभारंभ सीएम द्वारा होगा, जिसकी तैयारियों के लिए जिलाधिकारी द्वारा एक तहसीलदार की तैनाती कार्यक्रम स्थल पर लगाने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी द्वारा लोक निर्माण विभाग को कार्यक्रम स्थल तक जाने के मार्ग की मरम्मत, पार्किंग प्लान बनाने का निर्देश दिया गया। हालांकि पार्किंग कार्यक्रम स्थल से ज्यादा दूर न हो, इसकी हिदायत दी गयी। यही नहीं 5 हजार से अधिक की भीड़ की संभावना पर क्राउड मैनेजमेंट प्लान बनाने के निर्देश भी दिए गए।

सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिलाधिकारी सूर्य पाल गंगवार ने अटल आवासीय विद्यालय के शैक्षणिक सत्र के 2024-25 का शुभारम्भ मुख्यमंत्री के कर कमलों से 12 सितंबर 2024 को किये जाने के संबंध में एक महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि तैयारियों के अनुश्रवण के लिए एक नायब तहसीलदार को ड्यूटी कार्यक्रम स्थल पर लगाना सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने बताया की कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने प्रतिभाग किया जाएगा जिसके सभी व्यवस्थाएं समय से पहले सुनिश्चित की जाए। लोक निर्माण विभाग कार्यक्रम स्थल तक जाने वाली सभी रोड का निरीक्षण करते हुए जहां मरम्मत की आवश्यकता हो वहा मरम्मत कराना सुनिश्चित करे। इसके साथ ही पार्किंग एरिया का समतलीकरण व कैपेसिटी वार पार्किंग प्लान बनाना सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा को पार्किंग स्थलों का चिन्हीकरण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए की पार्किंग स्थल कार्यक्रम स्थल से ज्यादा दूर न हो, लोग आसानी से कार्यक्रम स्थल तक पहुंच सके। जिलाधिकारी ने बताया कि कार्यक्रम में 5000 से अधिक लोगो के शामिल होने की संभावना है जिसके तहत क्राउड मैनेजमेंट प्लान बनाना सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने बताया की अन्य जनपदों से भी निर्माण श्रमिको द्वारा कार्यक्रम में प्रतिभाग किया जाएगा, जिसमें उनके आवागमन के लिए बसों की व्यवस्था किया जाए। साथ ही निर्देश दिया की कार्यक्रम में शामिल होने वाले श्रमिको के लिए नाश्ते और लांच की व्यवस्था को सुनिश्चित किया जाए। बैठक में जिलाधिकारी ने कार्यक्रम में शामिल होने वाले निर्माण श्रमिको के खान पान की उचित व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। साथ ही निर्देश दिया की जिन बसों से निर्माण श्रमिको को लाया जाएगा उसमे श्रम विभाग को कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी के पैम्फ्लेट रखे जाए ताकि उनको सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी हो सके और उन तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा सके। साथ ही निर्देश दिया की बसों में एक एक सीएससी ऑपरेटर को लैपटाप सहित बिठाया जाए ताकि बस में उपस्थित सभी श्रमिको का रजिस्ट्रेशन श्रम विभाग में कराया जा सके। बैठक में सचिव बोर्ड गज़ल भारद्वाज, मुख्य विकास अधिकारी अजय जैन, अपर जिलाधिकारी नगर पूर्वी अमित कुमार, अपर जिलाधिकारी ट्रांस गोमती राकेश सिंह सहित विभिन्न विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

सिविल डिफेंस, एनसीसी, एनएसएस के वेलेंटेयर्स को जाएगा लगाया

बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि कार्यक्रम स्थल पर जनपदवार सिटिंग अरेंजमेंट किया जाए ताकि अपने जनपद का स्थान ढूढने में प्रतिभागियों को असुविधा न होने पाए। कार्यक्र म में शामिल होने वाले प्रतिभागियों की सुविधा के लिए सिविल डिफेंस, एनसीसी और एनएसएस के वेलेंटेयर्स को भी लगाया जाए ताकि प्रतिभागियों को कोई असुविधा न होने पाए।

लखनऊ सहित सभी जनपदों में टीबी के मरीजों की तलाश शुरू, 20 तक चलेगा अभियान

● अभियान के लिए बनायीं गयीं 455 टीमें, अभियान का पर्यवेक्षण करेंगे 91 सुपरवाइजर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राष्ट्रीय क्षय (टीबी) उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) के तहत घर में छुपे हुए टीबी रोगियों को खोजने के लिए जनपद में सक्रिय टीबी रोगी खोजी (एसीएफ) अभियान नौ सितम्बर से शुरू हो गया है। अभियान के पहले दिन यानि सोमवार को जिला क्षय रोग अधिकारी डा. ए.के.सिंघल ने क्षेत्र में आकस्मिक भ्रमण कर टीमों द्वारा की जा रही स्क्रीनिंग का निरीक्षण किया।

जिला क्षय रोग अधिकारी ने बताया कि एसीएफ नौ से 20 सितम्बर तक लखनऊ सहित सभी 75 जनपदों में चलेगा। यह अभियान जनपद की 20 फीसद आबादी को अच्छादित करेगा अर्थात जनपद की कुल आबादी 56 लाख है। इसका 20 फीसद यानि 12 लाख की आबादी में यह अभियान। अभियान के पहले दिन एक लाख से अधिक जनसँख्या की टीबी की स्क्रीनिंग की गयी। एसीएफ के तहत स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने क्षेत्र वार घर-घर जाकर टीबी मरीजों की स्क्रीनिंग शुरू कर दी है। यह अभियान ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की हाई रिस्क आबादी जैसे मलिन बस्तियां, सब्जी मंडी, अनाथालय, वृद्धाश्रम, मदरसा, नवोदय, कारागार, साप्ताहिक बाजार, नवोदय विद्यालय, खादों , स्टोन क्रेशर में चलेगा। इसके साथ ही डायबिटीज और एचआइवी पीड़ितों की भी टीबी की जाँच की जाएगी। अभियान को सफल बनाने के लिए 455 टीमें और 91 सुपरवाइजर तैनात किये गए हैं। हर टीम में दो स्वास्थ्य कार्यकर्ता हैं। इस तरह से इस अभियान में कुल 1365 स्वास्थ्य कार्यकर्ता हैं।

टीबी मरीजों का लक्षणों के आधार पर स्क्रीनिंग की जा रही है और टीबी की पुष्टि होते ही पीड़ित की डायबिटीज की जांच, दवाओं के प्रति संवेदनशीलता की जाँच (यूडीएसटी) और एचआईवी की जल्द से जल्द जाँच कर, विवरण निक्षय पोर्टल पर चढ़ाया जायेगा। इसके साथ ही 72 घंटे के भीतर मरीज का इलाज शुरू करना सुनिश्चित करते हुए उसके बैंक खाते का विवरण भी निक्षय पोर्टल पर चढ़ाया जायेगा।

महंत नृत्य गोपाल दास महाराज की सेहत में सुधार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

एक दिन पूर्व इलाज को लेकर मेदान्ता में भर्ती श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास महाराज का स्वास्थ्य सामान्य स्थिति में है। विहिप मीडिया प्रभारी तथा महाराज नृत्य गोपाल दास के मीडिया सलाहकार शरद शर्मा के अनुसार महंत नृत्य गोपाल दास महाराज का स्वास्थ्य रविवार को अचानक खराब हुआ था। जिसके बाद उन्हे लखनऊ स्थित मेदांता हास्पिटल में सांयकाल भूख ना लगने और यूरिन में हो रही समस्या के निराकरण हेतु भर्ती कराया गया था। उन्होने मेदांता हास्पिटल पहुंच कर महंत नृत्य गोपाल दास के स्वास्थ्य की जानकारी ली और बताया कि वह अभी चिकित्सको की देखरेख में उनकी स्थिति सामान्य है। भूख की समस्या यथावत बनी हुई है,फिलहाल पूर्व से स्थिति सामान्य बनी हुई है। उन्होंने बताया कि महाराज बार बार अयोध्या धाम चलने की बात कर रहे हैं। लेकिन वरिष्ठ चिकित्सको की सलाह और पूर्ण स्वस्थ होने के पश्चात ही उन्हें अयोध्या धाम लाया जायेगा। मेदान्ता अस्पताल के आईसीयू में भर्ती महंत नृत्य गोपाल दास का इलाज संस्थान के निदेशक डॉ. राकेश कपूर और डॉ. दिलीप दुबे की देख-रेख में चल रहा है। अस्पताल के मुताबिक विगत कुछ दिनों से उनका उपचार ग्वालियर में चल रहा था। स्थिति में सुधार न होते देख उन्हें यहां लाया गया है।

पढ़ाई करने वाले किन्नरों के बच्चों को चिन्हित करने के निर्देश

लखनऊ। जिलाधिकारी द्वारा किन्नर समूह के शैक्षिक उत्थान के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करने संबंधी प्रचार प्रसार की बैठक जिला समाज कल्याण अधिकारी के साथ की गयी। जिलाधिकारी द्वारा किन्नरों के अध्यनरत बच्चो को चिन्हांकन के निर्देश दिए गए। वहीं बैठक में आये ट्रांसजेंडरों की रोजगार के इच्छुक लोगों की एनजीओ से सॉफ्ट स्किल ट्रेनिग कराये जाने का भी सुझाव दिया गया। सोमवार को जिलाधिकारी सूर्य पाल गंगवार की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में ट्रांसजेण्डर समूह के शैक्षिक उत्थान के लिये छात्रवृत्ति प्रदान किये जाने के लिए प्रचार.प्रसार संबंधी बैठक की। बैठक में जिलाधिकारी ने जिला समाज कल्याण अधिकारी व उपस्थित किन्नर सदस्यों को निर्देशित किया कि सर्वप्रथम शिक्षा प्राप्त करने वाले किन्नर समूह के बच्चों का पूर्वदशम व दशमोत्तर कक्षाओं में अध्धयनरत व अध्यन करने वाले बच्चों का चिन्हीकरण कराये जाने के निर्देश दिये व ट्रांसजेण्डर समूह के डेरों के निकटस्थ जूनियर हाईस्कूल, इण्टमीडिएट कालेज व डिग्री कालेजों को चिन्हाकिंत करने का सुझाव दिया गया जिससे उक्त विधालयों में बच्चों की शिक्षा के लिए समुचित गाइड लाइन जारी की जा सकें। जिलाधिकारी ने बैठक में आये ट्रांसजेंडरों की समस्याओं के निराकरण के लिए ट्रांसजेण्डर समूह के रोजगार के इच्छुक लोगों की एनजीओ के माध्यम से सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग कराये जाने का भी सुझाव दिया। जिस पर उपस्थित सभी सदस्यों व अधिकारी ने सहमति प्रदान की। बैठक में किन्नर समुदाय से अपेक्षा की गयी कि यदि उनके समूह के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हो तो उसकी भी विघालयवार सूची उपलब्ध करायें।

पारिवारिक समस्याएं हैं आत्महत्याओं की बड़ी वजह

● विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस 2024 पर विशेष

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

हर साल लाखों लोग मानसिक तनाव, सामाजिक दबाव और व्यक्तिगत चुनौतियों के कारण आत्महत्या करने पर मजबूर होते हैं। आत्महत्या को लेकर जागरूकता बढाने को लेकर विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस 10 सितंबर को विश्व स्तर पर मनाया जाता है। यह आत्महत्या की रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। इस बार इस दिवस की थीम है नैरेटिव बदलें जोकि एक महत्वपूर्ण संदेश देता है कि आत्महत्या के बारे में हमारी सोच बदलने की जरूरत है। इस सम्बन्ध में राज्य कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थय कार्यक्रम की तरफ से सभी जिलों को इस दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए पत्र जारी किया गया है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के एक्सीडेंटल डेथ एवं सुसाइड रिपोर्ट 2022 के अनुसार देश की सबसे बड़ी आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश में आत्महत्या की दर 3.5 है। राज्य में 2022 में कुल 8,176 आत्महत्याएँ दर्ज कीं गय। जिसमें 5225 संख्या पुरुषों की रही। वही 2951 आत्महत्या महिलाओं द्वारा कीं गयी। इनमें से 1631 आत्महत्या गृहिणियों की रही, 5162 शादीशुदा जोड़ो की, 1521 बेरोजगार व्यक्ति और 1060 छात्रों कि रही। यह दिखाता है कि सामाजिक और मानसिक दबाव, पारिवारिक समस्याएं और वित्तीय तनाव आत्महत्याओं के पीछे मुख्य कारण हैं।

इन पांच राज्यों से आत्महत्या के मामलों की सबसे ज्यादा हिस्सेदारी

आत्महत्या के मामले में महाराष्ट्र की संख्या 22,746 है वही तमिलनाडु में 19,834, मध्य प्रदेश में 15,386, कर्नाटक में 13,606, बंगाल में 12669 में आत्महत्या के मामलों की संख्या रही। देश में होने वाली कुल आत्महत्या के मामलों में 49.3 प्रतिशत आंकड़े सिर्फ इन पाँच राज्यों से है।

केजीएमयू के मानसिक स्वास्थ्य विभाग के एडिशनल प्रोफेसर डॉ. आदर्श त्रिपाठी बताते है कि लोग आत्महत्या का प्रयास आवेश में आकर करते है। जैसे पारिवारिक झगड़े के बाद, लडाई, ब्रेकअप आदि अगर व्यक्ति कुछ पलों के लिए, उस बात से भटक जाए तो ऐसा नहीं करेगा। इसलिए सामान्यता सभी को यह सलाह दी जाती है कोई व्यक्ति यदि परेशान है तो उसकी बात सिर्फ सुन ली जाये। उसे यह जताएं कि हम उसकी परिस्थिति को समझ रहे है। यह तरीका उस व्यक्ति के तनाव को कम करने में सहायक हैं। हमेशा परेशान व्यक्ति को अपनी राय देना ठीक नहीं है। डॉ. त्रिपाठी बताते है कि आत्महत्या से जुड़ें मुद्दों में सामाजिक दबाव और पारिवारिक कारण सबसे महत्वपूर्ण हैं और इसमें लगभग 30 प्रतिशत अतिरिक्त योगदान मानसिक बीमारियों का है। जैसे डिप्रेशन, एंग्जायटी, सायकोटिक डिसऑर्डर, नशे के सम्बंधित बीमारियाँ जोकि आत्महत्या से सम्बंधित व्यवहार को बढ़ावा देती है। ऐसे में मानसिक बीमारियों की पहचान और सही समय पर इलाज़ करवाना भी सुसाइड के केसेस को पर्याप्त ढंग से रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

माता मंदिर पर हवन पूजन कर ग्रामीणों ने की लोक कल्याण की कामना

संवाददाता। मोहनलालगंज

ग्राम वासियों के सुख समृद्धि और कल्याण की कामना लेकर सोमवार को मोहनलालगंज नगर पंचायत के मऊ नहर पुल स्थित पूर्वी माता मंदिर में वैदिक मंत्रोच्चारण से 33 करोड़ देवी देवताओं का आह्वान कर उनकी पूजा अर्चना की गई।

मऊ निवासी मनीष तिवारी अखिलेश शुक्ल और राहुल मिश्र ने बताया माता के वार्षिक पूजा में गांव के लोगों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। ग्रामीणों ने हवन पूजन में भाग लेकर सभी के मंगल की कामना की।आचार्य रमेश मिश्र ने पूजन में जुटे लोगों को प्रसाद वितरित कर आशीर्वाद दिया। इस दौरान गुड्डू यादव विनीत और गोपाल बाजपेई समेत काफी तादात में श्रद्धालु मौजूद रहे।

भाषा विश्वविद्यालय में दाखिले की समय सीमा बढ़ी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय में सभी विषयों में एडमिशन के लिए समर्थ पोर्टल को पुन: खोल दिया गया है। प्रवेश समन्वयक प्रो एहतेशाम अहमद ने बताया कि सत्र 2024-25 के लिए बीबीए, एमबीए, बीसीए, एमसीए, बीकॉम, एमकॉम, सभी विषयों में स्नातक, सभी विषयों में परास्नातक, एलएलएम, सभी डिप्लोमा, सभी सर्टिफिकेट कोर्स, बीजेएमसी, एमजेएमसी तथा सभी बीटेक और बीएससी, एलएलबी, बीएएलएलबी (ईडब्ल्यूएस) सहित सभी विषयों में बची हुई सीटों के लिए प्रवेश प्रक्रिया 16 सितम्बर 2024 तक बढ़ा दी गई है। इच्छुक विद्यार्थी अपने योग्यता के अनुसार आवेदन कर प्रवेश ले सकते हैं, इसके साथ ही सीयूटी में अप्लाई करने वाले अभ्यर्थी भी समर्थ पोर्टल के माध्यम से एडमिशन प्रक्रिया पूरी कर सकते हैं। एडमिशन से सम्बन्धित और अधिक जानकारी के लिए ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर जाकर विजिट कर सकते हैं। प्रवेश से सम्बन्धित और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय में बने प्रवेश केन्द्र से संपर्क किया जा सकता है। एक अन्य खबर के मुताबिक भाषा विश्वविद्यालय लखनऊ के फॉर्मेसी विभाग में एडमिशन का अवसर दिया गया है।

बता दें कि सत्र 2024-25 में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के भेषजी संकाय की शेष सीटों पर दाखिले अब कॉमन यूनिवर्सिटी टेस्ट (सीयूईटी-2024) अथवा यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट के आधार पर लिए जायेंगे। अभी तक इसमें प्रवेश एकेटीयू की काउंसिलिंग से लिए जाने थे।

एसजीपीजीआई में गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी विभाग के नये वार्ड का शुभारंभ

● 60 से 84 हुई विभाग में बेड की संख्या

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान के गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी विभाग के एक नये वार्ड को सोमवार को चौथी मंजिल पर क्रियाशील कर दिया गया। इस वार्ड का औपचारिक उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रोफेसर के धीमन द्वारा फीता काटकर किया गया।

इस अवसर पर गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर प्रवीर राय, संस्थान के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर संजय धीराज,अन्य चिकित्सकों में डॉक्टर समीर महिंद्रा, डॉ गौरव पांडे, डॉ अंशुमान, डाक्टर अनुग्रह, अन्य रेजीडेंट चिकित्सक और विभाग के कर्मचारी भी उपस्थित थे। डॉ प्रवीर राय ने बताया कि अभी तक संस्थान के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग में 60 बेड्स पर मरीजो को भर्ती किया जाता था। अब बिस्तरो की संख्या बढ़कर 84 हो गई है। साथ ही 13 डे केयर बेड्स भी गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग मे क्रियाशील है। विभाग मे बिस्तरो की संख्या बढ़ने से अब रोगियो की भर्ती सुगम हो सकेगी और प्रतीक्षा समय को न्यूनतम किया जा सकेगा।

तीन वर्ष पूर्व हुए फर्जीवाड़े से भी नही लिया सबक डिजिटल की से फिर दोहराया गया फर्जीवाड़ा

● तीन वर्ष पूर्व भी मोहनलालगंज के समेसी गांव की खतौनी में फर्जी तरीके से किसानों के नाम की गई थी 17 बीघे जमीन

संवाददाता। मोहनलालगंज

तहसील की खतौनी में किए गए फर्जीवाड़े का यह पहला मामला नही है। तीन वर्ष पूर्व भी समेसी की खतौनी में लगभग 17 बीघे जमीन दूसरों के नाम दर्ज कर दी गई थी। इसी तरह उस समय भी एफआईआर दर्ज की गई थी। लेकिन लोगों को अब तक मामले में ठोस कार्रवाई का इंतजार है। हालांकि पुलिस इस बार मामले की तह तक जाकर दोषियों पर कठोर कार्रवाई की बात कह रही है।

मोहनलालगंज तहसील के धौरहरा गौरिया कला और सदरपुर करोरा की खतौनी में किए गए फर्जी इंद्राज का मामला नया नही है। जुलाई 2021 में इसी तरह समेसी गांव की खतौनी में भी फर्जीवाड़ा कर 17 बीघे जमीन फर्जी तरीके से दूसरे किसानों के नाम दर्ज कर दी गई थी। तहसील में दोबारा हुए फर्जीवाड़े ने एक बार फिर लोगों को समेसी के फर्जीवाड़े की याद दिला दी है। दरअसल समेसी गांव की खतौनी में नायब तहसीलदार निगोहा की कोर्ट से नवंबर और दिसंबर 2020 में हुए दो आदेशों की मुकदमा संख्या का फर्जी तरीके से प्रयोग कर आधा दर्जन से अधिक गुमनाम किसानों की तकरीबन 17 बीघे दूसरों के नाम दर्ज कर दी गई थी। खुलासा होने के बाद तत्कालीन एसडीएम डॉक्टर शुभी सिंह ने खतौनी पर अंकित किए गए फर्जी आदेश निरस्त कर जमीन फिर से वास्तविक किसानों के नाम लौटा दी थी। उस वक्त भी कानूनगो अशोक पाण्डेय ने मामले में एफआईआर दर्ज कराई थी। पुलिस ने शुरुआत में तो तेजी दिखाई लेकिन बाद में मामला ठंडे बस्ते में डाल दिया गया।

फर्जीवाड़े की जद में आए गांवों के हर खाते का सत्यापन शुरू

खतौनी में फर्जीवाड़े की जद में आए धौरहरा गौरिया कला और सदरपुर करोरा गांव की खतौनी के हर खाते का सत्यापन शुरू कर दिया गया है। तहसीलदार शशांक नाथ उपाध्याय ने बताया लेखपाल के जरिए खतौनी पर जनवरी से अब तक आठ माह में दर्ज किए गए सभी आदेशों का सत्यापन कराया जा रहा है। उन्होंने बताया सर्किल वार तहसील के सभी गांव की खतौनी का इसी तरह सत्यापन कराया जाएगा। जिसकी शुरुआत गोसाईगंज और अमेठी सर्किल से की गई है। सत्यापन के लिए लेखपालों को रियल टाइम खतौनी की प्रिंट दी गई है।

पीड़ितों ने खोली फर्जीवाड़े की कलई कानूनगो पर एक्शन शुरू

खतौनी में फर्जीवाड़े की जांच कर रही पुलिस के सामने धौरहरा की पीड़ित बहनों ने फर्जीवाड़े की कलई खोलकर रख दी है। पुलिस को दिए बयान में पीड़ितों ने साफतौर पर प्रॉपर्टी डीलर और तहसील की मिलीभगत के आरोप लगाए हैं। एसीपी रजनीश वर्मा ने बताया पीड़ितों के बयान दर्ज कर सबूत जुटाए जा रहे हैं। उच्च अधिकारियों के निर्देशानुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी। उधर जिला प्रशासन ने कानूनगो के विरुद्ध विभागीय कार्रवाई शुरू कर दी है। एडीएम प्रशासन डॉक्टर शुभी सिंह ने बताया कानूनगो से स्पष्टीकरण मांगा गया है। जिसके आधार पर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

एकेटीयू में खेल प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● कुलपति प्रोफेसर जेपी पांडे ने बैडमिंटन खेल किया शुभारंभ, पहले दिन बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कैरम एवं शतरंज के खेल हुए

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय का रजत जयंती वर्ष समारोह सात मई 2024 से आठ मई 2025 तक मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य पर विश्वविद्यालय परिसर में इंट्रा यूनिवर्सिटी स्पोर्ट्स टूर्नामेंट का शुभारंभ सोमवार को कुलपति प्रो जेपी पांडेय ने बैडमिंटन खेलकर किया। इस मौक़े पर उन्होंने कहा कि खेल से न केवल हमारा शरीर एवं मन स्वस्थ रहता है बल्कि टीम भावना के रूप में भी कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। हम सभी को अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय निकालकर कोई ना कोई खेल अवश्य खेलना चाहिए। प्रतियोगिता का आयोजन 21 सितंबर तक होगा। दो सप्ताह के बीच होने वाले इस खेल प्रतियोगिता में क्रिकेट, एथलेटिक, बैडमिंटन, वालीबॉल, टेबिल टेनिस, कैरम, शतरंज के खेल होंगे। इसमें कुलपति एकादश, कुलसचिव एकादश, वित्त अधिकारी एकादश, परीक्षा नियंत्रक एकादश, आईईटी एकादश, एफओएपी एकादश, कैश एकादश, डीन एकादश, फार्मा एकादश, मैनेजमेंट एकादश की टीमें हिस्सा ले रही हैं। पहले दिन बैडमिंटन, टेबल टेनिस, शतरंज और कैरम के मैच आयोजित किये गये। बैडमिंटन के छह मैच हुए. डबल्स मेल में डीन 11 विजयी रहे।

अवैध कब्जा स्वीकार नहीं, कब्जेदार के खिलाफ एफआईआर भी लिखाई जाए

● मुख्यमंत्री ने कहा, वरासत, नामांतरण, पैमाइश, जैसे मामले कतई लंबित न रहें, अभियान चलाकर तत्काल कराएं समाधान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नामांतरण, पैमाइश, वरासत, उत्तराधिकार तथा भूमि उपयोग से जुड़े मामलों के तत्काल निस्तारण के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि जिलाधिकारी, एसडीएम और तहसीलदार अपने क्षेत्र में ऐसे लंबित प्रकरणों को चिन्हित करें और तेजी के साथ निर्णय लेते हुए यथोचित समाधान कराएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह आम आदमी के हितों को सीधे तौर पर प्रभावित करने वाले मामले हैं, हर हाल में इनका समयबद्ध निस्तारण होना ही चाहिए। व्यापक जनमहत्व के इन मामलों के अनावश्यक लंबित रहने पर मुख्यमंत्री ने सम्बंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय करने के निर्देश भी दिए हैं।

सोमवार को राजस्व परिषद के अध्यक्ष, मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव राजस्व, पुलिस महानिदेशक सहित वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक विशेष बैठक में मुख्यमंत्री ने राजस्व परिषद और राजस्व विभाग की कार्यप्रणाली को और लोकोपयोगी बनाने के लिए जारी प्रयासों की समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिलाधिकारी, पुलिस कप्तान, एसडीएम, सीओ, तहसीलदार जैसे जनता से सीधे तौर पर जुड़े अधिकारियों का जनता से सतत संवाद बना रहना चाहिए। लोगों की परेशानियों को सुनें और एक तय समय सीमा के भीतर मेरिट के आधार पर उनका निस्तारण कराएं। उन्होंने निर्देश दिए कि मंडलायुक्त तहसीलों/जिलों तथा ज़ोन के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अपने क्षेत्राधीन सरकारी कार्यालयों/थानों/मालखानों का औचक निरीक्षण करें। भूमि/भवन आदि पर अवैध कब्जा करने वालों के साथ पूरी कठोरता से कार्रवाई करने के निर्देश देते हुए मुख्यमंत्री ने सभी जिलाधिकारियों और पुलिस कप्तानों को ऐसे सभी मामलों को सूचीबद्ध करते हुए अवैध कब्जेदारों के खिलाफ कार्रवाई तेज करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि अवैध कब्जा किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं है। इसमें जीरो टॉलरेंस की नीति के साथ कार्रवाई की जाए। कब्जा हटाने की कार्रवाई के साथ ही अवैध कब्जा करने वालों के खिलाफ सुसंगत धाराओं में एफआईआर भी पंजीकृत कराया जाए।

चकबन्दी के मामलों को लेकर होने वाले विवादों का संदर्भ देते हुए मुख्यमंत्री ने चकबन्दी कार्यों के गहन समीक्षा की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि जहां कहीं भी चकबन्दी हो रही है, अथवा लंबित है, उसे सावधानी के साथ नियमों के अनुरूप किया जाए। एक निश्चित समय-सीमा में यह सभी कार्यवाही पूरी कर ली जाए। ग्रामीण क्षेत्र में पैमाइश के मामलों की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि पैमाइश का कार्य पूरी गंभीरता के साथ किया जाना चाहिए। प्रकरण के निस्तारित होने के बाद दोबारा अवैध कब्जा करने वाली हर गतिविधि के विरुद्ध कठोरता से कार्रवाई करें।

जनहित के दृष्टिगत राजस्व परिषद की महत्ता का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने राजस्व परिषद तथा राजस्व विभाग को और सुदृढ़ बनाने पर बल दिया। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि नायब तहसीलदार, तहसीलदार, एसडीएम, एडीएम (न्यायिक),कानूनगो और लेखपाल के रिक्त सभी पदों को यथाशीघ्र भरा जाए। उन्होंने जनपदों के मानचित्र को अपडेट करने के भी निर्देश दिए। वहीं, अवैध खनन की गतिविधियों रोकने के लिए अलर्ट रहने के निर्देश देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इसके लिए 'जीरो पॉइंट' पर ही कार्रवाई किया जाना उचित होगा। उन्होंने कहा कि छापेमारी की कार्रवाई पूरी तैयारी से हो और एक व्यवस्थित टास्कफोर्स द्वारा ही की जाए।

यूपी में 17 से 2 अक्टूबर तक सभी नगरीय निकायों में चलेगा स्वच्छता ही सेवा अभियान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● मुख्य सचिव अभियान के सफल क्रियान्वयन के संबंध में सभी नगर आयुक्तों के साथ की वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह की अध्यक्षता में नगरीय निकायों में स्वच्छता ही सेवा, 2024 अभियान के सफल क्रियान्वयन के संबंध में सभी नगर आयुक्तों के साथ वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक आयोजित की गई। मुख्य सचिव ने कहा कि स्वच्छता ही सेवा वर्ष 2024 अभियान की थीम स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता है। यह अभियान 17 सितम्बर से 02 अक्टूबर के मध्य विगत वर्षों की भांति चलाया जायेगा। अभियान के तहत मोहल्ला और शहर को स्वच्छ बनाया जाए। यह सुनिश्चित कराना होगा कि सॉलिड वेस्ट किसी भी दशा में ड्रेन में न जाए।

उन्होंने कहा कि निकाय स्तर पर ऐसा मॉडल तैयार करना चाहिए सालिड वेस्ट वार्ड अथवा मोहल्ले के बाहर न जाए। आर्गेनिक सॉलिड वेस्ट वार्ड लेवल अथवा मोहल्ले स्तर पर कम्पोस्टिंग की व्यवस्था हो। कुछ सॉलिड वेस्ट जैसे-प्लास्टिक, लोहा और लकड़ी को जिला स्तर पर एकत्रित कर ट्रीटमेंट की व्यवस्था की जा सकती है। यह बिल्कुल साफ होना चाहिए कौन सा कूड़ा वार्ड के बाहर जायेगा और कौन सौ कूड़ा वार्ड में ही निस्तारित किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्र में ऐसा कोई भी घर नहीं होना चाहिये, जिसके ट्वायलेट का पानी सीधे नाले या नदी में प्रवाहित हो। ऐसे घरों को चिन्हित किया जाये, जिनके ट्वायलेट का पानी सीधे नाले में गिर रहा है, उन्हें तत्काल नोटिस इश्यू किया जाये कि वह सोक पिट के साथ सेफ्टी टैंक बनायें। अगर सेफ्टी टैंक के लिए जगह नहीं है, तो वह बलराम मॉडल अपना सकते हैं, यह बहुत ही कम जगह में बन जाता है। यह कार्य शीर्ष प्राथमिकता पर होना चाहिये। यह भी कहा कि सभी नगर निगमों द्वारा सेप्टिक टैंक की सफाई करने वाले व्यक्तियों को इम्पैनल्ड किया जाये और जहां-जहां एसटीपी हैं, वहां पर जल निगम के द्वारा पम्पिंग स्टेशन पर ट्रीटमेंट फैसिलिटी डेवलप किया जाए।

बैठक में बताया गया कि स्वच्छता ही सेवा 2024 के तीन मुख्य घटक है-प्रथम स्वच्छता की भागीदारी, द्वितीय संपूर्ण स्वच्छता तथा तृतीय सफाई मित्र सुरक्षा शिविर। स्वच्छता की भागीदारी के अंतर्गत मुख्यमंत्री, मंत्रिगण, जनप्रतिनिधियों, अधिकारीगणों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं व स्कूल कॉलेजों द्वारा स्वच्छता के प्रति साफ-सफाई करते हुए विभिन्न स्थलों पर श्रमदान किया जाएगा। युवाओं की भागीदारिता एवं स्वच्छता की जागरूकता हेतु विभिन्न आईईसी कार्यक्रम कराये जायेंगे। आईईसी कार्यक्रम के तहत प्लॉगरन, मैराथान, साईक्लॉथान, पौधरोपड़, जीरो वेस्ट ईवेंट, स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समिति के सदस्यों द्वारा वार्डों में जन-जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। यह भी बताया गया कि वर्तमान में लगभग 5000 स्वच्छ सारथी क्लब प्रदेश में स्थापित किये गये हैं।

सीएम योगी वन विभाग में नवनियुक्त 647 युवाओं को आज देंगे नियुक्ति पत्र

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अगले दो वर्ष में उत्तर प्रदेश के दो लाख से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी से जोड़ने का ऐलान किया है। इसके लिए तैयारियां भी चल रही हैं। इसी क्रम में सीएम योगी के हाथों से लोकभवन में मंगलवार को 647 युवाओं को वन रक्षक व वन्य जीव रक्षक पद पर नियुक्ति पत्र वितरित किया जाएगा। यूपी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में भी 41 अवर अभियंताओं की तैनाती की गई है।

योगी सरकार ने अन्य विभागों की तरह ही वन व वन्य जीव विभाग में भी पारदर्शी प्रक्रिया के अनुरूप युवाओं को नौकरी दी है। योगी सरकार में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग से निकली भर्ती में सहायक वन संरक्षक पद पर 94, क्षेत्रीय वन अधिकारी पद पर 217, सहायक सांख्यिकी अधिकारी के पद पर 15 युवाओं को नियुक्ति दी जा चुकी है। उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा निकाली गई भर्ती में मानचित्रकार पद पर 37 और वन रक्षक/वन्य जीव रक्षक पद पर 534 युवाओं की नियुक्ति की गई है। इसी पद पर 10 सितंबर को 647 अन्य युवाओं को भी नियुक्ति पत्र दिया जाएगा यानी वन रक्षक और वन्य जीव रक्षक के पद पर कुल 1181 युवाओं की भर्ती हो जाएगी। यह रक्षक वन्यजीव व मानव संघर्ष को रोकने में बड़ी भूमिका का निर्वहन करेंगे। इसी तरह क्षेत्रीय वन अधिकारी के पद पर 217 युवाओं को सरकारी नौकरी मिली।

वन विभाग के अतिरिक्त यूपी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में भी युवाओं की जेई पद पर भर्ती की गई। इसमें 41 अवर अभियंताओं की तैनाती की गई है। निष्पक्षता के आधार पर मिली नौकरी के उपरांत युवा काफी पारदर्शिता से अपने कार्यों का संचालन कर रहे हैं।

मत्स्य पालन पट्टा आवंटन के लिए अपनाएं ऑनलाइन प्रणाली: मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● सीएम योगी से मत्स्यजीवी सहकारी संघों के पदाधिकारियों के शिष्टमंडल ने की भेंट

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तालाबों/पोखरों के मत्स्य पालन हेतु आवंटन में स्थानीयता को वरीयता देने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने पट्टा आवंटन में शुचिता और पारदर्शिता पर जोर देते हुए निर्देश दिए कि मत्स्य पालन के नियमों के सरलीकरण करने की जरूरत बताई। साथ ही कहा कि पट्टा आवंटन की प्रक्रिया ऑनलाइन की जानी चाहिए, इसके लिए विभाग द्वारा पोर्टल तैयार किया जाए।

सोमवार को मत्स्य मंत्री संजय निषाद की उपस्थिति में मत्स्यजीवी सहकारी संघों के पदाधिकारियों के एक शिष्टमंडल से भेंट करते हुए मुख्यमंत्री ने विभागीय योजनाओं की प्रगति पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्रदेश में एक बड़ी आबादी की आजीविका पारंपरिक रूप से मत्स्य पालन पर आधारित रही है। ऐसे में तालाबों/पोखरों आदि जलाशयों का पट्टा आवंटन करते समय इस समुदाय के स्थानीय लोगों को वरीयता दी जानी चाहिए। उन्होंने पट्टा आवंटन के लिए अभियान चलाने पर भी बल दिया और कहा कि पट्टे से प्राप्त धनराशि संबंधित ग्राम पंचायत के आय संवर्द्धन का माध्यम भी बनेगी। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि मत्स्य विभाग, मत्स्य सहकारी समितियों तथा मत्स्य बीज विकास निगम को मत्स्य सेक्टर के विकास के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों का सेमिनार, गोष्ठी, परिचर्चा आदि के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

लखनऊ बार एसोसिएशन का वार्षिक चुनाव शांतिपूर्वक सम्पन्न, मतों की गिनती आज

विधिसंवाददाता। लखनऊ

लखनऊ बार एसोसिएशन के वार्षिक चुनाव का मतदान सोमवार को शांतिपूर्वक संपन्न हो गया। अध्यक्ष व महासचिव समेत 22 पदों के लिए किस्मत आज़मा रहे कुल 93 उम्मीदवारों का भाग्य मतपेटी में बंद हो गया। कुल 3734 वैध मतदाताओं में से 2226 मतदाताओं ने अपने मत का इस्तेमाल किया। मतदान सुबह नौ बजे से शुरू होकर सायं पांच बजे तक चला। मतों की गिनती मंगलवार, 10 सितंबर को होगी। लखनऊ बार के वार्षिक चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए छह उम्मीदवार अमरवीर श्रीवास्तव, जेपी सिंह, केदार सिंह, राजेंद्र प्रसाद शुक्ला व रमेश प्रसाद तिवारी ने अपनी दावेदारी पेश की है। जबकि महासचिव पद पर मात्र दो उम्मीदवार बृजभान सिंह भानू और जितेंद्र सिंह यादव अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। मुख्य चुनाव अधिकारी ने शांतिपूर्वक चुनाव सम्पन्न कराने के लिए वकीलों के साथ ही पुलिस प्रशासन का भी आभार जताया है।

सीएसआर के तहत प्राथमिक विद्यालय में गतिविधियां आयोजित

लखनऊ। विश्व स्तर पर व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण और गिरने से बचाव के समाधान प्रदान करने वाली अग्रणी कंपनी करम सेफ्टी ने सरोजनी नगर, लखनऊ स्थित उदयत खेड़ा प्राथमिक विद्यालय में समाज सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। अपनी निरंतर चल रही सामाजिक उत्तरदायित्व पहल के एक भाग के रूप में, करम सेफ्टी के लखनऊ संयंत्र के स्वयंसेवकों ने छात्रों को खुशी और सीखने का माहौल देने के लिए अपना समय समर्पित किया। स्वयंसेवकों ने कई रोचक और शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया, जिसमें संवादात्मक खेल, कहानी सुनाने के सत्र, और रचनात्मक अभ्यास शामिल थे, जिन्होंने छात्रों का ध्यान आकर्षित किया और उनकी जिज्ञासा को प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर करम सेफ्टी की मुख्य मानव संसाधन अधिकारी कविता निगम ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि करम सेफ्टी में, हम मानते हैं कि शिक्षा सशक्तिकरण का आधार है, और इस तरह की पहल हमें युवा मनों के जीवन में सार्थक योगदान देने की अनुमति देती है। उदयत खेड़ा प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के साथ शिक्षक दिवस मनाना एक शानदार अनुभव था, जो समुदाय विकास और युवा सशक्तिकरण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।

सपा ने मृतक परिजनों को दी आर्थिक सहायता

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता राजेन्द्र चौधरी ने कहा कि गोमतीनगर स्थित जुराखनपुरवा महावीर प्रसाद यादव की दुखद हत्या हुई थी। जिसके उपरांत समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव द्वारा उनकी बेटी जया और आंचल को 50-50 हजार रुपए की सहायता राशि प्रदान की गई। इस मौके पर समाजवादी पार्टी के सांसद आरके चौधरी, प्रदेश उपाध्यक्ष सी. एल. वर्मा, जिला अध्यक्ष जयसिंह जयंत, पूर्व विधायक राजेंद्र यादव, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष विजय बहादुर यादव, जिला उपाध्यक्ष एवं जिला निर्वाचन प्रभारी टीबी सिंह, प्रदेश सचिव विजय सिंह यादव, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड नागेंद्र सिंह, जिला उपाध्यक्ष हलीम खान, बीकेटी विधानसभा अध्यक्ष अजय रावत, सुशील यादव, सतीश यादव, सेक्टर प्रभारी मोहम्मद इमरान, हारून अजीज, सुफियान, सुंदरलाल, गोविंद यादव, त्रिभुवन यादव एवं रामदुलारे यादव के साथ सैकड़ो की संख्या में पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे। सपा प्रवक्ता ने बताया कि सीतापुर में ध्वस्त कानून व्यवस्था, लगातार बढ़ रही चोरी लूट व अपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगाने, शारदा सहायक कटान पीड़ितों एवं बाढ़ पीड़ितों को मुआवजा दिलाने, बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, जाति व धर्म के नाम पर हो रहे अत्याचार व अनाचार को रोकने, जातिगत जनगणना कराने व अन्य जनसमस्याओं को लेकर आज दिनांक 09 सितम्बर 2024 को विधानसभा महमूदाबाद जनपद सीतापुर में पूर्व मंत्री नरेन्द्र सिंह वर्मा के आवास से रामकुण्ड चौराहा होते हुए तहसील महमूदाबाद तक पैदल मार्च निकालकर 'सांकेतिक विरोध प्रदर्शन' किया गया तथा तहसील परिसर में धरना प्रदर्शन कर राज्यपाल को सम्बोधित 21 सूत्री ज्ञापन उपजिलाधिकारी महमूदाबाद को सौंपा गया।

गोवंशों को रेडियमयुक्त पट्टी डालने की कार्ययोजना बनाई जाए: धर्मपाल

● गोआश्रय स्थलों पर सभी आवश्यक सुविधायें सुनिश्चित की जाए

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पशुधन विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने सोमवार को विधान भवन स्थित कार्यालय कक्ष में प्रदेश के गौ आश्रय स्थलों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिये कि जिन गौ आश्रय स्थलों में अव्यवस्था या गौवंश की देखभाल संबंधी कोई भी शिकायत संज्ञान में आए वहां तत्काल सुधार किया जाए। मुख्य पशु चिकिसाधिकारी ये सुनिश्चित करें कि केयरटेकर द्वारा गौवंश हेतु आवश्यक कार्य सुचारू रूप से पूरे किए जाएं। गोवंश भूखा-प्यासा न रहे और बीमार पशु को पर्याप्त चिकित्सा उपलब्ध हो। गौवंश आश्रय स्थलों का संचालन व्यवस्थित और विधिवत तरीके से किया जाए। वर्तमान में अब तक प्रदेश के 7557 गोआश्रय स्थलों पर 1190965 निराश्रित गोवंश संरक्षित किये गये हैं। सिंह ने पशुधन विभाग के अधिकारियों को मार्ग दुर्घटनाओं को रोकने के लिए राष्ट्रीय राज्यमार्ग व अन्य राज्यमार्गों के समीपवर्ती ग्रामों में पशुपालकों एवं किसानों के गोवंश को रेडियमयुक्त पट्टी डाले जाने पर चर्चा करते हुए आवश्यक एवं व्यवहारिक कार्ययोजना तैयार कर प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। सिंह ने कहा कि टीकाकरण एवं बधियाकरण के लक्ष्यों को पूरा किया जाए और इन कार्यों में लगे पैरावेट्स को निर्धारित धनराशि समय पर दी जाए।

धर्मपाल सिंह ने प्रदेश में निराश्रित गोवंश को गोआश्रय स्थल तक पहुंचाने, गोशालाओं में चारा, भूसा, स्वच्छ पेयजल, प्रकाश, औषधि उपलब्धता, प्रत्येक जिले में कृत्रिम गर्भाधान के लक्ष्य निर्धारण आदि की गहन समीक्षा की। सिंह ने कहा कि मण्डलीय अपर निदेशक प्रतिदिन अपने मण्डल में कम से कम एक जनपद का भ्रमण कर गोआश्रय स्थलों का निरीक्षण करें। सिंह ने गोशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने के निर्देश दिये। बैठक में दुग्ध विकास विभाग पशुधन विभाग के प्रमुख सचिव के. रवीन्द्र नायक ने मंत्री को विभाग की योजनाओं की अद्तन स्थिति से अवगत कराया और आश्वस्त किया कि उनसे प्राप्त दिशा-निर्देशों का अक्षरश: अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा। प्रमुख सचिव ने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि गोआश्रय स्थलों पर सभी आवश्यक सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था की जाए।

अँधपुर देव में लगेगी रानी अवंतीबाई लोधी की प्रतिमा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने अँधपुर देव में प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन की नायिका रानी अवंतीबाई लोधी की प्रतिमा की स्थापना के लिए विधायक निधि से 5 लाख प्रदान करने की घोषणा की। सोमवार को भाजपा ओबीसी मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष संजय लोधी, मंडल अध्यक्ष विवेक राजपूत, ग्राम प्रधान कैथी मनोज लोधी, ग्राम प्रधान खटोला संतोष लोधी, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि रितेश सिंह एवं प्रधान प्रतिनिधि जय करन लोधी ने विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह को रानी अवंतीबाई लोधी की प्रतिमा स्थापित कराये जाने का प्रस्ताव दिया था।

इस सम्बन्ध में डॉ. सिंह ने कहा कि शौर्य, साहस और पराक्रम की प्रतिमूर्ति, 1857 के स्वाधीनता संग्राम की महानायिका, वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी का त्यागपूर्ण जीवन सभी के लिए महान प्रेरणास्रोत है। हमारा प्रयास है सरोजनीनगर में सभी महापुरुषों की गौरव गाथाओं का प्रसार हो ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके जीवन से राष्ट्र के प्रति समर्पण की प्रेरणा प्राप्त करती रहें। उधर सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने सोमवार को अपने आशियाना आवास पर क्षेत्रीय जनता के साथ बैठक कर संचालित विकास कार्यों एवं जन कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा की, साथ ही जनसमस्याएं सुनकर उनके त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण हेतु आश्वस्त भी किया। इस दौरान डॉ. सिंह ने तेलीबाग निवासी इंटरमीडिएट परीक्षा में 90त्न अंक प्राप्त करने वाली भाजपा बूथ अध्यक्ष बृजभान सिंह बेटी, मेधावी छात्रा तन्या सिंह तथा वरिष्ठ भाजपा नेता, गोडवा निवासी सुभाष पासी की बेटी, मेधावी छात्रा मोहिनी वर्मा को लैपटॉप प्रदान कर सम्मानित किया। डॉ. राजेश्वर सिंह ने आशियाना आवास पर पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी हामिद सलमानी को बैडमिंटन किट खरीदने के लिए 20,000 की सहयोग राशि प्रदान कर प्रोत्साहित किया व उनकी अग्रिम प्रतिस्पर्धा, पैरा गेम्स इंडोनेशिया के लिए शुभकामनाएं दीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पदाधिकारी विवेक मिश्रा एवं नगर संघचालक अर्जुनगंज अशोक कुमार और लोकगायिका वंदना मिश्रा ने आशियाना आवास पर विधायक से मुलाक़ात की।

गांधी जयन्ती पर 12 कोच की स्पेशल सचल प्रदर्शनी ट्रेन संचालित की जायेगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि काकोरी ट्रेन एक्शन की स्मृति ताजा करने तथा जनमानस में राष्ट्रभक्ति की भावना जाग्रत करने के लिए गांधी जयन्ती 02 अक्टूबर, 2024 के अवसर पर स्पेशल सचल प्रदर्शनी ट्रेन का संचालन कराया जायेगा। इसके तहत 12 कोच की स्पेशल ट्रेन के माध्यम से सचल प्रदर्शनी पूरे राज्य भर में संचालित कर काकोरी ट्रेन एक्शन के प्रति युवाओं, विद्यार्थियों तथा जनमानस को इसका इतिहास बताया जायेगा। इस सचल रेल प्रदर्शनी के लिए अध्यक्ष एवं सीईओ रेलवे बोर्ड, रेल भवन, नई दिल्ली को प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति की ओर से 5 सितम्बर, 2024 को पत्र भेजकर अनुरोध किया गया है। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी वाले स्टेशनों पर नुक्कड़ नाटक, क्विज प्रतियोगिताओं, चित्रकला प्रतियोगिता, रंगोली आदि का आयोजन किया जायेगा। इसमें स्कूल एवं कालेज की छात्र-छात्राओं को शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जायेगा, ताकि उनके मन में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना एवं नई ऊर्जा का संचार हो सके। जयवीर सिंह ने बताया कि सचल रेल प्रदर्शनी के लिए 12 कोच की एक विशेष रेलगाड़ी की आवश्यकता होगी, जिसमें 11 कोच प्रदर्शनी के उद्देश्य से प्रयोग में लाये जायेंगे तथा 1 कोच एसी-3 भी लगाया जायेगा, जिसमें संबंधित अधिकारी, कर्मचारी एवं प्रतिनिधि यात्रा करेंगे। इस ट्रेन की साज-सज्जा एवं प्रदर्शनी हेतु विनायल आदि की व्यवस्था विभाग द्वारा की जायेगी।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की महत्वपूर्ण घटना काकोरी ट्रेन एक्शन की 100वीं वर्षगांठ का शुभारम्भ 9 अगस्त, 2024 से काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव के रूप में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा किया गया था।

एआईएमआईएम के कई नेता व कार्यकर्ता कांग्रेस में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा प्रेरित होकर जनपद संभल से शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तौकरी अहमद एवं कांग्रेस कार्यकर्ता मुशांर खां तरीन के नेतृत्व में बड़ी संख्या में एआईएमआईएम पार्टी नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के समक्ष कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की। इस मौके पर प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष, प्रभारी प्रशासन दिनेश सिंह तथा प्रदेश उपाध्यक्ष विश्वविजय सिंह भी मौजूद रहे। इसी क्रम में आज जनपद सीतापुर से सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी त्रिभुवन सिंह ने भी कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की।

यूपी बनेगा देश का फूड बास्केट

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की शुरू से मंशा रही है कि उत्तर प्रदेश देश का 'फूड बास्केट' बने। इस मंशा के पीछे उनके ठोस तर्क हैं। मसलन इंडो गेंगेटिक बेल्ट की सबसे उर्वर भूमि, अलग अलग फसलों और फलों की खेती के लिए नौ तरह की कृषि जलवायु, वर्ष पर्यन्त पानी की उपलब्धता वाली गंगा, यमुना, सरयू जैसी नदियां, सर्वाधिक आबादी के नाते प्रचुर मात्रा में श्रम और बाजार की उपलब्धता आदि।

विभिन्न योजनाओं के जरिए योगी सरकार लगातार फसलों की उपज बढ़ाने का प्रयास कर रही है। इसके नतीजे भी निकले हैं। पर राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर अलग अलग फसलों के उत्पादन पर गौर करें तो अब भी उपज बढ़ाने की बहुत संभावना है। सरकार अब इस पर ही फोकस कर रही है। यूपी एग्रीज जैसी महत्त्वाकांक्षी परियोजनाओं के केंद्र में भी उपज बढ़ाने को मुख्य घटक माना गया है। करीब दो साल पहले भी सरकार ने जिलेवार और फसलवार अधिकतम और न्यूनतम उत्पादकता के आंकड़े निकलवाए थे। इसका मकसद यह जानना था कि किन वजहों से किसी फसल के अधिकतम और न्यूनतम उत्पादन में इतना अंतर है। इस अंतर को पाटने के लिए न्यूनतम उत्पादन वाले जिलों में संबंधित फसल का उत्पादन बढ़ाने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

अब यही कवायद एक बार फिर योगी सरकार विश्वबैंक की मदद से यूपी एग्रीज (उत्तर प्रदेश कृषि एवम ग्रामीण उद्यमिता सुदृढ़ीकरण कार्यक्रम) के जरिए अधिक संसाधनों के साथ व्यापक इलाके में समयबद्ध और नियोजित तरीके से जा रही है। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश करीब 24त्न उत्पादन के साथ कुल कृषि उत्पादन में देश में नंबर एक है। रबी की प्रमुख फसल गेंहू के मामले में यह नंबर एक (31त्न) तो खरीफ की प्रमुख फसल धान के उत्पादन में इसका देश में दूसरा (15त्न) है।

परिवहन निगम के बेड़े में महाकुंभ से पूर्व शामिल होंगी 220 इलेक्ट्रिक बसें

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने बताया कि परिवहन निगम जल्द ही 220 इलेक्ट्रिक बसों की सौगात प्रदेश के लोगों को देने जा रही है। 100 इलेक्ट्रिक बसों की खरीदे जाने की कार्यवाही की जा चुकी है। जो प्रयागराज गाजियाबाद और आगरा क्षेत्र से संचालित होगी सयह बसें लखनऊ से अयोध्या, कानपुर, नैमिषारण्य, बाराबंकी आदि जनपदों के लिए संचालित होगी। 120 और इलेक्ट्रिक बसों को खरीदे जाने हेतु टेण्डर प्रक्रिया शुरू की जा चुकी हैं। यह बसे एकबार पूर्ण चार्ज होने पर लगभग 160 किमी की दूरी तय करेंगी। जिसमें 20 डबल डेकर 9 मीटर लम्बी, 2-2 सेट की, 60 सीटर 30 बसें 12 मीटर लम्बी, 2-2, 40 सीटर, 30 बसें 9 मीटर लम्बी, 2म3, 38 सीटर एवं 40 बसें 12 मीटर लम्बी 2-3 ,51 सीटर इलेक्ट्रिक बसें शामिल हैं। परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने बताया कि उक्त बसें पूर्ण निर्मित आधार पर क्रय की जायेगी। सभी इलेक्ट्रिक बसें पूर्णत: वातानुकूलित बसें होगी। उक्त बसें आरामदेय होने के साथ-साथ प्रदूषण मुक्त होंगी। इलेक्ट्रिक बसों से किसी भी प्रकार की हानिकारक गैस या धुओं का उत्पादन नहीं होता है। यह लोगों के स्वास्थ्य पर किसी भी प्रकार का नकारात्मक प्रभाव नहीं डालता है।

परिवहन मंत्री ने बताया कि क्रय की जाने वाली सभी इलेक्ट्रिक बसों में वेहकिल लोकेशन एण्ड टैऊकिंग डिवाइस के साथ-साथ पैनिक बटन भी लगी होगी, जिससे कि लोगों को बसों की वास्तविक पोजीशन की जानकारी के साथ-साथ सुरक्षा भी मुहैया होगी। उक्त बसों में रिवर्स कैमरा, वाई-फाई एवं सीसीटीवी कैमरे भी लगे होंगे। इसके अलावा पब्लिक एनाउन्समेंट डिवाइस से भी लैस होगा, जो ड्राइवर के पास लगा होगा।

जनपद अंबेडकर नगर को प्रदेश में मिला प्रथम स्थान

अंबेडकर नगर। मुख्यमंत्री के सर्वोच्च प्राथमिकता आइजीआरएस में जिलाधिकारी अविनाश सिंह के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में जनपद अंबेडकर नगर को प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। आइजीआरएस रैंकिंग में माह अगस्त 2024 में प्रदेश के 75 जनपदों में जनपद अंबेडकर नगर को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। आइजीआरएस पोर्टल के माध्यम से प्रत्येक माह जिले की रैंकिंग जारी की जाती है प्रगति विभावार दर्ज होती है इसके अंतर्गत शिकायतों का ससमय व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करना होता है। इसी क्रम में माह अगस्त 2024 की रैंकिंग जारी की गई है जिसमें जनपद अंबेडकर नगर को प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। जिलाधिकारी द्वारा आईजीआरएस रैंकिंग में उच्च स्थान प्राप्त करने पर जनपद स्तरीय समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों को बधाई दी है एवं उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी/कर्मचारी आगे भी टीम भावना के साथ इसी प्रकार बेहतर प्रदर्शन करते रहेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि सभी अधिकारी प्रातः 10 से 12बजे तक जनसुनवाई करें और आइजीआरएस पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों का ससमय व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करना सुनिश्चित करेंगे और जिससे जनपद आगे भी उच्च स्थान प्राप्त करता रहे।

जिलाधिकारी ने चिल्ड्रेन पार्क के कार्यो का भौतिक निरीक्षण किया

अम्बेडकर नगर। जिलाधिकारी अविनाश सिंह ने न्याय पथ पर डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर प्रतिमा के पास विकसित किए जा रहे चिल्ड्रेन पार्क के कार्यों का भौतिक निरीक्षण किया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने चिल्ड्रेन पार्क के समस्त कार्यों को पूर्ण गुणवत्ता के साथ तीव्र गति से कराने तथा समस्त कार्यों को अवधित समय में पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि इस निर्माणाधीन पार्क में बच्चों को खेलने हेतु समस्त सुविधाएं उपलब्ध होंगी। पार्क में बच्चों के खेलने हेतु स्पाइरल स्लाइड्स फाइबर स्लाइड्स स्टैंडिंग प्लेटफार्म झूला जाइंट स्विंग्स सीट्रा आदि सहित विभिन्न बहुउद्देशीय एवम् आकर्षक खेल उपकरणों को लगाया जाएगा। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी डॉ0 सदानंद गुप्ता व जिला अर्थ एवं संख्या अधिकारी अनुपम सिंह भी मौजूद रहे।

समाज में अपनी पैठ को बनाएं मजबूत

गाजीपुर। सदस्यता अभियान 2024 को गति प्रदान करने तथा अब तक हुई सदस्यता के समीक्षा को लेकर जंगीपुर विधानसभा के बिरनो मंडल की बैठक मार्टर मेमोरियल स्कूल जंगीपुर एवं सदर पूर्वी मंडल की एसवीके पब्लिक स्कूल कैथवलिया में मंडल अध्यक्ष मनु राजभर एवं धर्मेन्द्र कुशवाहा की अध्यक्षता में हुई। बैठक को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष सुनील कुमार सिंह ने कहा कि भयमुक्त भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रभावी रूप से कार्य करता हुआ समाज में अपनी पैठ को मजबूत किया है। जनता के उम्मीदों तथा देश को परम वैभव पर स्थापित करने के लिए लगातार काम कर रहे कार्यकर्ताओं के बल पर भाजपा संगठन वर्ष 2024 में सदस्यता का कीर्तिमान स्थापित करेगी और कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में देश और प्रदेश समृद्ध और शक्तिशाली बन रहा है। जिला महामंत्री प्रवीण सिंह ने कहा कि महापुरुषों की सोच और सपनों पर कार्य करते हुए भाजपा ने पूरे देश में जनता का विश्वास प्राप्त किया है। वरिष्ठ नेता संकठा प्रसाद मिश्र ने भी बैठक को संबोधित किया। बैठक का शुभारंभ पं दीनदयाल उपाध्याय एवं डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गई।

बैडमिंटन टूर्नामेंट का समापन

सोनभद्र। एनटीपीसी विंध्याचल के स्पोर्ट्स काउंसिल द्वारा आयोजित औद्योगिक मैत्री बैडमिंटन टूर्नामेंट का समापन एक रोमांचक फाइनल मैच के साथ हुआ। टूर्नामेंट 26 अगस्त से 31 अगस्त 2024 तक आयोजित किया गया जिसमें एनटीपीसी विंध्याचल एनटीपीसी रिहंद एनटीपीसी सिंगरौली रिलायंस पावर अदानी पावर हिंडाल्को नॉर्दर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड और सिंगरौली जिला प्रशासन की टीमों ने भाग लिया। टूर्नामेंट को दो श्रेणियों में बांटा गया, जिसमें ग्रुप ए से एनटीपीसी विंध्याचल हिंडाल्को एवं सिंगरौली जिला प्रशासन की टीमों ने भाग लिया। वहीं ग्रुप बी से एनटीपीसी रिहंद एनटीपीसी सिंगरौली रिलायंस एवं नॉर्दर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड की टीमों ने भाग लिया। इस अवसर पर उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए कार्यकारी निदेशक ई सत्य फणि कुमार ने टूर्नामेंट के सफल आयोजन हेतु खेल परिषद विंध्याचल के पदाधिकारियों और सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को बधाई दी तथा परियोजना द्वारा इस प्रकार की खेल गतिविधियों के आयोजन को बढ़ावा देने के प्रयासों की प्रशंसा की। प्रतियोगिता ग्रुप ए से एनटीपीसी विंध्याचल और ग्रुप बी से नॉर्दर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड के बीच रोमांचक मुकाबला के साथ खेला गया, जिसमें पहले क्वालीफायर में एनटीपीसी विंध्याचल ने एनसीएल को 3-2 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया और दूसरे क्वालीफायर में एनसीएल ने रिहंद को 3-0 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल में नॉर्दर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड ने एनटीपीसी विंध्याचल को हराकर विजयी हुई। औद्योगिक मैत्री बैडमिंटन न केवल खेल की भावना को उजागर किया, बल्कि सौहार्द को भी बढ़ावा दिया। साथ ही सामुदायिक जुड़ाव बढ़ाया, जिससे यह सभी प्रतिभागियों के लिए एक यादगार कार्यक्रम बन गया। इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक ई सत्य फणि कुमार मुख्य महाप्रबंधक समीर शर्मा महाप्रबंधक एवं स्पोर्ट्स काउंसिल के अध्यक्ष डी के अग्रवाल और मानव संसाधन प्रमुख राकेश अरोड़ा जनरल सेक्रेटरी स्पोर्ट्स काउंसिल ओपी सिंह के साथ ही स्पोर्ट्स काउंसिल के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों द्वारा सभी विजेताओं को ट्रॉफी देकर सम्मानित भी किया गया।

जिलास्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता हुई सम्पन्न

सोनभद्र। एनटीपीसी सिंगरौली ने पहली बार जिला स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता का आयोजन रविवार को मनोरंजन केंद्र, शक्तिनगर में जिले के टेबल टेनिस एसोसिएशन के सहयोग से किया गया। अध्यक्षता परियोजना प्रमुख राजीव अकोटकर ने की। कार्यक्रम के समापन पर सभी विजेताओं को महाप्रबंधक ऑपरेशन एंड मेंटेनेंस ए. एस. भोगल ने सम्मानित किया। टूर्नामेंट में कुल 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आयोजन का मुख्य उद्देश्य जिला स्तर पर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करना और उन्हें खेल के प्रति प्रेरित करना था। कार्यक्रम में एनटीपीसी सिंगरौली के सभी विभाग के विभागाध्यक्ष वरिष्ठ प्रबन्धक कर्मचारी यूनियन एवं एसोसिएशन के प्रतिनिधि बच्चे व अभिभावक आदि उपस्थित रहे।

मुविवि का दीक्षान्त समारोह कल, आएंगी राज्यपाल

मुविवि के दीक्षान्त समारोह में आजमगढ़ की आरती यादव को मिलेगा कुलाधिपति स्वर्ण पदक

11 को बटेंगे 26 स्वर्ण पदक, 31 हजार से अधिक छात्रों को मिलेगी उपाधि

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय का 19 वां दीक्षान्त समारोह बुधवार 11 सितम्बर को पूर्वान्ह 11 बजे सरस्वती परिसर स्थित अटल प्रेक्षागृह में आयोजित होगा। दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल आनंदीबेन पटेल करेंगी। जबकि मुख्य अतिथि प्रो कामेश्वर नाथ सिंह कुलपति दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय बोधगया दीक्षान्त भाषण देंगे। वहीं योगेंद्र उपाध्याय उच्च शिक्षा मंत्री तथा रजनी तिवारी उच्च शिक्षा राज्यमंत्री उत्तर प्रदेश विशिष्ट अतिथि के रूप में दीक्षान्त समारोह में शामिल होंगे। कुलपति प्रो सत्यकाम ने सोमवार को पत्रकारों को बताया कि दीक्षान्त समारोह में विभिन्न विद्या शाखाओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले शिक्षार्थियों को 26 स्वर्ण पदक प्रदान किए जायेंगे। जिनमें सोलह स्वर्ण पदक छात्राओं तथा दस स्वर्ण पदक छात्रों की झोली में जायेंगे। दीक्षान्त समारोह में सत्र दिसम्बर 2023 तथा जून 2024 की परीक्षा के सापेक्ष उत्तीर्ण 31940 शिक्षार्थियों को उपाधि प्रदान की जायेगी। जिसमें 19096 पुरूष तथा 12844 महिला शिक्षार्थी हैं। प्रो सत्यकाम ने बताया कि सरस्वती परिसर स्थित अटल प्रेक्षागृह में दीक्षान्त समारोह के आयोजन के लिये सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर ली गयी हैं। दीक्षान्त समारोह में उपाधि प्राप्त करने के लिए लगभग तीन हजार शिक्षार्थियों ने ऑनलाइन पंजीकरण कराया है। जिन्हें दीक्षान्त समारोह में उपाधियां प्रदान की जायेंगी। दीक्षान्त समारोह भारतीय पारम्परिक परिधान में आयोजित किया जायेगा। प्रो सत्यकाम ने बताया कि समारोह में कुलाधिपति स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र आजमगढ़ की छात्रा आरती यादव को दिया जायेगा। आरती ने बीएससी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा समस्त

विद्याशाखाओं की स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षाओं में उत्तीर्ण समस्त स्नातक परास्नातक शिक्षार्थियों में सर्वश्रेष्ठ रहीं। प्रो सत्यकाम ने बताया कि विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक इस बार स्नातकोत्तर वर्ग में विद्या शाखाओं के सात टापर्स को दिए जा रहे हैं। जिसमें मानविकी विद्याशाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र आगरा से सम्बद्ध एमए अर्थशास्त्र के छात्र यश यादव को समाज विज्ञान विद्याशाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक प्रयागराज क्षेत्रीय केंद्र से सम्बद्ध एमए समाज कार्य के छात्र तौफीक खान को प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र गोरखपुर से सम्बद्ध एमकाम की छात्रा प्रिया शर्मा को कंप्यूटर एवं सूचना विज्ञान विद्याशाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक प्रयागराज क्षेत्रीय केन्द्र से सम्बद्ध एमसीए के छात्र अनित सिंह मलिक को शिक्षा विद्याशाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र आगरा से सम्बद्ध एमए शिक्षा शास्त्र के छात्र जानकी प्रसाद को विज्ञान विद्याशाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक भी क्षेत्रीय केंद्र आगरा से सम्बद्ध एमएससी जैव रसायन के छात्र पवन कुमार को स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र आजमगढ़ से सम्बद्ध एमए गृह विज्ञान की छात्रा विनीता सिंह को दिया जायेगा। प्रो सत्यकाम ने बताया कि स्नातक वर्ग में विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक भी इस बार विद्याशाखाओं के सात टापर्स को दिये जायेंगे। जिसमें मानविकी विद्या शाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र आजमगढ़ से सम्बद्ध स्नातक बीए के छात्र जावेद अख्तर को समाज विज्ञान विद्याशाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र आजमगढ़ से सम्बद्ध स्नातक बीए की छात्रा सबरीन खातून को प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र आजमगढ़ से सम्बद्ध स्नातक बीकॉम की छात्रा साक्षी मौर्या को कम्प्यूटर एवं सूचना विज्ञान विद्याशाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र आजमगढ़ से सम्बद्ध स्नातक बीसीए की छात्रा कविता देवी को शिक्षा विद्या शाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र अयोध्या से सम्बद्ध स्नातक बीएड की छात्रा ज्योति कुशवाहा को विज्ञान विद्या शाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र आजमगढ़ से सम्बद्ध स्नातक बीएससी की छात्रा आरती यादव को स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक क्षेत्रीय केंद्र मेरठ से सम्बद्ध स्नातक बीएससी ह्यूमन न्यूट्रिशन की छात्रा तान्या त्यागी को प्रदान किया जायेगा। प्रो सत्यकाम ने बताया कि दीक्षान्त समारोह के अवसर पर आंगनबाड़ी केंद्रों को विश्वविद्यालय की तरफ से कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल द्वारा किट भेंट किया जाएगा। इस अवसर पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल विश्वविद्यालय के मोबाइल ऐप का शुभारंभ करेंगी तथा गंगा परिसर में नवनिर्मित बैंक के भवन का लोकार्पण करेंगी। प्रेस वार्ता में कुलसचिव कर्नल विनय कुमार परीक्षा नियंत्रक देवेंद्र प्रताप सिंह डॉ दिनेश सिंह डॉ सतीश चंद्र जैसल डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र उपस्थित रहे।

बस सेवा को हरीझंडी दिखाई

अम्बेडकर नगर ।उत्तर प्रदेश परिवहन निगम ने सोमवार को अकबरपुर से वाया अशरफ्पुर बरवांएअमसिनए बंदन पुर गोसाईगंज होते हुए लखनऊ के लिए नई बस सेवा शुरू की। जिसका शुभारंभ कटेहरी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत अशरफ्पुर बरवां बाजार मे भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रदीप सिंह बब्बू ने नारियल तोड़ कर कर और हरी झंडी दिखा कर किया उद्घाटन ।प्रदीप सिंह ने इसके लिए राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह को धन्यवाद किया ।उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के लोगों की वर्षों की यह मांग योगी की सरकार ने पूरा किया ।उन्होंने कहा कि इस नई बस सेवा से तीन क्षेत्र के लोगों कटेहरी विधानसभा क्षेत्रएअकबरपुर विधानसभा क्षेत्र और गोसाईगंज विधानसभा क्षेत्र के लोगों को लाभ मिलेगा ।उन्होंने ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार जनहित के हर उस काम को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है जो जनता की मूल जरूरत से जुड़ा हुआ है ।बब्बू ने कहा कि योगी

की प्रेरणा और परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह की प्रतिबद्धता से क्षेत्रीय लोगों द्वारा वर्षों की यह मांग पूरी हुई। इस अवसर पर क्षेत्र के लोगों ने अशरफ्पुर बरवां में सेंट्रल बैंक की एक शाखा स्थापित करने की माँग की। परिवहन विभाग के अकबरपुर डिपो के अपर क्षेत्रीय प्रबंधक सी बी राम ने बताया कि यह बस सेवा अपने निर्धारित मार्ग से सुबह 6 बजे अकबरपुर से चलकर 11 बजे तक लखनऊ आलमबाग बस स्टेशन पहुँचेगी और वापस 3 बजे लखनऊ से चलकर अवध बस डिपो होते हुए शाम 8਼30 बजे तक अकबरपुर पहुँचेगी।

स्टेशन स्तरीय क्वालिटी सर्किल सम्मेलन संपन्न

सोनभद्र। एनटीपीसी सिंगरौली शक्तिनगर में परियोजना प्रमुख राजीव अकोटकर के निर्देशन में स्टेशन स्तरीय क्वालिटी सर्किल सम्मेलन 2024 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परियोजना प्रमुख राजीव अकोटकर वं अन्य महाप्रबंधक द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर एवं एनटीपीसी गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। क्वालिटी सर्किल कार्यक्रम में एनटीपीसी कर्मचारी वर्ग में 9 टीम अनुबंध कर्मचारीकी 17 टीम एवं सीएसआर की 2 टीम द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम में निर्णायक मंडल की भूमिका में आरिफ हुसैन खान डी.के. सारस्वत विभागाध्यक्ष डी. के. सोनकर विभागाध्यक्ष द्वारा सभी प्रतिभागियों का आंकलन किया गया।

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में शामिल होंगे ग्यारह देशों के एंबेसडरः डा. उदय प्रताप

गोष्ठी 12 सितंबर से होगी आयोजित

प्रयागराज। ठाकुर हरनारायण सिंह डिग्री कॉलेज के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में ग्यारह देशों के एंबेसेडर शामिल होंगे। कार्यक्रम को लेकर कॉलेज के निदेशक डॉ उदय प्रताप सिंह ने बताया कि आगामी 12 से लेकर 14 सितंबर तक ठाकुर हरनारायण सिंह डिग्री कॉलेज की ओर से अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आयोजित होगा। अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में 11 देश के एंबेसेडर्स शामिल होंगे। जिसमें मॉरीशस फिजी इक्काडोर घाना सूरीनाम यूएई सीचेल्स लेसोथो वियतनाम उज्बेकिस्तान अरब लीग मिशन देश विदेश के बिजनेस एंड सोशल डेलीगेटस होंगे। कहा कि सेमिनार में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रोफेसर एवं शोधार्थी रहेंगे जो पर्यावरण के दस उप विषयों पर अपना पेपर प्रेजेंटस करेंगे। साथ ही ग्लोबल स्तर पर उत्पन्न विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं मानवीय मूल्य ऊर्जा संरक्षण जल संरक्षण आदि पर अपने विचार व्यक्त करेंगे और चर्चा परिचर्चा करेंगे। जो देश एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस क्षेत्र में कार्य कर रहे सोशल एक्टिविस्ट वैज्ञानिकों तथा अंतरराष्ट्रीय राष्ट्राध्यक्षों के लिए दिशा देने का कार्य करेंगे। बताया कि सेमिनार में सम्मिलित होने के लिए रजिस्ट्रेशन 14 सितंबर की सुबह 11 बजे तक और पेपर सबमिट करने की तिथि 20 सितंबर है। कहा कि यह सेमिनार छह सत्र में संपूर्ण होगा। जिसमें पहला सत्र उद्घाटन सत्र होगा दूसरा तीसरा और चौथा सत्र टेक्नीशियन का होगा। पांचवा सत्र विदेशी राजदूतों के व्याख्यान के लिए है और 14 सितंबर को शाम छह बजे से सांस्कृतिक सत्र के लिए होगा। जो इलाहाबाद मेडिकल एसोसिएशन हाल प्रयागराज निकट महाराणा प्रताप चौराहा सिविल लाइन में होगा। जिसमें मशहूर गायक पीयूष मिश्रा का गायन उड़ीसा एवं कश्मीरी नृत्य की प्रस्तुति की जाएगी। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो अखिलेश कुमार सिंह कुलपति प्रो राजेंद्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय प्रयागराज होंगे। प्रेस वार्ता में राजेश केसरवानी कालेज के उप निदेशक ठाकुर विनय प्रताप सिंह प्राचार्य अजय गोस्वामी अभिषेक ठाकुर नितेश अभिलाष केसरवानी आदि उपस्थित रहे।

इमरजेंसी में तैनात डॉक्टरों की सूची लगाएं

आयुष्मान कार्ड योजना हेतु चिन्हित प्राईवेट अस्पतालों की कराई जाये जॉच

सोनभद्र। जिला स्वास्थ्य समिति शासी निकाय की कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक दौरान जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य को निर्देशित करते हुए कहा कि जिला संयुक्त चिकित्सालय में इमरजेंसी में तैनात डॉक्टरों की सूची रोस्टर के अनुसार लगाई जाए, जांच एक्स-रे से संबंधित लगने वाले शुल्क की भी सूची लगाई जाए। समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर अनटाईड फंड खर्च का विवरण और कार्य योजना के संबंध में सामुदायिक

स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक से जानकारी ली तो कार्य योजना संबंधित पत्रावली घोरावल व चोपन सामुदायिक स्वास्थ्य के प्रभारी द्वारा ही प्रस्तुत की गई, अन्य केंद्र के प्रभारी द्वारा कोई कार्य योजना प्रस्तुत नहीं की गई, जिस पर जिलाधिकारी ने घोरावल और चोपन को छोड़कर सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी को स्पष्टीकरण जारी करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने आयुष्मान कार्ड योजना के अंतर्गत चिन्हित 19 प्राइवेट चिकित्सालयों के निरीक्षण के संबंध में संबंधित प्रभारी अधिकारी व डॉक्टर से जानकारी प्राप्त की तो निरीक्षण के सम्बन्ध में संतोषजनक उत्तर नहीं दे सके, जिस पर जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया कि आयुष्मान कार्ड योजना हेतु प्रभारी डॉक्टर द्वारा चिन्हित अस्पतालों का निरीक्षण नियमानुसार नहीं किया जाता है, तो संबंधित डॉक्टर व प्रभारी के वेतन भुगतान पर रोक लगा दी जाए। जिलाधिकारी ने उपस्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के प्रभारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि यह सुनिश्चित किया जाये कि डिलेवरी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व सब सेन्टरों पर ही हो, इस दौरान उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी व डी0पी0एम0 को निर्देशित करते हुए कहा कि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व सब सेन्टरों पर मानक के अनुरूप ए0एन0एम0 की तैनाती सुनिश्चित की जाये, जिन सब सेन्टरों पर पानी, बिजली आदि से सम्बन्धित समस्या हो, उसका शीघ्र ही

खोजे जाएंगे टीबी मरीज

मिर्जापुर। ।राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2025 तक देश को टीबी मुक्त बनाने के लिए देश भर में अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत सोमवार को जिला क्षय रोग अधिकारी डॉक्टर अनिल कुमार ओझा ने अपने कार्यालय स्थित सभागार में प्रेसवार्ता आयोजित किया। जिला क्षय रोग अधिकारी प्रेसवार्ता के दौरान बताया कि टीबी को खत्म करने के लिए एक बार फिर 9 से 20 सितम्बर तक टीबी के नये मरीजों को खोजने की जिम्मेदारी जिले में कार्यरत कर्मचारियों को सौपा गया है।। अभियान के दौरान आबादी की संख्या का 20 प्रतिशत लोगों को भी स्क्रीनिंग करने का लक्ष्य भी निर्धारित किया गया है। जांच के बाद टीबी की रिपोर्ट आने के बाद मरीजों का उपचार उपकेन्द्रों पर किया जायेगा। टीबी जांच की सुविधा मुख्यालय के अलावा जिले के 19 सामुदायिक व 53 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों होगी। इसके अलावा अभियान में 188 टीमों को लगाया गया है प्रत्येक टीम में तीन लोगो को रखा गया है। जिला कार्यक्रम समन्वयक संन्ध्या ने बताया कि जांच में दो सप्ताह से खांसी व बुखार का आना या वजन का कम होना और रात में पसीना आना जैसे लक्षण पाये जाते है। तो इन लक्षणों को नजरअंदाज न करे उनकी टीबी की जांच अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र पर अवश्य कराएं ऐसे में उनको संक्रामक बीमारियों की चपेट में आने की संभावना ज्यादा होती है। समय समय पर चिकित्सकीय सलाह जरूर लेते रहे। और हम निश्चित रूप से 2025 में देश व प्रदेश के अलावा जिले से टीबी को खत्म किया जा सकेगा।

जैपुरिया स्कूल में अभिसिंचन का किया गया भव्य आयोजन

मुगलसराय/चन्दौली। सेठ एम.आर. जैपुरिया स्कूल्स बनारस पड़ाव कैंपस में ष्अभिसिंचनष् 2024 का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर कक्षा 3 से कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों के मध्य अंतरविद्यालयी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । विद्यालय का उद्देश्य है बच्चों की रचनात्मक क्षमताओं व सृजनात्मकता को प्रेरित किया जाए एवं उनमें साहित्यिक अभिरुचि को बढ़ाया जाय द्य इस अवसर पर समस्त पूर्वांचल के श्रेष्ठ विद्यालयों से कुल 150 से ज्यादा बच्चों ने अपनी प्रतिभा का श्रेष्ठतम प्रदर्शन किया द्य इस पुनीत अवसर पर विद्यालय प्रत्येक वर्ष हिंदी साहित्य में अनवरत उत्कृष्ट योगदान देने वाले एक श्रेष्ठ साहित्यकार को ष्साहित्य सारथीष् सम्मान द्वारा सम्मानित भी करता है द्य इस वर्ष यह गौरवपूर्ण सम्मान हिंदी साहित्य अकादमी ;राष्ट्रीय कार्यकारिणी मंत्रीद्ध प्रियंका अग्निहोत्री ष्गीतष् को दिया गया । इस अवसर पर हिंदी भाषा में विविध प्रतियोगिताओं में बच्चों ने अपनि प्रतिभा का प्रदर्शन किया जैसे दृ भक्ति रस काव्यपाठएहिंदी साहित्यकारों पर आधारित काल्पनिक परिधानएश्रेष्ठ वक्तव्यएकाव्याभिव्यक्तिएकहानी वाचनएवाद.विवादएसमूह.समूह गान फेरएअंत्याक्षरएसंस्कृत श्लोक वाचन, कहानी लेखन, कविता लेखनएसुलेख लेखन एवं नाट्य लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया द्य इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों ने अपनी अद्भुत दक्षता का परिचय देकर दर्शक दीर्घा को विस्मित कर दिया और एक से बढ़कर एक श्रेष्ठ प्रदर्शन देकर प्रतिस्पर्धा स्तर को उच्च शिखर पर स्थापित कर दिया। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि प्रियंका कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि प्रियंका अग्निहोत्री श्गीतश् ने बच्चों की सराहना करते हुए कहा कि प्रतियोगिता हमें हमारे जीवन का लक्ष्य साधने में मदद करती है इसलिए हमें कभी भी प्रतियोगिताओं से पीछे नहीं हटना चाहिए। प्रतिस्पर्धा छोटी हो या बड़ीए परन्तु सारी स्पर्धाओं का लक्ष्य एक ही होता है। विद्यालय के प्रबंध निदेशक मनोज बजाज ने सभी को स्नेहसिक्त वचनों से अभिसिंचित करते हुए कहा कि हमारी इच्छा है कि आप सभी अविष्कार और सृजन का एक एक दीपक जलाये और भारत को पुनः वही प्रतिष्ठा प्राप्त कराये जो उसे सदियों से प्राप्त है।

सौभाग्य की बात है कि आप सभी को जनता के बीच रहकर सेवा का मिलता है अवसरःडीएम

गाजीपुर। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने जिला पंचायत सभागार मे लेखपाल प्रशिक्षण कार्यक्रम नवनियुक्त लेखपालों के प्रशिक्षण सत्र का मॉ सरस्वती के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन व माल्यापर्ण कर शुभारम्भ किया। जिलाधिकारी ने प्रशिक्षण सत्र में लेखपालों को संबोधित करते हुए कहा कि लेखपाल राजस्व विभाग व प्रशासन की मजबूत कड़ी हैं। उन्होंने कहा कि जनता की सेवा में लेखपालों की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने सभी लेखपालों से अपने सकारात्मक कार्यों से आम जनमानस को सहयोग प्रदान करने की अपेक्षा की ।उन्होंने कहा कि शासन.प्रशासन और समाज के हित में कार्य करने के साथ ही ऐसा कोई कार्य न करेंए जिससे शासन.प्रशासन की छवि धूमिल हो ।जिलाधिकारी ने कहा कि यह बहुत सौभाग्य की बात है कि आप सभी को जनता के बीच रहकर उनकी सेवा का अवसर प्राप्त हुआ है। बिना किसी शर्त के सम्मानपूर्वक अपनी सेवाएं दें। किसी के दबाव में आकर या प्रलोभन में पड़कर कभी कोई गलत कार्य न करें और अपनी रिपोर्ट ससमय व सही लगायेंए जिससे कि आगे की कार्यवाही तेजी से हो सके और आमजनमानस को सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिल सके।

विस चुनाव को लेकर कांग्रेस में मंथन

गाजीपुर। आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी गंभीर हो गई है, प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के निर्देश पर आज जिला कांग्रेस कमेटी की बैठक जिलाध्यक्ष सुनील राम की अध्यक्षता में कांग्रेस पार्टी के कैंप कार्यालय रजदेपुर में आहूत की गई, जिसमें यूपी कांग्रेस कमेटी के प्रदेश सचिव और गाजीपुर के प्रभारी फसाहत हुसैन बाबू मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद रहे। बैठक में आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर गहन चर्चा की गई करते हुए जिलाध्यक्ष सुनील राम ने बताया कि सभी विधान सभाओं में प्रभारियों की नियुक्ति की गई है वहीं ब्लॉक स्तर पर सभी प्रभारियों को कार्य दायित्व सौंपा गया हैए जो बूथ स्तर पर कार्यकर्ताओं के साथ बैठक कर लोगों से संपर्क कर रहे हैं हैं। बैठक में प्रदेश सचिव फसाहत हुसैन बाबू ने जिलाध्यक्ष और शहर अध्यक्ष के कार्यों की समीक्षा करते हुए तारीफकी और कहा कि शीर्ष नेतृत्व के निर्देश पर गाजीपुर की सभी सातों विधानसभा में बूथ स्तर पर कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों को जन जन तक जाकर कांग्रेस की जन नीतियों के साथ इस सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचारए गरीब मजलूमों और महिला उत्पीड़न के साथ महंगाई एक प्रमुख मुद्दा हैए इसकी चर्चा करें और जनता को ज्यादा से ज्यादा संख्या में कांग्रेस से जोड़ने का काम करें।

निलंबन बहाली सहित अन्य मांगों को लेकर लेखपालों का धरना

सकलडीहाध्चन्दौली । उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ तहसील ईकाई की ओर से पदाधिकारियों ने सोमवार को विभिन्न मांगों को लेकर अनिश्चित कालीन धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया है। लेखपालों के अनिश्चित कालीन धरना प्रदर्शन से सुबह से लेकर शाम तक तहसील पर पहुंचे ग्रामीण क्षेत्र के लोग परेशान रहे। उधर लेखपालों के हड़ताल को एसडीएम ने स्वहित के लिये धरना प्रदर्शन करने की बात कही है।लेखपाल संघ के पदाधिकारियों ने आरोप लगाया कि तहसील प्रशासन लेखपालों द्वारा जायज मांगों के लेकर बार बार अनुरोध के बाद भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। अधिकार की बात कहने पर लगातार लेखपालों के खिलाफनिलंबन की कार्रवाई की जा रही है।

कारगिल युद्ध
पाकिस्तानी संलिप्तता

कारगिल युद्ध में 25 साल तक अपनी संलिप्तता से इनकार करने वाले पाकिस्तान ने अंतत: इसे स्वीकार किया है। पाकिस्तान ने पहली बार आधिकारिक रूप से 1999 के कारगिल युद्ध में अपनी सेना की भूमिका स्वीकारी है। रक्षा दिवस के अवसर पर पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने कहा कि अनेक पाक सैनिक भारत के खिलाफ 1999 में लड़े कारगिल युद्ध में शहीद हुए। पहली बार पाकिस्तान ने इस युद्ध में अपनी सक्रिय भूमिका स्वीकारी है जो उसके भ्रामक दृष्टिकोण में आश्चर्यजनक परिवर्तन है। पहले पाकिस्तान यह कहता रहा है कि 'कारगिल आपरेशन' मुजाहिदीनों या 'स्वतंत्रता सेनानियों' तथा स्थानीय विद्रोहियों ने किया था। इस प्रकार उसने युद्ध से अपनी सैनिक अवस्थापना को दूर रखा था। लेकिन नई स्वीकारोक्ति से न केवल उसके देश के भीतर आंतरिक विमर्श बदल सकता है, बल्कि इससे भारत तथा व्यापक अंतरराष्ट्रीय समुदाय से उसके संबंध भी प्रभावित हो सकते हैं। वास्तव में भारत और सारी दुनिया पहले से ही यह जानती थी और उसे कारगिल युद्ध में जनरल मुशर्रफ के नेतृत्व में पाकिस्तानी सेना की भूमिका के बारे में जरा भी संदेह नहीं था। पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख जनरल परवेज़ मुशर्रफ ने इसकी योजना बनाई थी और इसकी जानकारी देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ को भी नहीं दी थी। मई से जुलाई, 1999 तक कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच लड़ा गया था। इसकी शुरुआत पाकिस्तानी सैनिकों और उग्रवादियों द्वारा जम्मू कश्मीर के कारगिल जिले में नियंत्रण रेखा-एलओसी पार कर भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ से हुई थी। उनका लक्ष्य महत्वपूर्ण पहाड़ियों पर

कब्जा कर भारत की उत्तरी सैनिक चौकियों तक सप्लाई रोकना था जिसमें सियाचिन ग्लेशियर भी शामिल है। भारत शुरुआत में आश्चर्यचकित हुआ, पर बाद में उसने अपने क्षेत्र पर पुन: कब्जा करने के लिए पूरी मजबूती से सैनिक कार्रवाई की। भारतीय सैनिकों ने प्रतिबद्ध ढंग से जवाबी हमला किया जिससे अंतत: पाकिस्तानी सैनिकों को पीछे हटना पड़ा। पकड़े गए पाकिस्तानी सैनिकों समेत अनेक स्वतंत्र स्रोतों और खुफिया रिपोर्टों ने संकेत दिए थे कि पाकिस्तानी सेना की नियमित यूनिटें इसमें पूरी तरह भाग ले रही हैं। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि पाकिस्तान ने इसे अब क्यों स्वीकार किया है? संभवत: यह परिवर्तन आंतरिक और बाहरी कारणों से है जिसमें विकसित होती राजनीतिक गतिशीलता, सैनिक अवस्थापना के भीतर बढ़ती पारदर्शिता तथा बदलता भू-राजनीतिक यथार्थ शामिल हैं। अपनी भूमिका स्वीकार कर पाकिस्तान संभवत: पूरा विमर्श पुन: लिखते हुए अपने सैनिक इतिहास के असहज करने वाले तथ्यों से साक्षात्कार करना चाहता है। इस स्वीकारोक्ति के पाकिस्तान, भारत और पूरे क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण परिणाम होंगे। इस आधिकारिक स्वीकृति से आंतरिक निर्णय लेने की उन प्रक्रियाओं का गहन परीक्षण होगा जिसके कारण कारगिल युद्ध हुआ था। अपनी भूमिका स्वीकार कर पाकिस्तान संभवत: भावी राजनयिक संपर्कों में विश्वास पैदा करना चाहता है। इस स्वीकारोक्ति से पाकिस्तानी सैनिक रणनीति प्रभावित होगी तथा भावी कार्रवाइयों में ज्यादा सावधानी व नियंत्रण को प्रोत्साहन मिलेगा। पाकिस्तान द्वारा अपनी सेना की संलिप्तता स्वीकार करने से कश्मीर विवाद के प्रति उसका दृष्टिकोण बदल सकता है और इसके समाधान के लिए सैनिक प्रयासों के बजाय ज्यादा राजनयिक प्रयासों को बल मिल सकता है। हालांकि, कारगिल युद्ध की दु:खद स्मृतियां रातोंरात समाप्त नहीं होंगी, पर इस स्वीकारोक्ति से ज्यादा गहन आत्मनिरीक्षण तथा भविष्य में सुलह-समझौते की संभावना पैदा हो सकती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति

वैश्विक स्तर पर जहां शक्ति संघर्ष तथा आर्थिक मंदी है, वहीं भारत में रणनीतिक सुधारों, फलते-फूलते स्टार्टअप तंत्र तथा उभरते मध्य वर्ग से इसकी आर्थिक प्रगति को काफी गति मिली है।

सुधीर हिंदवान
(लेखक, रणनीति विशेषज्ञ हैं)

वैश्विक स्तर पर जहां शक्ति संघर्ष तथा आर्थिक मंदी है, वहीं भारत में रणनीतिक सुधारों, फलते-फूलते स्टार्टअप तंत्र तथा उभरते मध्य वर्ग से इसकी आर्थिक प्रगति को काफी गति मिली है। भारत का आर्थिक परिदृश्य उल्लेखनीय दृढ़ता एवं असीम संभावनाओं से भरा है, हालांकि उसे अनेक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। वर्तमान वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही का जीडीपी डेटा अनुमानित 8 प्रतिशत वृद्धि के बजाय थोड़ी कमी के साथ 6.7 प्रतिशत की वृद्धि दर प्रदर्शित कर रहा है, पर देश इसके बावजूद विश्व अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज गति से प्रगति करने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था की यह उपलब्धि देश के निरंतर आर्थिक वृद्धि का संकेत देती है। इससे भारत वैश्विक स्तर पर आर्थिक प्रगति एवं विकास के मामले में महत्वपूर्ण पक्ष बना हुआ है। जहां दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में धीमी पड़ने के संकेत मिल रहे हैं, वहीं भारत की आर्थिक प्रगति जीवन्त व तेज बनी हुई है। लेकिन इसके बावजूद भारत सरकार के समक्ष अनेक प्रमुख चुनौतियां बनी हुई हैं। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण रोजगार के ज्यादा अवसर पैदा करना है। पिछले सालों में देश में बेरोजगार तथा आंशिक रोजगार वाले नागरिकों की संख्या बढ़ी है और तेजी से विस्तार लेते 'वैश्वीकरण' के कारण यह समस्या और गंभीर हुई है। इसके कारण एक नया युग शुरू हुआ है जिसका प्रमुख सिद्धान्त 'करो या मरो' बन गया है। इसका प्रभाव सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों तथा दुनिया भर के बिजनेसों पर पड़ा है। हालांकि, भारत का सार्वजनिक क्षेत्र भी इस प्रवृत्ति से अलग नहीं है, पर सस्ते श्रम की उपलब्धता तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश-एफडीआई प्राप्त करने के सक्रिय प्रयासों के चलते इस क्षेत्र में भी देश का भविष्य उज्जवल है।

हालांकि, शुरुआत में आर्थिक सुधारों के प्रति भारत का दृष्टिकोण बहुत सावधानी और संकोच वाला रहा, पर धीरे-धीरे सरकार ने अनेक प्रकार के विश्वास-बहाली कदम उठाए। इन पहलों से न केवल आर्थिक प्रगति को बढ़ावा मिला, बल्कि इसका लक्ष्य विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों का समतापूर्ण विकास सुनिश्चित करना भी था। भारत द्वारा विकसित सामाजिक-आर्थिक न्याय के ढांचे ने देश के भीतर और दुनिया में विश्वास पैदा करने का काम किया। भारत के निर्यातोन्मुख विशेष आर्थिक क्षेत्रों-एसईजेड में प्रगति ने भी दुनिया में भारत के प्रति विश्वास मजबूत करने में प्रमुख भूमिका निभाई। शुरुआती चरणों में विश्व व्यापार में भारत का हिस्सा केवल 0.7 प्रतिशत था, पर 2002 से 2007 के बीच देश की मध्यकालीन निर्यात रणनीति ने सकारात्मक परिणाम प्रदर्शित किए। इसके साथ ही 1991 के आर्थिक सुधारों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को काफी गति दी। यह भारत द्वारा किए 'आर्थिक उदारीकरण' का प्रारंभ था।

हालांकि, पूर्वी एशिया की कुछ अर्थव्यवस्थाओं और चीन ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का उच्च स्तर प्राप्त किया, लेकिन भारत के उत्कृष्ट कार्पोरेट प्रबंधन तथा उच्च गुणवत्ता वाली वाणिज्य-संचालित कंपनियों ने निवेश पर बेहतर लाभ देना सुनिश्चित किया। इससे देशी और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बाद में बढ़ावा मिला। भारत की सफलता उसकी बिजनेस विशेषज्ञता तथा निवेशकों द्वारा संचालित है। उन्होंने विदेशों में खासकर सूचना प्रौद्योगिकी, बायोटेक्नोलोजी, फार्मास्यूटिकल्स व स्वास्थ्यरक्षा में अपनी छाप छोड़ी। ये ऐसे क्षेत्र बन गए हैं जहां विकसित अर्थव्यवस्थाओं को आगे बढ़ने में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके साथ ही भारत की स्वदेशी उद्यमिता तथा उद्योगों ने देश में एक ऐसा माहौल पैदा किया जिससे भारत को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर अत्यधिक निर्भर उद्योगों की तुलना में काफी लाभ की स्थिति प्रदान की। चीन इसका एक प्रमुख उदाहरण है जहां निर्यातोन्मुख विनिर्माण की प्रगति मुख्यत: एफडीआई संचालित थी, लेकिन यह देश में पैदा उद्यमिता का कोई विकल्प नहीं है। दूसरी ओर भारत ने अपने देश में मजबूत आंतरिक बाजार विकसित करने पर ज्यादा ध्यान दिया।

भारत के समक्ष एक और चुनौती वित्तीय संबंधों की जटिलता रही है। भारत ने इसका सामना भी बहुत अच्छी तरह किया। उदाहरण के लिए, हालिया वर्षों में जापान को वित्तीय व्यवस्था में गड़बड़ियों के कारण गंभीर आर्थिक मुद्दों का सामना करना पड़ा जिसके कारण सक्षम अधिकारियों को वित्तीय व्यवस्थाओं की लगातार निगरानी पर जोर देना पड़ा। भारत के परिपक्व वित्तीय बाजारों और जीवन्त नियामक संस्थानों ने निवेशकों में विश्वास पैदा कर निवेशों में स्थायित्व लाने में प्रमुख भूमिका निभाई। इसके साथ ही भारत ने दुनिया के अनेक अन्य देशों की तुलना में अनेक क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन का प्रयास किया। हालांकि, बचत दरों, ढांचागत संरचनाओं तथा विनिर्माण में चीन की भूमिका नेतृत्वकारी है, पर भारत की सेवा क्षेत्र संचालित प्रगति और संस्थागत स्थायित्व की जड़ें देश के लोकतंत्र और बहुलवाद में हैं। इससे भारत पूरी दुनिया में अपनी अलग छाप छोड़ने में सफल हुआ है। भारत के आर्थिक परिदृश्य में एक खास उम्मीदों से भरी घटना हाल में स्टार्टअप की संख्या में वृद्धि है। पिछले पांच साल में देश में 10,000 से अधिक स्टार्टअप विकसित हुए हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से 100,000 से अधिक रोजगार सृजित किए हैं।

इस सफलता का श्रेय भारत सरकार की जीवन्त रणनीति को दिया जाना चाहिए जिसने ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर शहरी क्षेत्रों तक अपनी कार्रवाइयों का विस्तार कर विभिन्न नेटवर्कों को सहायता दी है। 'नेशनल असोसियेशन आफ साफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनीज़'-नैस्काम के अनुसार, इन स्टार्टअप ने रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है जिससे भविष्य में भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति संभावनायें और उज्जवल हुई हैं। विदेशी निवेशकों ने भारत की संभावनाओं को पहचान लिया है। पिछले दो दशक से अधिक समय में भारतीय शेयर बाजारों में 60 बिलियन डालर से अधिक निवेश आया है। इसके साथ ही 600 से अधिक निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजारों में व्यापार की अनुमति मांगी है। शेयर बाजारों में निवेश के इस प्रवाह से सेंसेक्स में 125 प्रतिशत वृद्धि हुई है तथा मुंबई स्टाक एक्सचेंज में 148 प्रतिशत उछाल आया है।

आईटी उद्योग में भारत की उल्लेखनीय प्रगति ने भारतीय कंपनियों के लिए विकास के नए दरवाजे खोले हैं जो अब विदेशी बाजारों में अपना तेजी से विस्तार कर रही हैं। देश की नियामक एवं नियम लागू कराने वाली संस्थाओं ने यह सुनिश्चित किया है कि विदेशी निवेश सुरक्षित हो तथा आर्थिक लेनदेन पर लगातार गहरी नजर बनी रहे। चुनौतीपूर्ण वैश्विक आर्थिक परिदृश्य के बावजूद भारत द्वारा जी20 की अध्यक्षता ने उसे एक अवसर प्रदान किया जिससे वह वैश्विक विनिर्माण में प्रमुख पक्ष तथा विभिन्न क्षेत्रों में विश्वसनीय साझीदार के रूप में उभर सकता है। जी20 देशों में सहयोग ने नई रणनीतियों के विकास का अवसर दिया है जिससे संकटग्रस्त देशों की मदद की जा सकती है तथा एक नए समावेशी विश्व समाज का निर्माण किया जा सकता है। इस सहयोग का परिणाम अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सकारात्मक परिवर्तनों के रूप में सामने आ सकता है जिससे ज्यादा सामंजस्य और सहयोग का माहौल बनेगा।

भारत ने जी20 की अध्यक्षता के अपने कार्यकाल में उल्लेखनीय वैश्विक विकास परियोजनाओं की नीव डाली है जिसमें एशिया व यूरोप के अनेक देश सहभागिता को तैयार हैं। भारत की शानदार प्रगति का श्रेय मुख्यत: उसकी असाधारण प्रतिभा तथा रणनीतिक दूरदृष्टि को दिया जाना चाहिए। लेकिन देश को अपने विकास की गति बनाए रखने के लिए सामाजिक व राजनीतिक दबावों से होकर गुजरना होगा। इन चुनौतियों का सामना कर भारत विश्व अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण संचालक शक्ति के रूप में अपनी स्थिति और मजबूत कर सकता है। भारत अपने प्रयासों से न केवल अपनी सीमाओं के भीतर, बल्कि दुनिया भर में आर्थिक प्रगति तथा समावेशी सामाजिक विकास को बढ़ावा दे सकता है।

ऋद्धि-सिद्धि के स्वामी हैं भगवान गणेश

गणेश भौतिक सृष्टि के सबसे निकट के देवता हैं, ऋद्धि और सिद्धि के स्वामी, जो माया, अवास्तविकता के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं।

अश्विनी गुरुजी
(लेखक आध्यात्मिक गुरु हैं)

भगवान गणेश ऋद्धि और सिद्धि के स्वामी हैं। ऋद्धि वह शक्ति है जो समृद्धि और प्रचुरता के लिए जिम्मेदार है - पाँच इंद्रियों से संबंधित भौतिक संपदा और विलासिता। सिद्धि आध्यात्मिक शक्तियों को संदर्भित करती है, जैसे अतिरिक्त संवेदी बोध, दिव्यदृष्टि, दिव्यश्रवण, पूर्वाभास, विचार अभिव्यक्ति आदि। गणेश का जन्म माता आदि शक्ति की गंदगी से हुआ था, क्योंकि उन्होंने स्नान किया था, जो दर्शाता है कि सृष्टि में सभी ऋद्धि और सिद्धि माँ की अभूतपूर्व शक्ति की गंदगी के कण के अलावा और कुछ नहीं हैं। गणेश भौतिक सृष्टि के सबसे करीबी देवता हैं, ऋद्धि और सिद्धि के स्वामी, जो माया, अवास्तविकता के अलावा और कुछ नहीं हैं।

वे अस्थायी हैं और जाने के लिए बाध्य हैं। अधिकांश लोग इन शक्तियों की अस्थायी प्रकृति को भूलकर अपना जीवन इनके पीछे बिता देते हैं और इस बात से बेखबर रहते हैं कि इनके परे क्या है... गणेश प्रथम देवता हैं, प्रथम पूज्य, आध्यात्मिक दुनिया के अभूतपूर्व अनुभवों की ओर पहला कदम। गणेश उस समय प्रकट हुए जब समाज में अशुद्धियाँ घुसने लगी थीं। समय के साथ-साथ जब सांसारिक इच्छाएँ सामान्य लोगों में आध्यात्मिक खोजों पर हावी होने लगीं, तो गणेश के विभिन्न पहलुओं को जगाने के लिए, भौतिक जगत में, सृष्टि की सबसे स्थूल परत में विशिष्ट इच्छाओं को पूरा करने के लिए अलग-अलग मंत्र और साधनाएँ निर्धारित की गईं।

उच्छिष्ट गणपति को वरदान देने वाले, मातृभूमि के रक्षक के रूप में या पाँच इंद्रियों पर महारत हासिल करने के लिए विशिष्ट मंत्रों के माध्यम से बुलाया जाता है। हेरम्बा गणपति का पाँच सिर वाला रूप है, जो सुनहरे रंग का है और शेर पर सवार है। इस दस भुजा वाले देवता का आह्वान निर्भयता और अपने दुश्मनों को हराने के लिए किया जाता है। महागणपति रूप धन और सुखों से मेल खाता है, जो आनंद का दाता है। लाल-सुनहरे बालगणपति को अच्छे स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य के लिए बुलाया जाता है। हल्दी रंग और पीले वस्त्रों वाले हरिद्रा गणपति समृद्धि और सुरक्षा के अग्रदूत हैं। श्वेतार्क गणपति सफ़ेद होते हैं और कहा जाता है कि वे मदार के पौधे की जड़ में मौजूद होते हैं, जो मदार की एक दुर्लभ किस्म है, जिस पर मदार के सामान्य बैंगनी फूलों के बजाय सफ़ेद फूल लगते हैं। श्वेतार्क गणपति शयन कक्ष में रखे जाने पर जीवन शक्ति, जोश, शक्ति, अध्ययन कक्ष में बुद्धि और एकाग्रता, पूजा कक्ष में पूजा करने पर आध्यात्मिक शक्ति, सौभाग्य और समृद्धि लाते हैं और घर को हर समय बुरे प्रभावों से मुक्त रखते हैं। ये साधनाएँ अत्यंत शक्तिशाली हैं। इन्हें गुरु द्वारा व्यक्ति की आवश्यकता और क्षमता के अनुसार दिया जाता है, जो स्वयं सिद्ध होते हैं और आपसे कोई शुल्क नहीं लेते हैं।

ये गुरु और शिष्य के बीच एक व्यक्तिगत संबंध हैं, जिन पर चर्चा नहीं की जानी चाहिए और न ही सामूहिक रूप से सिखाया जाना चाहिए। जब गुरु मंत्र देते हैं, तो आशीर्वाद मिलता है लेकिन फिर उस कर्म को संतुलित करना अनिवार्य है, क्योंकि हर क्रिया की समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है, हर सुख के साथ एक दर्द जुड़ा होता है, जिसके लिए गुरु रास्ता दिखाते हैं। गुरु साधक को मार्गदर्शन देते हैं कि किस मंत्र का अभ्यास करना है, कितने समय तक, सही चरण और भाव और सौना के पूरक के लिए अभ्यास करना है। मंत्र साधना के बाद मंत्र सिद्धि के लिए यज्ञ किया जाता है। गणेश की शक्ति के प्रकटीकरण के लिए अभ्यास करने के लिए सबसे सुरक्षित मंत्रों में से एक है- गं गणपतये नम: लेकिन इसे भी वांछित प्रभावों के लिए गुरु द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए।

साधना की सफलता यज्ञ अग्नि में देवता के प्रकट होने से संकेतित होती है। ध्यान आश्रम के साधक जो विभिन्न मंत्र सिद्धियों का गंभीरता से अभ्यास कर रहे हैं, उन्हें कई देवताओं के भौतिक प्रकटीकरण हुए हैं (चित्र देखें)। गणेश चतुर्थी गुरु की संध्या के तहत सिद्धि मंत्र और मंत्र दीक्षा की रात है। गणेश चतुर्थी पर विचार की अभिव्यक्ति के लिए मंत्र साधना और वैदिक यज्ञ की शक्ति का अनुभव करें।

आप की बात

भारत की प्रशंसा

संयुक्त राष्ट्रसंघ के 78वें सत्र के अध्यक्ष डेनिस फ्रांसिस ने कहा कि भारत बहुपक्षवाद का प्रतिबद्ध समर्थक रहा है और वह वैश्विक सहयोग में भी हमेशा अग्रणी रहा है। भारत सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता का महत्वाकांक्षी है। सदस्यों को इस बारे में विचार करना चाहिए कि सुरक्षा परिषद् में कौन-कौन से विकासशील देश बेहतर प्रदर्शन कर सकते है। भारत ने ग्लोबल साउथ में अन्य विकासशील देशों के साथ मिलकर अपनी विशेषज्ञता साझा करने में उन्नत विकासशील देश के रूप में प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। डेनिस फ्रांसिस ने 140 करोड़ जनसंख्या वाले इतने बड़े लोकतंत्रीय देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भी सराहना की। इस तरह दुनिया में भारत की प्रशंसा हमारे देशवासियों के लिए गर्व की बात है। लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है कि जहां विदेशों में मोदी और उनके नेतृत्व वाली सरकार के कामकाज की तारीफ़ हो रही है, वहीं हमारे देश में विपक्ष को उनके कोई काम नजर ही नहीं आते हैं। इससे लगता है कि विपक्ष के अनेक नेता मोदी का विरोध करते-करते भारत की प्रगति को अनदेखा करने लगते हैं। हालांकि, दुनिया भर में मोदी का लगातार बढ़ता कद स्वयं ही इन विपक्षियों को देश-विदेश में हास्यास्पद बनाता जा रहा है। देश की जनता असलियत समझ रही है।

- **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

वंशवादी राजनीति

भारत में लोकतंत्र है, लेकिन क्या हर कोई इसमें हिस्सा ले सकता है? शायद नहीं, क्योंकि वंशवादी राजनीति ने इसे एक पारिवारिक संपत्ति बना दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब वंशवादी राजनीति के खात्मे की बात की तो मानो कई राजनीतिक परिवारों के घर में बिजली गुल हो गई हो। आखिरकार, सत्ता पर काबिज रहना जैसे उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। अगर राजनीति में प्रवेश के लिए पिता या दादा का नाम ही पासपोर्ट है तो बाकी युवाओं के लिए विकल्प क्या बचता है? हो सकता है उन्हें सलाह दी जाए कि अच्छे से पढ़ो-लिखो और राजनीति को भूल जाओ क्योंकि इसमें जगह सिर्फ खास लोगों के लिए है। हालांकि, इसके बावजूद आम जनता के पास भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन अक्सर वह मूकदर्शक बनकर रह जाती है। हम चुनाव के समय यह नहीं सोचते कि उम्मीदवार की योग्यता क्या है, बल्कि यह देखते हैं कि उनका खानदानी नाम क्या है और फिर हम लोकतंत्र के कमजोर होने की शिकायत करते रहते हैं। युवा जोश और नई सोच के लिए राजनीति के दरवाजे अक्सर बंद ही रहते हैं। लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए वंशवाद को खत्म करना जरूरी है। यह गंभीर विमर्श का विषय है।

- **अवनीश कुमार गुप्ता,** आजमगढ़

रक्षा मंत्री का बयान

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कश्मीर घाटी में विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान पड़ोसी पीओके के कश्मीरी निवासियों से कहा कि जब स्वयं पाकिस्तान ही आपको अपने देश का नागरिक नहीं मानता है एवं गुलाम कश्मीर कहता है तब क्यों आप इतने सालों से उसके साथ हैं? इसलिए आइये एवं भारतीय कश्मीर का हिस्सा बन जाइए। हमने तो कभी आपको बेगाना नहीं कहा, जबकि ये पाकिस्तानी तो आपको हमेशा ही विदेशी नागरिक कहते रहे हैं। अत: आज भी उसके साथ बने रहने का क्या मतलब? इन दिनों तो पाकिस्तानी सेना भी आपके साथ काफी जुल्म कर रही है। भूखे प्यासे रहने से भी क्या मतलब क्योंकि पाकिस्तान आपको खाने-पीने की रसद भी नहीं दे रहा है। हमारे यहां स्वयं आपके कश्मीरी भाई आपका स्वागत करने के लिए तैयार हैं। राजनाथ सिंह के इस बयान को केवल चुनावी भाषण समझने के बजाय इसके निहितार्थों पर गौर करना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बाद राजनाथ सिंह का केन्द्रीय कैबिनेट में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसे में उनके बयान को पाक अधिकृत कश्मीर के बारे में भारत सरकार तथा भारतीय जनता पार्टी के भीतर व्याप्त भावना का स्वागत योग्य प्रकटीकरण माना जाना चाहिए।

- **एमएम राजावत,** शाजापुर

जिला न्यायपालिका

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जिला न्यायपालिका के राष्ट्रीय सम्मेलन में न्याय प्रणाली की चुनौतियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि जब तक आम लोगों को न्याय सुलभ नहीं होता, न्यायपालिका का कार्य अधूरा है। राष्ट्रपति ने देशवासियों के मन के दर्द को उठाया। आज पूरे देश में 4 करोड़ से अधिक मुकदमे लंबे समय से पेंडिंग पड़े हुए हैं और उनकी संख्या में बढ़ोतरी होती जा रही है। कुछ दिनों पूर्व भारत के प्रधान न्यायाधीश ने भी न्याय देरी से मिलने पर चिंता जाहिर की थी। इस विलंब के कारण समझ कर जिला न्यायपालिका को मजबूत कर उसका विस्तार किया जाना चाहिए। देश में बढ़ती हुई आबादी के अनुपात में न्यायालयों की संख्या में वृद्धि की जानी चाहिए तथा रिक्त पदों को जल्दी से जल्दी भरा जाना चाहिए। इसके साथ ही कई कानूनों और प्रक्रियाओं को सरल बनाना जरूरी है। जमानत संबंधी कानून का सरलीकरण भी जरूरी है। हालांकि, सरकार ने तीन नए अपराध न्याय कानून लागू कर उल्लेखनीय पहल की है, पर जमीनी स्तर पर इनका पूरी तरह क्रियान्वयन भी जरूरी है। पुलिस व जेल सुधार इसका अंग हैं।

- **सुभाष बुडावन वाला,** रतलाम

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

डीएम ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का किया शुभारंभ

अमेठी। जिलाधिकारी निशा अनंत ने आज इन्दिरा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय गौरीगंज में नवनियुक्त लेखपालों के प्रशिक्षण सत्र का मॉ सरस्वती के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलन व माल्यापर्ण कर शुभारम्भ किया। जिलाधिकारी ने प्रशिक्षण सत्र में लेखपालों को संबोधित करते हुए कहा कि लेखपाल राजस्व विभाग व प्रशासन की मजबूत कड़ी हैं। उन्होंने कहा कि जनता की सेवा में लेखपालों की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने सभी सभी लेखपालों से अपने सकारात्मक कार्यों से आमजनमानस को सहयोग प्रदान करने की अपेक्षा की। उन्होंने कहा कि शासन.प्रशासन और समाज के हित में कार्य करने के साथ ही ऐसा कोई कार्य न करेंए जिससे शासन.प्रशासन की छवि धूमिल हो। जिलाधिकारी ने कहा कि यह बहुत सौभाग्य की बात है कि आप सभी को जनता के बीच रहकर उनकी सेवा का अवसर प्राप्त हुआ है। बिना किसी शर्त के व सम्मानपूर्वक अपनी सेवाएं दें। किसी के दबाव में आकर या प्रलोभन में पड़कर कभी कोई गलत कार्य न करें और अपनी रिपोर्ट ससमय व सही लगायेंए जिससे कि आगे की कार्यवाही तेजी से हो सके और आमजनमानस को सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिल सके। जिलाधिकारी ने कहा कि प्रशिक्षण के

दौरान जो सिखाया जाए उसे पूरी मेहनत और लगन से सीखने का प्रयास करेंए अच्छा प्रदर्शन करेंए जो भी कार्य आपको दिए जाएं उसे पूरी निष्ठा, ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ निवर्हन करें। अंश निर्धारण, जमीन की पैमाइश, खसरा.खतौनी, पट्टे का सत्यापन इत्यादि को गहनता से सीखें, जिससे फील्ड में काम पूरी निष्पक्षता व मजबूती से कर सकेंगे। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि जनपद स्तर पर नव नियुक्त लेखपालों के प्रशिक्षण का कार्य एक रोस्टर के अनुसार कराया जाए इसके साथ ही बीच.बीच में उनकी परीक्षा भी लेते रहेंए जिससे उनके कार्य में पारदर्शिता लाई जा सके। बताते चले कि जनपद में कुल 76 लेखपाल नियुक्त किये गये है जिसमें प्रथम सत्र में 39 तथा द्वितीय सत्र में 37 लेखपालों का प्रशिक्षण कराया जा रहा है। इस दौरान जिलाधिकारी ने उपस्थित नवनियुक्त लेखपालों से संवाद भी किया तथा कहा कि यदि उन्हें प्रशिक्षण के दौरान किसी भी प्रकार का कोई संदेह होता है तो वह उसे सम्बन्धित से जानकारी कर कंठस्थ कर लें। जिससे कि भविष्य में उन्हें कठिनाइयों का सामना न करना पड़े। इस दौरान एडीएम (वि.रा.) अर्पित गुप्ता, एसडीएम (न्यायिक) राम केवल त्रिपाठी, तहसीलदार गौरीगंज सहित समस्त सम्बन्धित उपस्थित रहें।

11 को लगेगा रोजगार मेला, युवा उठाये लाभ

संतकबीरनगर। जिला सेवायोजन अधिकारी ने बताया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय एवं राजकीय आईटीआई, संतकबीर नगर के संयुक्त तत्वावधान मे आगामी 11, सितंबर को पूर्वान्ह 10.00 बजे से अपराह्न 03.00 बजे तक, राजकीय आईटीआई परिसर चकदहीं खलीलाबाद संत कबीर नगर में एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया है। रोजगार मेले में निजी क्षेत्र की विभिन्न कम्पनियों जैसे महक ग्रुप आफकम्पनीज, श्री बाला जी कंस्टक्शन एवं नीमशन हर्बल इण्डिया प्रा.लि. प्रतिभाग कर रही हैं। प्रतिभाग करने वाले अभ्यर्थियों की आयु 18 से 40 वर्ष तथा शैक्षिक योग्यता हाईस्कूल, स्नातक, एवं आईटीआई, कौशल विकास मिशन योजनान्तर्गत प्रशिक्षित/उत्तीर्ण होने चाहिए। रोजगार मेलें में प्रतिभाग करने के लिए सेवायोजन विभाग के वेव पोर्टल पर पंजीकृत अभ्यर्थी लॉगिन करके नियोजकों व उनके यहाँ उपलब्ध रिक्तियों के सापेक्ष आनलाईन आवेदन कर सकते हैं।

समय से पूरे किए जाएं निर्माण कार्यः आयुक्त

● निर्माणाधीन परियोजनाओं की आयुक्त ने की समीक्षा

गोंडा। आयुक्त देवीपाटन मण्डल शशि भूषण लाल ने सोमवार को आयुक्त सभागार में एक करोड़ व उससे अधिक लागत की निर्माणाधीन परियोजनाओं की समीक्षा की। मंडल में कार्यरत 13 कार्यदायी संस्थाओं के निर्माणाधीन परियोजनाओं की समीक्षा की। आयुक्त ने यूपी आरएनएसएस, उप्र राज्यसेतु निगम लि., उप्र प्रोजेक्ट कारपोरेशन लि, उप्र राजकीय निर्माण निगम लि., उप्र आवास विकास परिषद निर्माण इकाई, उप्र जल निगम, उप्र पुलिस आवास निगम लिमिटेड, उप्र राज्य निर्माण एवं श्रम विकास सहकारी संघ लि., ग्रामीण अभियंत्रण सेवा, यूपी सिडको, लोक निर्माण विभाग, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग तथा सीएनडीएस के द्वारा संचालित 65 निर्माणाधीन परियोजनाओं की गहनता पूर्वक समीक्षा की। निर्देश दिए कि एक करोड़ से ऊपर की परियोजनाओं के लिए नोडल अधिकारी की नियुक्ति की जाये तथा जिन परियोजनाओं का बजट शासन स्तर पर लंबित हो उनमें शासन से पत्राचार कर बजट मंगाकर निर्माण कार्य पूरा कराया जाए। निर्माण कार्य में गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं होना चाहिए। सभी निर्माण कार्य समय से पूरे होने चाहिए। जिन कार्यदायी संस्थाओं द्वारा लापरवाही जाएगी उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई होगी। बैठक में संयुक्त विकास आयुक्त, समस्त मुख्य विकास अधिकारी व सभी संबंधित विभागों के अधिकारी व कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

दलितों के उत्थान में कांग्रेस सदैव अग्रणीः किशोरी लाल

संवाददाता। अमेठी

जिला कांग्रेस अनुसूचित विभाग की बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में अमेठी सांसद किशोरी लाल शर्मा जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष प्रदीप सिंघल जिला अनुसूचित विभाग के जिला अध्यक्ष रजवाड़ी प्रसाद पासी सहित अमेठी संसदीय क्षेत्र के 17 ब्लॉक अध्यक्ष व वरिष्ठ अनुसूचित विभाग के पदाधिकारी उपस्थित रहे। राजीव गांधी सभागार में सांसद किशोरी लाल शर्मा ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि दलितों के उत्थान में कांग्रेस सदैव अग्रणी रही पू बसपा के नीति पर तंज कसते हुए कहा कि नेता को समाज का नेतृत्व करना चहिए सौदा नहीं मौजूद पदाधिकारियों को बताया कि कांग्रेस सर्व समाज की पार्टी है आप सब अपने समाज को सही दिशा दीजिए और कांग्रेस की नीति को घर घर तक पहुंचाएं। बैठक में

इंद्रपाल प्रभाकर, श्रीराम बौरासी, राजकुमार पासी, फूलचंद, अमरावती, अमरनाथ गौतम, दिनेश कोरी उपस्थित रहे, इससे पहले राजीव गांधी सभागार में अमेठी जिला अल्पसंख्यक अध्यक्ष सैयद हुसैन किशोरी लाल शर्मा को भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद तस्वीर भेंट किए इस अवसर पर हाजी इसरार खां जहीर अहमद गुर्जर जहीर अहमद कुरैशी, शेर अली, मो वसीम सहित अमेठी संसदीय क्षेत्र के वरिष्ठ कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

लंबित वादों का शीघ्र करें निस्तारणः नेहा शर्मा

● कर करेत्तर एवं प्रवर्तन कार्यों की जिलाधिकारी ने की समीक्षा

संवाददाता। गोंडा

जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में कर-करेत्तर एवं प्रवर्तन कार्यों को लेकर संबंधित विभागों के साथ बैठक की। जिसमें उन्होंने सभी विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि अधिक से अधिक राजस्व की वसूली की जाए। प्रवर्तन को लेकर उन्होंने कहा कि सभी विभाग प्रवर्तन की कार्रवाई को बढ़ाएं। प्रवर्तन के कार्यवाही सभी पर समान रूप से की जाए। साथ ही संगठित रूप से अपराधों पर लिप्त रहने वाले व सरकारी जमीनों पर कब्जा करने वालों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए।

डीएम ने सभी उपजिलाधिकारियों को निर्देश दिए

कि सभी लोग अपने-अपने तहसीलों में लेखपाल एवं राजस्व निरीक्षकों के द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा प्रतिदिन की जाए तथा कोर्ट में लंबित वादों के निस्तारण को प्राथमिकता के आधार पर अधिक से अधिक निस्तारित करना सुनिश्चित करें। इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जायेगी। वहीं चकबंदी अधिकारी बंदोबस्त को कड़े शब्दों में निर्देश दिए कि पुराने लंबित वादों का तत्काल सुनवाई करते हुए समय से निस्तारित करें।

बैठक में मुख्य राजस्व अधिकारी महेश प्रकाश, अपर जिलाधिकारी आलोक कुमार, उपजिलाधिकारी गोंडा सदर, मनकापुर तथा करनैलगंज, तरबगंज, अपर उपजिलाधिकारी राजीव मोहन सक्सेना, अपर उपजिलाधिकारी विश्वमित्र, डिप्टी कलेक्टर नेहा मिश्रा, समस्त तहसीलदार, नायब तहसीलदार, पीटीओ शैलेन्द्र त्रिपाठी, जिला आबकारी अधिकारी, सहित सभी संबंधित विभाग के अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

फर्राटा पंखे में संचालित करंट से बुजुर्ग की हुई मौत

ऊंचाहार। फर्राटा पंखे में संचालित हो रहे करंट की चपेट में आने से बुजुर्ग की मौत हो गई,सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा है। रईयापुर मजरे कोटिया चित्रा गाँव निवासी रामचंद्र 65 वर्ष सोमवार की दोपहर घर पर फर्राटा पंखे के प्लग को बिजली के बोर्ड में लगाकर पंखे को घुमा रहा था, इसी दौरान पंखे में संचालित हो रहे करंट की चपेट में आने से झुलस गया, आनन फानन परिजनों द्वारा उसे सीएचसी लाया गया, जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। सीएचसी अधीक्षक डॉ मनोज शुक्ल ने बताया कि मृत अवस्था में बुजुर्ग को सीएचसी लाया गया था। कोतवाल अनिल कुमार सिंह ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा गया है, अग्रिम विधिक कार्यवाई की जा रही है।

क्विक न्यूज

उद्योग व्यापार मंडल चौहान गुट लावारिश शवों का निशुल्क अंतिम संस्कार करवाने का काम करता है

रायबरेली। ऑल इंडिया उद्योग व्यापार मंडल चौहान गुट विगत 3 वर्षों से अधिक समय से जनपद में मिलने वाले लावारिश शवों का निशुल्क अंतिम संस्कार करवाने का काम करता है। रायबरेली में अब तक चौहान गुट ने 132 लावारिश शवों का निशुल्क अंतिम संस्कार करवा चुका है। 3 सितंबर 2024 को कोतवाली नगर क्षेत्र के थाना मिल एरिया अंतर्गत एक अज्ञात पुरुष का शव शारदा नहर, भटपुरवा रेलवे क्रॉसिंग के पास मिला था, जिसको लेकर संबंधित थाने की पुलिस ने उनके परिजनों की काफी खोजबीन के बाद जब परिजन नहीं मिले तो लावारिस शव को अंतिम संस्कार हेतु थाना थाना मिल एरिया रायबरेली एसआई राजेश कुमार सिंह ने

ऑल इण्डिया उद्योग व्यापार मंडल चौहान गुट प्रदेश अध्यक्ष जी सी सिंह चौहान से संपर्क किया। इसके बाद आवश्यक कार्यवाही और पोस्टमार्टम के बाद लावारिश शव को एंबुलेंस यूपी 41 जी 3815 से शहीद स्मारक मुंशीगंज स्थित बैकुंठ धाम में अंतिम संस्कार कांस्टेबल परवेंद्र कुमार, पीएनओ 192632254, थाना मिल एरिया रायबरेली की मौजूदगी में सम्मान के साथ करवाया गया। ऑल इंडिया उद्योग व्यापार मंडल चौहान गुट विगत 3 वर्षों से अधिक समय से जनपद में मिलने वाली लावारिस लाशों का निशुल्क रूप से अंतिम संस्कार करवाता है।

डीएम की अध्यक्षता में आयोजित हुई पूर्ति विभाग की समीक्षा बैठक

अमेठी। जिलाधिकारी निशा अनंत ने आज कलेक्ट्रेट सभागार में खाद्य विभाग की समीक्षा बैठक की गई। जिलाधिकारी ने जिला पूर्ति अधिकारी नीलेश उत्पल से रिक्त दुकानों की स्थिति के विषय में जानकारी प्राप्त की एवं निलंबित दुकानों को लेकर संबंधित उप जिलाधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने राशन की मॉडल शॉप के विषय में जानकारी प्राप्त की एवं संबंधित को निर्देशित करते हुए कहा कि जिनका

निर्माण कराया जा चुका है उनके संचालन की कार्यवाही करें साथ ही जो दुकान अंतिम चरण में है उनका कार्य शीघ्र पूर्ण किया जाए। जिलाधिकारी ने आधार सीडिंग एवं यूनिट सत्यापन को लेकर जिला पूर्ति अधिकारी को आवश्यक निर्देश दिए तथा पूर्ति निरीक्षकों को निर्देशित करते हुए कहा कि रेंडम आधार पर राशन की दुकानों का निरीक्षण करें तथा वहां के स्टॉक को चेक करें। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेलए जिला विकास अधिकारीए परियोजना निदेशकए समस्त खंड विकास अधिकारी तथा समस्त पूर्ति निरीक्षक एवं संबंधित अधिकारीए कर्मचारी उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने पुलिस लाइन परिसर में आवासीय निर्माणाधीन कार्य किया निरीक्षण

रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने उत्तर प्रदेश पुलिस आवास निगम लिमिटेड के अंतर्गत पुलिस लाइन परिसर में निर्माणाधीन आवासीय भवन का निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने यहां पर चल रहे कार्यों की गुणवत्ता देखी और संबंधित को निर्देशित किया कि निर्माण कार्य में तेजी लाई जाए और कार्य समय से पूरा कराया जाए। कार्य मे जो भी सामग्री प्रयोग की जा रही है उसकी गुणवत्ता का ध्यान रखा जाए। कार्य करते समय जहां पर भी

जल भराव की समस्या आ रही है उसे पहले से ही ठीक करा लिया जाए। यह आवासीय हॉस्टल 150 पुरुष पुलिस कर्मियों के लिए बनाया जा रहा है। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक अभिषेक कुमार अग्रवाल, सीडीओ अर्पित उपाध्याय सहित अन्य कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

घटतौली के विरोध में ग्रामीणों ने काटा हंगामा

लालगंज रायबरेली। क्षेत्र के रणगांव में सोमवार को ग्रामीणों ने घटतौली को लेकर कोटेदार के विरोध में जमकर हंगामा काटा। ग्रामीणों ने गांव में ही राशन की दुकान खोलकर राशन वितरण करवाने की मांग की। ग्रामीणों ने बताया कि कोटेदार राशन की खटतौली करते हैं। बताया कि उनसे अंगूठा लगवाने के बाद दो दिन बाद आने की बात कह कर बुलाया जाता है। इसके अलावा गांव की सरकारी राशन की दुकान गांव से काफी दूर है, जिसकी वजह से गांव के लोगों को सड़क पार कर राशन लेने जाना पड़ता है। जिससे आए दिन दुर्घटनाएं हो जाती हैं।

बाइक से घर जा रहे क्षेत्र पंचायत सदस्य को दबंगों ने दी जान से मारने की धमकी

ऊंचाहार। बाइक से घर जा रहे बीडीसी सदस्य को बाइक सवार दबंगों ने मारने की धमकी दी है, पीड़ित ने चार लोगों के विरुद्ध कोतवाली में तहरीर देकर कार्यवाई की मांग की है।पट्टी रहस कैथवल गांव निवासी रामराज बीडीसी सदस्य है, उसका कहना है कि रविवार की शाम वो बाइक से मदारीगंज मोड़ से घर जा रहा था,तभी चौहान का पुरवा गांव निवासी एक युवक ने तीन अन्य युवकों के साथ बाइक से उसका पीछा किया और मारने की धमकी दी।पीड़ित ने अपने ऊपर हमले की आशंका जताई है।सोमवार को पीड़ित ने एक नामजद व तीन अज्ञात लोगों के विरुद्ध तहरीर दी है।कोतवाल अनिल कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर मिली है, जांच कर आवश्यक कार्यवाई की जायेगी।

एडीजे ने जिला जेल का किया निरीक्षण, जेलर को दिया निर्देश

संतकबीरनगर। जिला जज अनिल कुमार वर्मा के निर्देशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव/अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश महेंद्र कुमार सिंह द्वारा आज जिला कारागार संत कबीर नगर का मासिक निरीक्षण किया गया। सभी बंदियों के बैरक में जाकर उनसे बात चीत की गई तथा बीमार बंदियों के स्वास्थ संबंधी हाल चाल लिए गए तथा अल्प वयस्क बंदियों के पठन पाठन हेतु की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया। जेल अधिकारियों को निर्देशित किया कि यदि कोई बंदी अपने मामले में पैरवी हेतु नि:शुल्क अधिवक्ता अथवा अन्य कोई प्रार्थना पत्र देता है तो उसका त्वरित निस्तारण कराया जाए। पाकशाला में पक रहे पकवान का भी निरीक्षण किया गया तथा जेलर को साफ-सफाई एवं गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने हेतु निर्देशित किया। साथ ही यह भी निर्देशित किया कि जिला कारागार में कोई भी प्रतिबंधित सामग्री आने ना पाए। अधीक्षक राजेश कुमार राय, जेलर रंजीत राय, डिप्टी जेलर नयन कमल सिंह, हरिकेश कुमार, गीतारानी, जेल वार्डन संदीप पांडेय, सिद्धार्थ समेत कर्मचारीगण एवं जेल में परावधिक स्वयं सेवक मौजूद रहे।

9 सितंबर से 15 सितंबर तक डायमंड जेसी सप्ताह 2024 का आयोजन

रायबरेली। जेसीआई द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी जे सी आई के 75 वर्ष पूर्ण होने पर 09 सितंबर से 15 सितंबर तक डायमंड जेसी सप्ताह 2024 का आयोजन कर रहा है जिसमें आज प्रथम दिवस का आयोजन दिनांक 09 सितंबर 2024 दिन सोमवार को शुभाषीश संस्थान, अमावा रोड,रायबरेली में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व अध्यक्ष जेसी ऋषि अग्रवाल, जेसी प्रभात श्रीवास्तव,कंचन श्रीवास्तव, पवन गुप्ता, व सप्ताह चेयरमैन जेसी रजत गुप्ता द्वारा संयुक्त रूप से अध्यक्ष जेसी रचित मुरारका, सचिव जेसी प्रभु अग्रवाल द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम अधिकारी अभिनव वर्मा द्वारा आए हुए सभी जेसी सदस्यों व उपस्थित सभी का स्वागत किया व जेसीआई रायबरेली सदस्य जेसी प्रभात श्रीवास्तव व श्री कृष्णकांत गुप्ता जी द्वारा सुभाषित संस्थान में एक

इनवर्टर व उसकी बैट्री का इंस्टॉलेशन करवाया गया । एवम् शुभाशीष संस्थान के अध्यक्ष श्री दिनेश श्रीवास्तव व श्रीमती छमा श्रीवास्तव जी को पुष्प गुच्छ व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम अधिकारी जेसी अभिनव वर्मा जी ने आए हुए सभी जेसी सदस्यों व शुभाशीष संस्थान के सभी अध्यापक, कर्मचारियों व विद्यार्थियों को धन्यवाद प्रदान किया गया स कार्यक्रम में मुख्य रूप से जेसी ऋषि अग्रवाल, जेसी प्रियंका अग्रवाल, जेसी शालिनी श्रीवास्तव, जेसी प्रभात श्रीवास्तव, कंचन श्रीवास्तव जेसी पवन गुप्ता, रजत गुप्ता, जेसी रचित मुरारका, जेसी प्रभु अग्रवाल, जेसी अभिनव वर्मा, ,जेसी संस्कार जायसवाल , जेसी सुयश जीवनानी, जेसी पियूष सिकरिया, जेसी देवांग सिकरिया, जेसी हर्षवर्धन आदि सदस्य रहे।

मार्ग दुर्घटना में बाइक सवार की मौत

मुसाफिरखाना, अमेठी। कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत मझगवां गांव के पास हाईवे पर एंबुलेंस की चपेट मे आने से बाइक सवार युवक घायल हो गया जिसे एंबुलेंस की सहायता से अस्पताल पहुंचाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।मौके पर पहुंची पुलिस ने विधिक कार्यवाही करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग पर सुल्तानपुर की तरफ से आ रही एंबुलेंस से बाइक सवार टकरा गया जिससे बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया।

दिव्यांगो को मिलेगा उपकरण, शिविर का हुआ परीक्षण

संतकबीरनगर। जिलाधिकारी महेंद्र सिंह तंवर के निर्देश के क्रम में आज समग्र शिक्षा के समेकित शिक्षा कार्यक्रम अंतर्गत दिव्यांग बच्चों को उपकरण एवं उपस्करण मापन हेतु शिविर का आयोजन जूनियर हाई स्कूल शनिचरा बाजार पौली पर किया गया। खंड शिक्षा अधिकारी अर्जुन प्रसाद, जिला समन्वयक डॉ. रजनीश बैद्यनाथ, फिजियोथैरेपिस्ट डॉ0 सुशील कुमार, एलिमको कानपुर के प्रतिनिधि के रूप में विनीत पांडेय, आईडियोलॉजिस्ट पिंटू कुमार आर डी सिंह पी एड ओ एवं डाटा एंट्री ऋतिक तिवारी ने प्रतिभाग किया। राज्य परियोजना कार्यालय के निर्देशन के क्रम में दिव्यांग बच्चों को विद्यालय तक सुगमतापूर्ण पहुंचने के उद्देश्य से ट्राई साइकिल, व्हीलचेयर, बैसाखी, कान की मशीन, ब्रेल किट, मानसिक मंद बच्चों के लिए स्पेशल मान्सिक मंदबच्चो को शिक्षण सामग्री आदि हेतु एलिमको कानपुर द्वारा चिन्हित किया गया। समाचार लिखे जाने तक 190 बच्चों का पंजीकरण किया गया था जिसमें से 75 बच्चों को पंजीकरण

दिव्यांग का परीक्षण करते सम्बन्धित।

भारत सरकार मानव संसाधन मंत्रालय की अर्जुन पोर्टल पर उपकरणों हेतु ऑनलाइन किया जा चुका है। कार्यक्रम में स्पेशल एजुकेटर वीरेंद्र कुमार चौधरी, शंभू प्रसाद, अर्जुन प्रसाद, दिलीप यादव, मोना गौतम, दुर्गेश यादव, प्रमोद उपाध्याय, जनकधारी, शिवशरण शुक्ला, आशीष दुबे, रत्नेशधर पाठक, शिवशरण शुक्ला, अमरनाथ रंजन, पवन कुमार, धर्मेंद्र चौधरी, विश्वनाथ विश्वकर्मा, जगदीश प्रसाद, आशीष दुबे, यतींद्रनाथ आर्य, अर्चना त्रिपाठी, सविता उपाध्याय, धर्मराज, तृप्ता सिंह, रंजन सहित ब्लॉक संसाधन केंद्र के लेखाकर आदर्श मणि त्रिपाठी एवं विद्यालय के प्रधानाध्यापक भूलेंद्र जी द्वारा प्रतिभाग किया गया।

खेत की रखवाली करने गए वृद्ध की संदिग्ध परिस्थितियों

मुसाफिरखाना, अमेठी। कोतवाली क्षेत्र के निजामुद्दीनपुर गांव में सिवान में खेत की रखवाली करने गए वृद्ध की संदिग्ध परिस्थितियों में शव मिलने पर हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर घटना की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। मिली जानकारी के मुताबिक निजामुद्दीनपुर गांव निवासी कल्पनाथ यादव पुत्र राम अंजोर यादव उम्र करीब 70 वर्ष रविवार की शाम को खाना खाना खाकर प्रतिदिन की भांति अपने खेत की रखवाली करने गए थे। सुबह होने पर परिजन खाना लेकर जब सिवान में बने घास फूस की झोपड़ी में पहुंचे तो कल्पनाथ यादव को मृत अवस्था में देख कर हैरान हो गए। परिजनों के साथ ही ग्रामीण भी पहुंच गए।सूचना पर पहुंचे स्थानीय कोतवाली पुलिस के प्रभारी निरीक्षक विवेक कुमार सिंह ने मय हमराही घटना स्थल का निरीक्षण करते हुए शव को पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेजवाया। पुलिस के मुताबिक मृतक के शरीर पर चोट के निशान भी मिले हैं।कोतवाल विवेक सिंह ने बताया कि घटना की जांच पड़ताल के साथ ही आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

दो दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ

● किसानों को दी जायेगी जानकारी

संतकबीरनगर। भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन वनस्पति संरक्षण, संगरोध एवं संग्रह निदेशालय के तत्वाधान में जैविक भवन, गोरखपुर द्वारा आई पी एम पर दो दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम (खरीफ 2024-25) का शुभारंभ सोमवार को कृषि भवन, संत कबीर नगर मे किया गया। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन उप निदेशक कृषि, डॉ राकेश कुमार सिंह, जिला कृषि रक्षा अधिकारी (संत कबीर नगर) डॉ0 सर्वेश कुमार यादव एवं विशिष्ट अतिथि डॉ0 बृजेश कुमार चौधरी एवं अजय दीप सिंह द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम के तकनिकी सत्र की शुरआत केंद्र के प्रभारी अधिकारी राजेंद्र कुमार द्वारा आई पी एम पर संक्षिप्त टिपन्नी द्वारा किया गया। उन्होंने मित्र कीट व शत्रु कीट के पहचान एवं उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इस सन्दर्भ में केंद्र के वैज्ञानिक कुमारी

शुभारम्भ करते जिला कृषि अधिकारी।

जयंती ने कीटनाशकों का मनुष्य पर होने वाले दुष्प्रभाव एवं आई पी एम के व्यवहारिक, यांत्रिक विधि के विषय में जानकारी दी. केंद्र की वैज्ञानिक सुश्री लेखाश्री ने जैविक विधि एवं ट्राईकोडर्मा के उत्पादन, इसके प्रयोग के विषय में विस्तृत जानकारी दी एवं फसलों में लगने वाले उकठा, जड़ सडन आदि रोगों एवं उसके प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। केंद्र की वैज्ञानिक सुश्री श्वेता श्री ने रासायनिक विधि पर व्यखायान दिया एवं कीटनशाको के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर प्रकाश डाला सइस कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिक रत्नेश मिश्रा व जटा शंकर पाण्डेय ने कृषि पारास्थितकी तंत्र के विषय में बताया साथ ही साथ राज्य सरकार के कर्मचारियों व कीटनाशक डीलरों एवं प्रगीतिशील किसान के साथ धान के खेतो में जाकर मित्र एवं शत्रु कीटो की पहचान करवाई। केंद्र के वैज्ञानिक मोनल कुमार सिंह ने भारत सरकार के एनपीएसएस ऐप के बारे में जानकारी दी .केंद्र के वैज्ञानिक जटा शंकर पाण्डेय व वरिष्ठ तकनिकी अधिकारी श्रीमती पूनम वर्मा ने केंद्र द्वारा उत्पादित विभिन्न जैव करकों के विषय में विस्तृत जानकारी दी।

आवास दिलाने के नाम पर धोखाधड़ी कर लाभार्थियों से रिश्वत लेने का मुकदमा दर्ज

● लाभार्थियों ने बरौर थाने में दर्ज कराई एफआईआर

● किसी भी व्यक्ति द्वारा आवास दिलाने के नाम पर यदि पैसे की मांग की जा रही है तो तत्काल करें सूचित

कानपुर देहात। डीएम आलोक सिंह के निर्देशन में परियोजना निदेशक वीरेंद्र सिंह ने बताया कि सीता पत्नी राजचन्द, गुड्डी पत्नी अरविन्द, सन्तोष पुत्र लल्लू प्रसाद, शंकर पुत्र महावीर आदि निवारी ग्राम बरौर, थाना बरौर, तहसील भोगनीपुर ने अपने प्रार्थना पत्र के माध्यम से 20.08.2024 को डीएम से मिल कर यह अवगत कराया कि ग्राम नवीपुर, थाना अकबरपुर, कानपुर देहात निवासी मोहित तिवारी पुत्र जयराम द्वारा षड्यन्त्र कर प्रार्थीगणों को आवास दिलाने के नाम पर धोखाधड़ी कर सीता से रूण् 10000, गुड्डी से 22000 संतोष से 12000 शंकर से 15000 करूणेन्द्र से 14000 जगदीश से 10000 एवं गीता से 22000 रूपये नकद तथा कुछ ऑनलाइन पैसे लिये इस प्रकार कुल लगभग 105000 रूपये हड़प लिये और मांगने पर या कहीं शिकायत करने पर प्रार्थीगण व उनके परिवार को जान से मारने की धमकी दी गयी है।

उक्त शिकायत की जांच खण्ड विकास अधिकारी मलासा को सौंपी गयी। जांच में शिकायतकर्ता द्वारा अपने अपने लिखित बयान में मोहित तिवारी निवासी नवीपुर, अकबरपुर को पैसे दिये जाने की बात स्वीकार की एवं मोहित तिवारी के मोबाइल नंण् 8887832883 पर किये ऑनलाइन किये कुछ ट्रान्जेक्शन का स्क्रीन शाट भी उपलब्ध कराये। मोहित तिवारी से उससे दिये पते से और न ही उसके मोबाइल के माध्यम से कोई सम्पर्क हो पाया है। डीएम के निर्देशनुसार लाभार्थीगणों द्वारा बरौर में मोहित तिवारी निवासी नवीपुरए अकबरपुरए कानपुर देहात के विरुद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करायी गयी है। वर्तमान में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण 2024.29 के अन्तर्गत आवास विहीन/कच्चे घरों में निवास करने वाले परिवारों के सर्वे का कार्य चल रहा है। यह कार्य संबंधित ग्राम के सचिव के माध्यम से किया जा रहा है। किसी भी व्यक्ति द्वारा आवास दिलाने के नाम पर यदि पैसे आदि की मांग की जा रही है तो तत्काल इसकी शिकायत विकास खण्ड पर खण्ड विकास अधिकारी से एवं जिलास्तर पर परियोजना निदेशक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण से करने का कष्ट करें।

नील गाय की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

मौदहा हमीरपुर। नीलगाय से बाइक सवार की टक्कर हो जाने पर युवक की मौत हो गई वहीं ग्रामीणों ने युवक इलाज हेतु कस्बे के सरकारी अस्पताल लेकर गए जहां चिकित्सकों ने देखते ही युवक को मृत घोषित कर दिया कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार भवानी गांव निवासी संजय 24 वर्ष पुत्र ओमना दूध बेचने का काम करता था रोज की भाति वह भवानी गांव से दूध लेकर कस्बा मौदहा दूध बेचने के लिए जाते समय भवानी गहबरा के बीच नदी के रफ्तार के साथ अचानक नीलगाय बीच सड़क में आ गई और बाइक सवार से टक्कर हो गई जिससे बाइक सवार सड़क पर गिर तड़पता रहा वहां से निकल रहे रायगीरो ने ग्रामीणों को सूचना देकर बताया आनंन.फानन परिजनों ने कस्बे के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर गए

मृतक की फाइल फोटो

जहां चिकित्सकों ने देखते ही मृत घोषित कर दिया मृतक तीन भाई एक बहन में सबसे बड़ा था दूध बेचकर परिवार का बड़ा पोषण कर रहा था मौत की खबर सुनते ही परिजनों में को राम मच गया और गांव में शोक की धार दौड़ गई मृतक के भाई अजय ने बताया सोमवार की शाम नीलगाय से टकरा जाने से भाई की मौत हो गई जिसका पोस्टमार्टम हो रहा है। वहीं कोतवाली प्रभारी राम आसरे सरोज बताया कि शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया गया है।

राजस्व की बेसिक कड़ी हैं लेखपालः सी. इन्दुमती

● डीएम ने नवनियुक्त राजस्व लेखपालों के प्रशिक्षण का किया शुभारंभ

फतेहपुर। वर्ष 2022 में नवनियुक्त/चयनित राजस्व लेखपालों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का सरदार वल्लभ भाई पटेल प्रेक्षागृह में जिलाधिकारी सी. इंदुमती ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया। जिलाधिकारी ने नवनियुक्त राजस्व लेखपालों से कहा कि आपका पद बहुत ही महत्वपूर्ण है। अपने पदेन दायित्वों का निर्वहन निष्पक्ष होकर नियमानुसार करें। उन्होंने कहा कि तकनीकी ज्ञान को सीखें जिससे कार्य को करने में काफी सहूलियत मिलेगी। नक्शा, नाप व पैमाइश आदि का कार्य अच्छे से सीख लें जिससे कार्य करने में कोई कठिनाई न आए। प्रशिक्षण इसलिए कराया जाता है कि कार्य करने की बेसिक चीजो की जानकारी सही से हो सके जिससे दायित्वों का निर्वहन करने में कोई समस्या न आए। उन्होंने राजस्व संहिता के अंतर्गत धारा-24, 116, 38, 67 आदि पर प्रकाश डाला और नवनियुक्त राजस्व लेखपालों से संवाद भी किया। मुख्य विकास अधिकारी पवन कुमार मीना ने राजस्व लेखपालों के कार्यों पर प्रकाश डाला। प्रधानाचार्य लेखपाल प्रशिक्षण विद्यालय/तहसीलदार सदर विजय प्रताप सिंह ने नवनियुक्त राजस्व लेखपालों को प्रशिक्षण में उनके कार्यों को विस्तार से बिंदुवार बताय प्रभारी अधिकारी लेखपाल प्रशिक्षण विद्यालय/अपर जिलाधिकारी अविनाश त्रिपाठी ने प्रशिक्षण में डीएम व सीडीओ के मार्गदर्शन व सारगर्भित उद्बोधन के लिए धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) धीरेन्द्र प्रताप, उप जिलाधिकारी सदर, बिंदकी, खागा, प्रशिक्षण के नोडल अधिकारी, पर्यवेक्षक, अपर उप जिलाधिकारी अभिनीत कुमार, समस्त तहसीलदार, नवनियुक्त राजस्व लेखपाल उपस्थित रहे।

तीस बीघा आरक्षित जमीन पर अतिक्रमण, शासन से शिकायत

फतेहपुर। नगर पालिका परिषद सदर के मोहल्ला खंभापुर में तालाब, खलिहान, पशुचर, वृक्षारोपण एवं खेल के मैदान आदि की लगभग 30 बीघा आरक्षित जमीन पर दबंगों ने इमारतें खड़ी करके अतिक्रमण कर रखा है। जिसकी शिकायत शासन स्तर पर की गई है। शिकायतकर्ता नरेंद्र श्रीवास्तव ने शासन को भेजे गए प्रार्थना पत्र में बताया कि राजस्व अभिलेखों में नगर पालिका परिषद के मोहल्ला खंभापुर में तालाबी खाता संख्या 00157 के चार गाटा में क्रमशः गाटा संख्या 15 रकबा 0.1620 हे., गाटा संख्या 25 रकबा 0.9310 हे. गाटा संख्या 142 रकबा, 0.5180 हे., गाटा संख्या 183 रकबा 0.1130 हे. कुल रकबा लगभग 1.724 हे. है। खलिहान खाता संख्या 00161 गाटा संख्या 200 रकबा 0.7930 हे. एवं गाटा संख्या 204 रकबा 0.4050 हे. कुल रकबा 1.158 हेक्टेयर पशुचर खाता संख्या 00154 गाटा संख्या 183 रकबा 0.4050 हेक्टेयर गाटा संख्या 230 रकबा 0.2190 हेक्टेयर, गाटा संख्या 281 रकबा 0.4690 कुल रकबा 1.093 वृक्षारोपण खाता संख्या 00153 गाटा संख्या 208 रकबा 0.7430 हेक्टेयर वही खेल का मैदान खाता संख्या 00163 गाटा संख्या 253 रकबा 0.2020 हेक्टेयर सरकारी आरक्षित जमीनों का कुल रकबा 4.9600 हेक्टेयर यानी लगभग 30 बीघा है जिसे मोहल्ले के ही दबंग किस्म के लोग राजस्व कर्मचारी एवं अधिकारियों की मिलीभगत से घरों का निर्माण करा कर अतिक्रमण कर लिए हैं। जिससे कागजों तक सीमित तालाब, खलिहान, पशुचर, वृक्षारोपण एवं खेलकूद के मैदान की जमीन में विकसित आबादी लोगों का जीना दुश्वार कर दिया है। उन्होंने शिकायती पत्र में कहा कि खंभापुर मोहल्ले के उपरोक्त अतिक्रमित लगभग 30 बीघा जमीन को अतिक्रमण मुक्त कराकर उक्त आरक्षित भूमि का वास्तविक स्वरूप में लाकर विकसित किया जाए।

एंटी करप्शन टीम ने लोनिवि के जेई को दस हजार की रिश्वत लेते हुये दबोचा

हमीरपुर। हमीरपुर जिले के स्थानीय लोनिवि परिसर में सोमबार को ठेकेदार द्वारा दस हजार रुपये रिश्वत लेते हुये एंटी करप्शन टीम बांदा ने रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया है। इस कार्यवाही से कर्मियो में हडकंप मच गया है। लोनिवि खंड दो का अवर अभियंता (जेई) रमेश गुप्ता नगर पंचायत सुमेरपुर में संबद्ध था, सुमेरपुर निवासी ठेकेदार ने विकास कार्य कराने के बाद सिक्योरिटी निकालने के लिये ठेकेदार को कई महीनों से घुमा रहा था। ठेकेदार ने पुलिस को बताया कि उसने इस मामले की शिकायत 29 अगस्त को नगर पालिका सुमेरपुर के ईओ से की थी,तीन सितम्बर को नगर पंचायत का लिपिक सिक्योरिटी निकासी को लेकर जेई से रिपोर्ट मांगी थी। सिक्योरिटी निकलवाने को लेकर अवर अभियंता से बीस हजार रुपये मांगे थे। बगैर कमीशन लिये जेई सिक्योरिटी निकालने को तैयार नही था. ठेकेदार ने छह सितम्बर को इस मामले की

पुलिस की गिरफ्त में जेई

शिकायत एंटी करप्शन टीम बांदा से की थी। टीम ने कमीशन खोर अवर अभियंता को दबोचने का ताना बाना बुना। ठेकेदार ने बताया कि जेई को दस हजार रुपये पहले देने की बात कही और वह मान गया। दो बजे टीम ने रुपये लेते जेगी रमेश गुप्ता को दबोच लिया और कोतवाली हमीरपुर में लिखापढ़ी कर जेई व ठेकेदार को अपने साथ बादा ले गयीहै। इस कार्यवाही से लोनिवि मेंहड़कंप मच गया है।

हर ठेकेदार को किया जाता है परेशान एमआई के हाल सबसे बद्तर

हमीरपुर। ठेकेदारों की सिक्योरिटी वापस करने में हर कार्यदायी संस्था मे विवाद होता रहता है। नियमानुसार कोई काम संपन्न होने के बाद उसमे जो दस फीसदी सिक्योरिटी जमा करायी जाती है उसे विभाग के एक्शियन को अपने आप सिक्योरिटी वापस करने का शासनादेश है मगर जब तक ठेके दार से एक्शियन पैसा नही ले लेता है तब तक उसे सिक्योरिटी वापस नही करता है यही नही सबसे ज्यादा खराब स्थिति लघुसिचाई विभाग की बतायी जाती है यहा पर पांच साल व्यतीत जाने के बाद करीब आधा दर्जन ठेकेदारों की सिक्योरिटी वापस नही की गयी है। यदि जांच करा ली जाये तो हर कार्यदायी संस्था के एक्शियन सिक्योरिटी के नाम पर ठेकेदारों को प्रताड़ित करते है। बहुत ही जल्द ही इसी प्रकार की पुनरावृत्ति लघु सिचाई विभाग में होने वाली है ठेकेदारों ने पूरा ताना बाना तैयार कर लिया है। केवल बाउन्ड्री के बाहर गेंद जाने का इंतजार किया जा रहा है।

खराब कन्टेनर में कन्टेनर ने मारी टक्कर मैकेनिक की मौत

फतेहपुर। हुसैनगंज थाना क्षेत्र के चंदनापुर गांव निवासी राम शिरोमणि का 40 वर्षीय पुत्र राजेश कुमार ट्रक मैकेनिक है और लोधीगंज के समीप कारखाना खोले है। बताते हैं कि रात नौ बजे ओवर ब्रिज के ऊपर कन्टेनर बिगड़ जाने पर अपने साथी रईस पुत्र मदार बक्श 30 वर्ष निवासी पीरनपुर थाना कोतवाली सदर को साथ लेकर कन्टेनर को ठीक कर रहा था। इसी दौरान सामने से तेज रफ्तार आ रहे कन्टेनर ने टक्कर मार दिया जिससे खराब कन्टेनर बैक हो गया जिसकी चपेट में आकर राजेश की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। वहीं रईस गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद भाग रहे चालक को पुलिस ने वाहन सहित हिरासत में ले लिया है। उधर घायल को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय लाया गया जहां उसकी हालत गंभीर देखते हुए कानपुर मेडिकल कालेज के लिए रेफर कर दिया जहां वह जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहा है।

क्विक न्यूज

अपर एसपी और दो क्षेत्राधिकारियों समेत करीब तीन दर्जन पीपीएस अफसर इधर से उधर

बांदा। उत्तर प्रदेश शासन की तबादला एक्सप्रेस एक बार फिर पर्याटा भरने लगी है। बांदा जिले के अपर एसपी और दो क्षेत्राधिकारियों समेत करीब तीन दर्जन पीपीएस अफसर इधर से उधर किए गए हैं। शासन स्तर से बांदा के अपर एसपी लक्ष्मी निवास मिश्रा का तबादला भ्रष्टाचार निवारण संगठन लखनऊ के लिए कर दिया गया है। बता दें कि अपर एसपी लक्ष्मी मिश्र बांदा जनपद में करीब तीन साल से तैनात थे। जबकि बरेली में अपर पुलिस अधीक्षक यातायात रहे शिवराज को यहां का अपर पुलिस अधीक्षक बनाया गया है। फतेहपुर जनपद के मूल निवासी शिवराज 2001 बैच के पीपीएस अफसर हैं। शिवराज ने सिविल इंजीनियर से बैचलर आफइंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। आपको बताते चलें कि अपर पुलिस अधीक्षक बांदा शिवराज साइबर क्राइम पर दो बड़ी.बड़ी बुक्स लिखी है वह बुक्स बड़ी ही शिक्षाप्रद है किताबों को सभी को पढ़ना चाहिए आखिर साइबर क्राइम क्या है क्राइम को कैसे कंट्रोल किया जाए कैसे इन चीजों से बचा जाए आदि का उल्लेख किया गया है। अपर पुलिस अधीक्षक शिवराज जी का बताना है की मैं बरेली में यातायात व्यवस्था बड़ी ठीक.ठाक किया था बांदा में भी ऐसा लगता है कि इसे भी एक सिस्टमैटिक तरीके से करना पड़ेगा जिससे जाम से बांदा की जनता को निजात मिल सके।

ट्रैक्टर ट्राली पलटने से चाचा की दब हुई मौत, भतीजा उरई रेफर

राठ (हमीरपुर)। पनवाड़ी मार्ग स्थित बसेला सैदपुर के बीच ट्राली अनियंत्रित होकर सड़क पर पलट गई। इस हादसे में ट्राली में सवार चाचा की मौत हो गई। जबकि भतीजा गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को इलाज के लिए सीएचसी ले जाया गया। जहां चिकित्सक ने मेडिकल कालेज उरई रेफर कर दिया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। महोबकंठ थाने के दिदवारा गांव निवासी चमन ने बताया कि उसका बड़ा भाई 32 वर्षीय अमर सिंह पटेल पुत्र लक्ष्मण पारिवारिक भतीजा 21 वर्षीय प्रवेंद्र पुत्र हरी सिंह गांव के प्रताप सिंह का ट्रैक्टर भाड़े से लेकर राठ गेंहूए मटर गल्ला मंडी में बेचने आ रहे थे। तभी पनवाड़ी मार्ग स्थित बसेला सैदपुर गांव के बीच ट्रैक्टर की ट्राली अनियंत्रित होकर पलट गई। वहां मौजूद राहगीरों ने आनन.फानन में एंबुलेंस से सीएचसी ले गए। जहां चिकित्सक ने उसके भाई अमर सिंह को मृत घोषित कर दिया। जबकि प्रवेंद्र की हालत गंभीर होने पर डॉ अखिलेश सिंह ने मेडिकल कालेज उरई रेफर कर दिया है। मृतक के भाई ने बताया कि उसकी मां सोमवती के नाम दस बीघा जमीन है। उसका भाई खेती व मजदूरी कर परिवार का भरण.पोषण करता था। मृतक अपने पीछे छह वर्षीय पुत्र आरूद्ध को रोता बिलखता छोड़ गया है। पति की मौत पर पत्नी पूजा का रो रोकर बुरा हाल है।

पूरे शहर में इलेक्ट्रॉनिक ट्रैफिक सिग्नल के इशारे पर चलेंगे वाहन

फर्रुखाबाद। महानगरों की तर्ज पर अब शहर की सड़कों पर भी इलेक्ट्रॉनिक ट्रैफिक सिग्नल के इशारे पर वाहन चलेंगे। नगर में पहला ऑटोमेटिक सिग्नल लगाया जा रहें हैं। जल्द इसे संचालित भी किया जाएगा। शहर के लाल दरवाजा, त्रिपोलिया चौक व पक्केहगढ चौराहे पर लगभग 41 लाख की लागत से इलेक्ट्रॉनिक ट्रैफिक सिग्नल नगर पालिका फर्रुखाबाद के द्वारा लगाये जा रहें हैं। ट्रैफिक सिग्नल से यातायात का संचालन होगा। जिससे जाम की समस्या से काफी निजात मिलेगी। यातायात पुलिस का मानना है कि इन चौराहों पर ट्रैफिक सिग्नल लगने के बाद लोगों को जाम से राहत मिलेगा और परेशान नहीं होना पड़ेगा। पालिकाध्यक्ष पति मनोज अग्रवाल नें बताया कि लगभग 41 लाख की लागत से तीन जगह ट्रैफिक सिग्नल लगाये जा रहें है। जल्द तीनों का लोकार्पण किया जायेगा।

अनियंत्रित बाइक गिरने से तीन गंभीर, रेफर

फतेहपुर। हथगाम थाना क्षेत्र के नगराहा सरांय गांव निवासी विजय शंकर का 25 वर्षीय पुत्र रोशन अपनी 22 वर्षीय पत्नी शिवांशी और बनवारी के 18 वर्षीय पुत्र आशीष को बाइक पर बैठाकर रिश्तेदारी में हुसैनगंज थाना क्षेत्र के मकनपुर गांव गया था। वापस घर लौटते समय छिवलहा मोड के समीप बाइक मोडते समय अनियंत्रित होकर गिर गई। बाइक पर सवार तीनों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना पर पहुंची सरकारी 108 एम्बुलेन्स ने सभी को इलाज के लिए हुसैनगंज सीएचसी पहुंचाया। जहां से सभी को जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया।

संदिग्ध हालत में फांसी लगाकर दी जान

फतेहपुर। चांदपुर थाना क्षेत्र के ग्राम गौरी औरा निवासी अब्दुल हमीद के पुत्र लईक ने सोमवार की सुबह घर के अंदर कमरे में पंखे में रस्सी का फंदा डाल फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। परिजनों की जब नजर पड़ी तो घर में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया जहां मौजूद मृतक के पिता ने पुत्र के आत्महत्या करने का कारण अज्ञात बताया है।

डीएम की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न

बाँदा। जिलाधिकारी नगेन्द्र प्रताप की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी ईद.ए.मिलाद/बाराबफात व गणेश महोत्सव आदि त्यौहारों को शान्तिपूर्ण एवं कुशलता पूर्वक तथा आपसी भाईचारे एवं सामाजिक सौहार्द के साथ मनाये जाने के सम्बन्ध में जिला शान्ति समिति की बैठक सम्पन्न हुई। डीएम ने कहा कि परम्परागत रूप से जो कार्यक्रम व जुलूस आदि आयोजित किये जाते रहे हैंए उसी अनुरूप शान्तिपूर्णढंग से कार्यक्रम आयोजित किये जायें। उन्होंने पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारियों को निर्देश दिये कि जुलूस के मार्गों का निरीक्षण करते हुए आवश्यक व्यवस्थाओं विद्युत के तारों को ठीक करने तथा सड़क की मरम्मत कराये जाने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका को साफसफाई की समुचित व्यवस्था किये जाने तथा स्ट्रीट लाइट ठीक कराये जाने एवं आवारा पशुओं को बन्द कराने के निर्देश दिये।

टीएसआई ने मानक विहीन स्कूल वाहनों पर कसी नकेल

कन्नौज। जनपद के छिबरामऊ में प्रायः देखने में आ रहा है कि स्कूल के प्रबंधक/प्राचार्य द्वारा स्कूली बच्चों को प्राइवेट वाहनों से लाने लेजाने की कार्रवाई कराई जा रही है। जिसके चलते सोमवार को टीएसआई अरशद अली ने स्कूली बसों की फिटनेस, बीमा और ड्राइविंग लाइसेंस (डीएल) व अन्य कागज़ों इत्यादि की जांच की। सोमवार को टीएसआई अरशद द्वारा वाहन चालकों को निर्धारित गति सीमा में ही वाहन चलाने के निर्देश दिए गए।

स्कूली प्रायवेट वाहन की जॉच करते टीएसआई अरशद अली।

इस अभियान के तहत दोषी पाए गए कई स्कूलों के वाहनों पर चालान की कार्रवाई की गई। जांच के दौरान, टीएसआई अरशद ने स्कूली बसों के सेफ्टी मेजर्स की भी जांच की और यह सुनिश्चित किया कि सभी वाहनों में आवश्यक सुरक्षा मानकों का पालन हो रहा है। इस अभियान का उद्देश्य बच्चों की सुरक्षा को सुनिश्चित करना और स्कूली बसों की स्थिति को मानकों के अनुसार बनाए रखना है। यातायात पुलिस द्वारा की गई इस कार्रवाई से स्कूल प्रशासन और बस संचालकों को महत्वपूर्ण संदेश मिला है कि वे यातायात नियमों और सुरक्षा मानकों का पालन करें।

भाजपा विधायक सुशील शाक्य बौद्ध महोत्सव का करेंगे उद्घाटन 16, 17 सितम्बर को

फर्रुखाबाद। संकिसा में 16,17 अक्टूबर को आयोजित बौद्ध महोत्सव का उद्घाटन भाजपा विधायक सुशील शाक्य करेंगे। आज धम्मालोंको बुद्ध विहार में सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष कर्मवीर शाक्य की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिसमें सर्व सम्मति से अनेकों निर्णय लिए गए। महोत्सव के संयोजक व संरक्षक कर्मवीर शाक्य व विधायक सुशील शाक्य होंगे। सांसद देवेश शाक्य उर्फ बिल्लू, बौद्ध गुरु डॉ भंते धम्मपाल थैरो, नागेंद्र शाक्य व अघौनापुर के सुरेश चंद्र को महोत्सव का सह संयोजक बनाया गया।16 अक्टूबर को दोपहर 12 बजे भाजपा विधायक सुशील शाक्य टीन शेड के सभागार में महोत्सव का उद्घाटन करेंगे। प्रमुख वक्ताओं में सांसद देवेश शाक्य उर्फ बिल्लू, सांसद चंद्रशेखर रावण, पूर्व स्वामी प्रसाद मौर्य एवं प्रोफेसर लक्ष्मण यादव के नाम तय किए गए। 16 अक्टूबर को रात 11 बजे से सुबह 4 बजे तक गीतों भरी शाम व नाटकों का आयोजन किया जाएगा।

भिक्षु सम्मेलन का संचालन भिक्षु धम्मपाल थैरो व भिक्षु धम्म कीर्ति करेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के संचालन की जिम्मेदारी श्याम सुंदर बौद्ध को दी गई। 17 अक्टूबर को सुबह 7 बजे धम्मालोंको बुद्ध विहार से धम्म यात्रा बौद्ध स्तूप के लिए रवाना होगी। सुबह 10.30 के बाद मुख्य पंडाल में कार्यक्रमों की शुरुआत होगी। दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक भिक्षु सम्मेलन का आयोजन होगा। इसी दौरान भिक्षुओं को भोजन दान किया जाएगा। मंच के संचालन की जिम्मेदारी सह संयोजक नागेंद्र शाक्य एवं प्रधान अनंगपाल कुशवाहा को सौंपी गई।

बौद्ध महोत्सव आयोजन समिति के पदाधिकारियों को 16 अक्टूबर को सुबह 10 बजे कार्यक्रम स्थल पहुंचना होगा। जो 18 अक्टूबर को सुबह 10 बजे के बाद ही अपने घरों के लिए रवाना होंगे। यदि कोई सदस्य पूर्व में चला जाता है तो उसको अगले कार्यक्रम में कोई जिम्मेदारी नहीं दी जाएगी। बैठक में एटा के सांसद देवेश शाक्य उर्फ बिल्लू को आमंत्रित किया गया था जिनके स्वागत की भी तैयारी की गई थी। ऐन वक्त पर उन्होंने कार्यक्रम में आने से मना कर दिया। सांसद शाक्य की गैर मौजूदगी में उन्हें महोत्सव का सहसंयोजक बनाया गया। दशकों से महोत्सव का संचालन करने वाले शिवशरन शाक्य का इस वार पत्ता साफ कर दिया गया। महोत्सव के जिम्मेदार लोग 16 अक्टूबर को सुबह ही चले जाते हैं। बैठक में आरोप प्रत्यारोप के कारण विवाद की स्थिति रही। बैठक में डा धर्मपाल थैरो, नागेंद्र शाक्य प्रबंधक राहुल शाक्य उपप्रबंधक रघुवीर शाक्य डॉ देवेश शाक्य सुधीर शाक्य एडवोकेट आदि लोग मौजूद रहे। महोत्सव आयोजन समिति की अगली बैठक 29 सितंबर को बुद्ध विहार में होगी।

खीरी में नवनियुक्त 122 लेखपालों की ट्रेनिंग शुरू, डीएम ने किया शुभारंभ

● राजस्व कार्यों में लेखपाल महत्वपूर्ण कड़ीः जिलाधिकारी

लखीमपुर खीरी। जनपद खीरी में सोमवार को नवनियुक्त लेखपालों की राजस्व कार्यों की ट्रेनिंग शुरू हुई। प्रशिक्षण केंद्र जीआईसी में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने एडीएम संजय कुमार सिंह, एसडीएम सदर अश्विनी कुमार सिंह के साथ मां सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर और दीप जलाकर ट्रेनिंग का शुभारंभ किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने नवनियुक्त लेखपालों को उनके जीवन में इस नई शुरुआत की कामयाबी के लिए शुभकामनाएं दीं। कहा कि वह स्वयं सप्ताह में एक बार प्रशिक्षण कार्यक्रम में मौजूद रहकर नवनियुक्त लेखपालों द्वारा हासिल किये जा रहे प्रशिक्षण के बारे में फीड बैक लेगी। उन्होंने लेखपालों को राजस्व से संबंधित उनके कार्यकलापों और जिम्मेदारियों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पूरे लगन से प्रशिक्षण हासिल करें ताकि अपनी ड्यूटी के दौरान किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पडे।

डीएम ने कहा कि लेखपाल राजस्व सेवा की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। आज लेखपाल के दायित्व काफी बढ़ गए हैं। इसलिए नवनियुक्त सभी लेखपाल इस सेवा को जनसेवा का ध्येय बनाकर अपने दायित्वों को पूरी निष्ठा, मेहनत और ईमानदारी से निर्वहन करने का संकल्प लें। तभी हम जनता की समस्याओं का समाधान करने के साथ ही शासन की मंशा पर खरे उतर सकते हैं।

एडीएम संजय कुमार सिंह ने कहा कि सभी नए लेखपालों को फील्ड की बारीकियों से अवगत कराने के लिए ट्रेनिंग दी जा रही है। ट्रेनिंग के जरिए नवचयनित लेखपाल राजस्व विभाग के नियम कानून के साथ ही फील्ड का ज्ञान प्राप्त करेंगे। राजस्व का कार्य अपने आप मे अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य के ससमय निष्पादन के प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने नवचयनित लेखपालों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना भी की। कार्यक्रम के अंत में उप जिलाधिकारी सदर अश्विनी कुमार सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

बताते चलें कि जिले में 122 नवनियुक्त लेखपालों की 02 बैच में ट्रेनिंग शुरू हुई है। पहले बैच के 61 लेखपाल प्रशिक्षण केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इसके बाद वह फील्ड में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। वही दूसरे बैच के 61 लेखपालो का फील्ड में आज से ही प्रशिक्षण शुरू हुआ है। इसके बाद वह प्रशिक्षण केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। इस दौरान उप जिलाधिकारी सदर अश्विनी कुमार सिंह, जीआईसी प्रधानाचार्य डॉ जगत प्रकाश सिंह, सहायक भूलेख अधिकारी अवधनरेश सिंह, नायब तहसीलदार सुनील कुमार, दिनेश कुमार, सुरभि गौतम आदि राजस्व कार्मिक मौजूद है।

भाकियू की बैठक में जोनल अध्यक्ष ने की समीक्षा

गुरसहायगंज (कन्नौज)। भारतीय किसान यूनियन की समीक्षा बैठक में जोनल अध्यक्ष बैजनाथ अवस्थी का जिलाध्यक्ष शमीम सिद्दीकी के नेतृत्व में जोरदार स्वागत किया गया। समीक्षा बैठक में जोनल अध्यक्ष ने बिंदु बार चर्चा के उपरांत लापरवाह पदाधिकारियों की क्लास ली उन्होंने ब्लॉक तहसील एवं जिले के पदाधिकारियों को संगठन के प्रति निष्ठा एवं ईमानदारी का पाठ पढ़ाया। सोमवार को आयोजित भाकियू टिकैत की समीक्षा बैठक में जोनल अध्यक्ष बैजनाथ अवस्थी ने अपने संबोधन में कहा कि प्रदेश एवं केंद्र सरकार किसानों को कभी सब्सिडी के नाम पर कभी एमएसपी के नाम पर कभी बिजली माफी को लेकर गुमराह करती चली आ रही है। राष्ट्रीय नेतृत्व बहुत जल्द ही केंद्र एवं प्रदेश सरकारों के विरुद्ध आंदोलन की रूपरेखा तय कर रही है। जिलाध्यक्ष शमीम सिद्दीकी ने कहा कि हम उस देश के किसान हैं जहां का किसान अपना पसीना बहाकर अपने खेतों में सोना पैदा कर सकता है।

एसीएफके माध्यम से जिले भर में टीबी रोगियों को खोजेगा स्वास्थ्य विभागः सीएमओ

लखीमपुर खीरी। शासन के निर्देश पर एक्टिव केस फाइन्डिग एसीएफ कार्यक्रम 09 सितम्बर दिन सोमवार शुरू हो गया है। जिसके अन्तर्गत 10 दिनों तक चलने वाले अभियान में टीम बनाकर टीबी के रोगियों की खोज की जायेगी। अभियान को सफल बनाने के लिए जिला टीबी अस्पताल सहित सभी सीएचसी के अन्तर्गत टीमों का गठन भी कर दिया गया है। सीएमओ डॉ सन्तोष गुप्ता ने बताया कि एक्टिव केस फाइन्डिग कैम्पेन के लिए जनपद में लक्षित क्षेत्र चयनित किये गये है, जिनमें मलीन बस्तियॉ, हाई रिस्क जनसंख्या वाले क्षेत्रए अनाथालय, वृद्धाआश्रम, नारी निकेतनए बाल संरक्षण गृह, मदरसा, नवोदय विद्यालय, कारागार, चिन्हित समूह (सब्जी मण्डी, फल मण्डी व लेवर मार्केट) निर्माणाधीन प्रोजेक्ट के स्थान ईट भत्ते, स्टोन क्रेशर, खदान सहित साप्ताहिक मार्केट बाजार इत्यादि शामिल हैं। जिनकी रिपोर्ट

निक्षय पोर्टल पर भी अपलोड की जायेगी। जनपद में सम्पूर्ण कार्यक्रम 20 सितम्बर तक जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ अनिल कुमार गुप्ता के नेतृत्तव में चलाया जायेगा। जनपद में संचालित कार्यक्रम में 289 टीम में लगाई गई हैं। मॉनिटरिंग के लिए 58 सुपरवाइजर व 22 सेक्टर सुपरवाइजर लगाए गए। वहीं जिला स्तरीय मानिटरिंग के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों के अनुसार एसीएमओ व डिप्टीसीएमओ को मानीटरिंग की जिम्मेदारी सौपी गयी है। जिसमें एसीएमओ डॉ अनिल कुमार गुप्ता को पसंगवा, मोहम्मदी, बाकेगंज व गोला की मानीटरिंग का जिम्मा सौपा गया है तो वहीं एसीएमओ डॉ सत्य प्रकाश मिश्रा को रमियाबेहड़, धौरहरा नकहा व ईसानगर, डिप्टी सीएमओ डॉ लाल जी पासी को बिजुआ व फूलबेहड, डिप्टीसीएमओ डॉ अमितेश दत्त द्विवेदी को लखीमपुर नगर क्षेत्र व फरधानए डिप्टी सीएमओ डॉ प्रमोद कुमार को बेहजम व मितौली, डिप्टी सीएमओ डॉ अमित कुमार सिह को पलिया व निधासन की मानीटरिंग दी गयी है। सभी सीएचसी से निर्धारित प्रारूप पर मुख्यालय को रिपोर्टिंग की जायेगी जिसके बाद यह रिपोर्ट शासन को भेजी जायेगी।

क्या हैं टीबी के लक्षण

02 सप्ताह से अधिक खासीए 02 सप्ताह से अधिक बुखार बल्गम से खून आना ए भूख में कमी ए वनज का कम होनाए रात में पसीना आनाए गले में गाठ का होनाए महिलाओं में बाझपन की समस्या इत्यादि शामिल है।

प्रधानमंत्री मोदी पर टिप्पणी

मानहानि मामले में थरूर की याचिका पर विचार करेगा कोर्ट

नई दिल्ली। (भाषा) उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली उच्च न्यायालय के एक फैसले के खिलाफ कांग्रेस सांसद शशि थरूर की याचिका को मंगलवार को सूचीबद्ध करने पर विचार किए जाने पर सहमति व्यक्त की है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को निशाना बनाकर कथित तौर पर की गई शिवलिंग पर बिच्छू संबंधी थरूर की टिप्पणी को लेकर उनके खिलाफ मानहानि की कार्यवाही रद्द करने से इनकार कर दिया था। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ के नेतृत्व वाली शीर्ष अदालत की पीठ ने सोमवार को शाम छह बजे तक सुनवाई की, जबकि सामान्यत: शाम चार बजे तक ही सुनवाई की जाती है। पीठ से एक वकील ने अनुरोध किया कि याचिका पर मंगलवार को सुनवाई की जाए, अन्यथा कांग्रेस नेता को उसी दिन निजी मानहानि शिकायत के संबंध में दिल्ली की एक अदालत में पेश होना पड़ेगा। वकील ने कहा, यह अत्यावश्यक है। हम इसे कल सूचीबद्ध किए जाने का अनुरोध करते हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय ने (थरूर का) मामला रद्द कर दिया था।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा, बस ईमेल भेजिए। मैं अभी इसकी पड़ताल करूंगा। दिल्ली उच्च न्यायालय ने 29 अगस्त को थरूर के खिलाफ मानहानि की कार्यवाही रद्द करने से इनकार कर दिया था। इसने कहा था कि प्रथम दृष्टया, प्रधानमंत्री के खिलाफ शिवलिंग पर बिच्छू जैसे आरोप घृणित एवं निंदनीय हैं। उच्च न्यायालय ने कहा था कि प्रथम दृष्टया, टिप्पणी से प्रधानमंत्री, सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ-साथ इसके पदाधिकारियों और सदस्यों की मानहानि हुई है। निचली अदालत में लंबित मानहानि की कार्यवाही को रद्द करने का अनुरोध करने वाली थरूर की याचिका को खारिज करते हुए उच्च न्यायालय ने कहा था कि न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष भारतीय दंड संहिता की धारा 500 (मानहानि के लिए दंड) के तहत उन्हें तलब करने के लिए पर्याप्त सामग्री मौजूद है। उच्च न्यायालय ने 16 अक्टूबर, 2020 को मानहानि की शिकायत में केरल के तिरुवनंतपुरम से कांग्रेस सांसद के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही पर अंतिरम रोक लगा दी थी। बाद में, इसने अंतरिम आदेश को हटाते हुए संबंधित पक्षों को मंगलवार (10 सितंबर) को निचली अदालत में पेश होने का निर्देश दिया था। इसने कहा था कि इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि एक राजनीतिक दल के विधाई प्रमुख और भारत के प्रधानमंत्री के खिलाफ आरोप का उस दल, उसके पदाधिकारियों तथा संबंधित सदस्यों की छवि पर महत्वपूर्ण असर पड़ता है, और यह व्यवस्था के लिए भी अच्छा संकेत नहीं है, क्योंकि इसका असर चुनावी प्रक्रिया पर भी पड़ता है। उच्च न्यायालय ने कहा था, प्रथम दृष्टया, वर्तमान प्रधानमंत्री के खिलाफ लगाए गए आरोप घृणित और निंदनीय हैं तथा भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मानहानि करने के अलावा, भारतीय जनता पार्टी तथा इसके पदाधिकारियों और सदस्यों की भी मानहानि करते हैं।

सूरत में गणेश पंडाल पर पथराव के बाद हिंसा, 34 लोग हिरासत में

भाषा। सूरत

गुजरात के सूरत शहर में गणेश उत्सव के दौरान कुछ नाबालिगों द्वारा एक पंडाल पर कथित तौर पर पथराव किए जाने के कारण वहां स्थापित गणेश मूर्ति खंडित हो गई, जिसके बाद क्षेत्र में हिंसा भड़क गई और कुछ पुलिसकर्मी सहित अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि रविवार देर रात सैयदपुरा में घटी इस घटना के सिलसिले में छह नाबालिगों को हिरासत में लिया गया था, जिसके बाद करीब 300 लोगों ने अपने समुदाय के सदस्यों के खिलाफ कार्वाई का विरोध करते हुए लालगेट थाने का घेराव किया। सूरत के पुलिस आयुक्त अनुपम सिंह गहलोत ने संवाददाताओं से कहा कि दो तरफ से पथराव हुआ, जिसमें पुलिस कर्मियों सहित कुछ लोग घायल हो गए।

उन्होंने बताया कि लोगों के एक समूह ने क्षेत्र में खड़े दो वाहनों को आग के हवाले कर दिया और दो अन्य में तोड़फोड़ की। गहलोत ने कहा कि भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज किया और आंसूगैस के गोले छोड़े। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, घटना के सिलसिले में अभी तक तीन अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज की गई हैं, 28 लोगों को गिरफ्तार किया गया है और छह नाबालिगों को हिरासत में लिया गया है। गहलोत ने बताया कि अन्य आरोपियों की धरपकड़ के लिए पुलिस तलाश अभियान चला रही है। गुजरात के गृह मंत्री हर्ष सांघवी और वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का दौरा किया तथा दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्वाई का भरोसा दिलाया।सांघवी ने संवाददाताओं से कहा, शहर के अमन-चैन में खलल डालने वाले हर व्यक्ति को गिरफ्तार किया जाएगा और किसी को बख्शा नहीं जाएगा। गहलोत ने कहा कि यह घटना सूरत के सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील इलाके में हुई। उन्होंने बताया कि एक ऑटोरिक्शा में सवार 12 से 13 साल के छह उपद्रवियों ने गणेश पंडाल पर पत्थर फेंके, जिससे मूर्ति खंडित हो गई। गहलोत के अनुसार, इन नाबालिगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। उन्होंने बताया कि नाबालिग आरोपियों के माता-पिता को भी पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया है। पुलिस आयुक्त ने कहा, नाबालिग आरोपियों को तुरंत पुलिस चौकी ले जाया गया और उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई। उन्होंने बताया कि पुलिस ने हत्या के प्रयास, दंगा, गैरकानूनी सभा, गंभीर चोट पहुंचाना आदि अपराधों के लिए भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं के तहत कुल 28 लोगों की पहचान करने और उन्हें पकड़ने के लिए सीसीटीवी फुटेज के साथ-साथ मोबाइल फोन और टीवी कैमरों की वीडियो रिकॉर्डिंग का भी सहारा लिया। गहलोत के मुताबिक, इलाके में खड़े दो वाहनों में आग लगाने और दो अन्य को नुकसान पहुंचाने के लिए व्यक्तियों के एक समूह के खिलाफ एक अन्य प्राथमिकी दर्ज की गई है। उन्होंने कहा, पुलिस ने आगजनी और संपत्ति को नुकसान पहुंचाने से संबंधित धाराओं के तहत यह प्राथमिकी दर्ज की है। गहलोत ने बताया कि पूरे इलाके की निगरानी की जा रही है और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारी संख्या में पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं।उन्होंने कहा कि मामले की जांच करने और अन्य आरोपियों को पकड़ने के लिए शहर की अपराध शाखा, विशेष अभियान समूह (एसओजी) और स्थानीय पुलिस के कर्मियों को शामिल करते हुए अलग-अलग टीमें बनाई गई हैं। गहलोत के अनुसार, दोषियों की पहचान के लिए वीडियो फुटेज खंगालने के वास्ते एक तकनीकी टीम का गठन किया गया है।

गुजरात के पुलिस महानिदेशक विकास सहाय ने गांधीनगर में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि 28 लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि छह नाबालिगों के खिलाफ भी कानूनी कार्वाई शुरू की गई है, जिनकी उम्र 13 से 15 साल के बीच है। उन्होंने कहा, मैं गुजरात के शांतिप्रिय लोगों को भरोसा दिलाना चाहता हूं कि सभी जिलों में गणेश उत्सव कार्यक्रम शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हों, यह सुनिश्चित करने के लिए पुलिस पूरी तरह से तैयार है। हम राज्य के शांतिपूर्ण माहौल में खलल डालने की कोशिश करने वालों के खिलाफ सख्त कार्वाई करेंगे। सहाय ने कहा, मैं जिलों की मौजूदा स्थिति पर वहां की सभी पुलिस इकाइयों के प्रमुखों (जिला पुलिस अधीक्षक सहित) के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से एक समीक्षा बैठक करूंगा।

पिता की मौत के बाद 2,20 लाख के लिए दो भाइयों के झगड़े को हाईकोर्ट ने बताया दुर्भाग्यपूर्ण

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पिता की मौत के बाद 2,20 लाख के लिए दो भाइयों के झगडे को दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया और कहा हम हमेशा भगवान राम के छोटे भाई भरत के त्याग को स्मरण करते हैं। किंतु यहां छोटे भाई के अपने बड़े भाई के साथ व्यवहार ने उसे कलियुगी भरत बना दिया। कोर्ट ने कहा बड़े भाई ने पिता के संयुक्त खाते से पैसे निकाले। कोर्ट ने समझौते का प्रयास किया किंतु छोटे भाई की जिद के चलते नतीजा नहीं निकल सका। हालांकि कि रूपये का विवाद सिविल प्रकृति का है किन्तु दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से छोटे भाई जो वकील हैं। परेशान करने के लिए आपराधिक कार्यवाही में तब्दील कर दी।कोर्ट ने बड़े भाई संजीव चड्ढा याची के खिलाफ एसीजेएम कानपुर नगर में विचाराधीन आपराधिक केस कार्रवाई को रद कर दिया और शिकायतकर्ता छोटे भाई राजीव चड्ढा पर 25 हजार रुपए हर्जाना लगाया है और चार हफ्ते में यह राशि याची को देने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी ने संजीव चड्ढा की याचिका को स्वीकार करते हुए दिया है। याचिका में आपराधिक न्यास भंग के आरोप में दाखिल पुलिस चार्जशीट व सम्मन आदेश की वैधता को चुनौती दी गई थी। मालूम हो कि पिता की मौत के बाद बड़े भाई ने संयुक्त बैक खाते से 2020 लाख निकाल लिया और पिता की वसीयत भी करा ली। जिसमें छोटे भाई को लाभ नहीं मिलना था। दबाव बनाने के लिए छोटे भाई ने बड़े भाई के खिलाफ किदवई नगर थाने में एफआईआर दर्ज कराई आरोप लगाया कि पैसे निकाल कर भाई ने कपट व न्यास भंग किया है। पुलिस ने केवल धारा 406 में चार्जशीट दाखिल की जिस पर संज्ञान लेकर कोर्ट ने सम्मन जारी किया था। हाईकोर्ट ने भाइयों में समझौते के लिए कई तारीख लगाई किंतु सहमति नहीं बनी। कोर्ट ने कहा कपट और फर्जी वसीयत के आरोप में चार्जशीट दाखिल नहीं की गई। शिकायतकर्ता ने परेशान करने व दबाव डालने के लिए सिविल विवाद को आपराधिक विवाद में तब्दील कर लिया।और वसीयत को अभी तक चुनौती नहीं दी है। कोर्ट ने कहा आपराधिक न्यास भंग के तत्व मौजूद नहीं है। इसलिए कोई केस नहीं बनता और पूरी केस कार्यवाही रद कर दी।

कार्यवाहक प्रधानाचार्य को पद का वेतन देने पर निर्णय लेने का आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जिला विद्यालय निरीक्षक कानपुर नगर को याची को कार्यवाहक प्रधानाचार्य पद का वेतन देने के मामले में निर्णय लेने का निर्देश दिया है और कहा है कि तीन माह में देय वेतन की अंतर राशि का भुगतान किया जाए। यह आदेश न्यायमूर्ति सुभाष विद्यार्थी ने मधुर द्विवेदी की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। याची अधिवक्ता अनुराग शुक्ल का कहना था कि याची सरस्वती बालिका विद्यालय इंटर कालेज विजय नगर कानपुर नगर की कार्यवाहक प्रधानाचार्य है। किंतु उसे प्रवक्ता का ही वेतन दिया जा रहा है। हाईकोर्ट का फैसला है कि कार्यवाहक प्रधानाचार्य पद का वेतन पाने के हकदार हैं। इसलिए याची को भी प्रधानाचार्य पद का वेतन दिलाया जाय।याची ने जिला विद्यालय निरीक्षक को प्रत्यावेदन दिया है। जिसका निस्तारण नहीं किया जा रहा है।

बरेली के कार्यवाहक प्रधानाचार्य विवाद को लेकर दाखिल प्रबंध समिति की अपील खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कालिका प्रसाद रामचंद्र कला केंद्र गर्ल्स इंटर कालेज बरेली की प्रबंध समिति की विशेष अपील खारिज कर दी है। जिससे एकल पीठ के द्वारा माध्यमिक शिक्षा निदेशक के विपक्षी अध्यापिका ममता कुमारी को कार्यवाहक प्रधानाचार्य का कार्यभार सौंपने के आदेश के खिलाफप्रबंध समिति की याचिका खारिज करने को चुनौती दी गई थी। खंडपीठ ने कहा कि एकलपीठ के आदेश में कोई अवैधानिकता नहीं है। आदेश पर हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता।और कालेज प्रबंध समिति की अपील खारिज कर दी। यह आदेश न्यायमूर्ति एम सी त्रिपाठी तथा न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार की खंडपीठ ने कालेज की प्रबंध समिति की अपील पर दिया है। अपील पर अधिवक्ता प्रभाकर अवस्थी व विपक्षी कार्यवाहक प्रधानाचार्य के अधिवक्ता अनुराग शुक्ल ने बहस की। मालूम हो कि विपक्षी को प्रबंध समिति ने निलंबित कर दिया और जांच बैठाई। उससे कनिष्ठ प्रवक्ता को कार्यवाहक प्रधानाचार्य का कार्यभार सौंप दिया।विपक्षी को निलंबित करने के आदेश को जिला विद्यालय निरीक्षक ने अनुमोदित करने से इंकार कर दिया और संयुक्त शिक्षा निदेशक माध्यमिक ने तीन सदस्यीय जांच कमेटी गठित की। कमेटी की रिपोर्ट पर निदेशक माध्यमिक शिक्षा ने 20 मई 24 को ज़िला विद्यालय निरीक्षक को आदेश दिया कि विपक्षी ममता कुमारी को कार्यवाहक प्रधानाचार्य बनाये और मंडलीय माध्यमिक शिक्षा निदेशक को प्रबंध समिति के खिलाफधारा 16 डी ;3द्ध के तहत जांच करने का आदेश दिया था। इस आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी। जिसे एकलपीठ ने खारिज कर दिया। इस आदेश के खिलाफविशेष अपील भी हाईकोर्ट ने खारिज कर दी।

महाराष्ट्र सरकार 60 साल पहले अवैध रूप से अधिग्रहीत जमीन के बदले वैकल्पिक भूखंड दे

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को महाराष्ट्र प्रशासन को निर्देश दिया कि वे 24 एकड़ से अधिक वैकल्पिक भूमि का शांतिपूर्ण एवं मुक्त कब्जा एक ऐसे व्यक्ति को सौंप दें, जिसकी भूमि पर छह दशक से अधिक समय पहले अवैध कब्जा किया गया था। शीर्ष अदालत ने वन एवं राजस्व विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव राजेश कुमार की बिना शर्त माफी भी स्वीकार कर ली, जिनके खिलाफ न्यायालय ने 28 अगस्त को कारण बताओ नोटिस जारी कर पूछा था कि विभाग द्वारा दायर हलफनामे में की गई अवमाननापूर्ण टिप्पणियो के लिए उनके खिलाफ अवमानना की कार्वाई क्यों न शुरू की जाए। हलफनामे से ऐसा प्रतीत होता है कि सर्वोच्च न्यायालय कानून का पालन नही करता है। कुमार की ओर से दायर हलफनामे में कहा गया, जिसे अदालत ने अवमाननापूर्ण पाया। हलफनामे में कहा गया, आवेदक के साथ-साथ न्यायालय भी क्लेक्टर, पुणे द्वारा की गई नई गणना (आवेदक को मौद्रिक मुआवजा देने के लिए) को मंजूरी नही दे सकता है, लेकिन कानून के प्रावधानों का पालन करना और उचित गणना पर पहुंचना राज्य का कर्तव्य है। कुमार ने अपने हलफनामे में कहा कि राज्य सरकार मुआवजे के तौर पर 48.65 करोड़ रुपए देने को तैयार है। हालांकि, आवेदक ने जोर देकर कहा कि जमीन का बाजार मूल्य 250 करोड़ रुपए से अधिक है। इसके बाद आवेदक ने मुआवजे के तौर पर जमीन का एक और टुकड़ा मांगा। न्यायमूर्ति बी.आर. गवई और न्यायमूर्ति के.वी. विश्वनाथन की पीठ ने पुणे के क्लेक्टर को निर्देश दिया कि वे सुनिश्चित करें कि 24 एकड़ 38 गुंठा स्थानापन्न भूमि की माप की जाए, सीमांकन किया जाए और इसका शांतिपूर्ण और मुक्त कब्जा आवेदक को सौंप दिया जाए। इसमें कहा गया है कि यदि भूमि पर अतिक्रमण है तो उसे आवेदक को सौंपे जाने से पहले हटा दिया जाएगा। पीठ ने राज्य प्राधिकरण द्वारा दायर शपथपत्र को स्वीकार कर लिया, जिसमें कहा गया था कि भूमि का शांतिपूर्ण और मुक्त कब्जा आवेदक को सौंप दिया जाएगा।

सीडीएस जनरल चौहान ने जल-थल अभियानों के लिए संयुक्त सिद्धांत जारी किया

नई दिल्ली। प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने सोमवार को राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए जल-थल अभियानों के लिए एक संयुक्त सिद्धांत जारी किया। चीफ्स ऑफ स्टाफ कमेटी (सीओएससी) की बैठक में जारी किया गया यह सिद्धांत ऐसे समय में आया है, जब सरकार महत्वाकांक्षी थिएटराइजेशन परियोजना को लागू करने पर विचार कर रही है। यह महत्वपूर्ण दस्तावेज साइबर क्षेत्र परिचालन के लिए संयुक्त सिद्धांत प्रस्तुत किए जाने के लगभग तीन महीने बाद जारी किया गया। इसका उद्देश्य साइबर क्षेत्र अभियानों के संचालन में सैन्य कमांडरों का मार्गदर्शन करना है। रक्षा मंत्रालय ने कहा, एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम में चीफ ऑफ स्टाफ कमेटी (सीओएससी) की बैठक के दौरान जल-थल अभियानों के लिए संयुक्त सिद्धांत जारी किया। उसने कहा, यह सिद्धांत एक प्रमुख दस्तावेज है जो कमांडरों को वर्तमान समय के जटिल सैन्य वातावरण में जल-थल अभियानों के संचालन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगा। जल-थल क्षमता सशस्त्र बलों को युद्ध और शांति, दोनों के दौरान हिंद महासागर क्षेत्र में कई तरह के सैन्य अभियान संचालित करने की शक्ति प्रदान करती है। मंत्रालय ने कहा, ए सैन्य अभियान बहु-क्षेत्रीय सैन्य परिचालनों का एक महत्वपूर्ण घटक हैं और सशस्त्र बलों के बीच सामंजस्य और एकीकरण के सबसे अच्छा उदाहरण हैं।

कोलकाता के अस्पताल की घटना को लेकर विरोध प्रदर्शन केंद्र की साजिश, वामपंथी दल भी इसमें शामिल: ममता

कोलकाता (भाषा) पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को आरोप लगाया कि कोलकाता के सरकारी अस्पताल में पिछले महीने एक चिकित्सक से कथित दुष्कर्म और हत्या की घटना पर जन आक्रोश को लेकर केंद्र ने साजिश रची है। उन्होंने दावा किया कि इस साजिश में कुछ वामपंथी दल भी शामिल हैं। राज्य सचिवालय नबान्न में एक प्रशासनिक समीक्षा बैठक में ममता ने यह भी दावा किया कि उन्होंने पीड़ित महिला चिकित्सक के माता-पिता को कभी पैसों की पेशकश नहीं की। उन्होंने उस अभियान को खारिज कर दिया जिसमें पीड़िता के परिवार के सदस्यों से मुआवजा स्वीकार करने का अनुरोध किया गया था। उन्होंने लोगों से दुर्गा पूजा नजदीक होने पर "उत्सवों की ओर लौटने" का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, "अगर आप हर रात सड़कों पर रहते हैं तो बुजुर्ग लोग ध्वनि प्रदूषण के कारण नींद से वंचित रह जाते हैं। एक महीना बीत चुका है। मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि आप उत्सवों की तरफ लौटें और मांग करती हूं कि सीबीआई जल्द से जल्द जांच पूरी करे। बंगाल की मुख्यमंत्री ने कनिष्ठ चिकित्सकों से जल्द से जल्द काम पर लौटने का अनुरोध किया और राज्य के स्वास्थ्य सचिव एनएस निगम को इस मुद्दे पर उच्चतम न्यायालय के निर्देशों का ध्यान रखने का निर्देश दिया। इससे पहले दिन में शीर्ष अदालत ने पश्चिम बंगाल में प्रदर्शनकारी रेजिडेंट चिकित्सकों को मंगलवार शाम पांच बजे तक काम पर लौटने का निर्देश दिया और कहा कि यदि वे समय सीमा के अंदर काम पर नहीं लौटे तो वह राज्य को हड़ताल कर रहे चिकित्सकों के खिलाफ कार्वाई करने से नहीं रोकेगी। अदालत ने यह निर्देश बंगाल सरकार के उस आश्वासन के बाद दिया जिसमें कहा गया है कि काम पर लौटने पर प्रदर्शनकारी चिकित्सकों के खिलाफ दंडात्मक स्थानांतरण सहित कोई कार्वाई नहीं की जाएगी।उन्होंने आंदोलनकारी चिकित्सकों से आमने-सामने बातचीत की पेशकश करते हुए कहा, "उच्चतम न्यायालय ने आपसे काम पर लौटने का अनुरोध किया है, मैं उस अनुरोध को दोहराऊंगी। अगर आपको कुछ कहना है तो आपका हमेशा स्वागत है। आप पांच से दस सदस्यों की एक टीम बना सकते हैं और मुझसे मिल सकते हैं" ममता ने कहा, मैंने मृतक चिकित्सक के परिवार को कभी पैसों की पेशकश नहीं की, यह बदनाम करने के अलावा और कुछ नहीं है। मैंने उनसे कहा कि अगर वे अपनी बेटी की याद में कुछ करना चाहते हैं तो हमारी सरकार उनके साथ है। मैं जानती हूं कि कब, क्या बोलना है। मुख्यमंत्री ने कहा, यह (आरजी कर घटना के बाद प्रदर्शन) निश्चित रूप से केंद्र की साजिश है और कुछ वामपंथी दल भी इसमें शामिल हैं। कुछ लोग पड़ोसी देश में उथल-पुथल का फायदा उठा रहे हैं।

सेना ने घुसपैठ की कोशिश नाकाम की, दो आतंकी ढेर

राजौरी, जम्मू (भाषा)। जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव के पहले चरण से कुछ दिन पहले राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गए। ए आतंकवादी भारी हथियारों से लैस थे। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि रविवार देर रात नौशेरा सेक्टर के लाम इलाके में उस समय गोलीबारी शुरू हो गई जब सतर्क जवानों ने देखा कि आतंकवादी सीमा पार से इस ओर घुसपैठ करने की कोशिश कर रहे हैं। जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव तीन चरणों में - 18 सितम्बर, 25 सितम्बर और एक अक्टूबर- होंगे। जम्मू में सेना के जनसंपर्क अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल सुनील बर्तवाल ने कहा, जम्मू कश्मीर पुलिस के साथ संयुक्त अभियान में सेना ने नौशेरा सेक्टर में आतंकवादियों की घुसपैठ की कोशिश को सफलतापूर्वक नाकाम कर दिया। तीस अगस्त से प्राप्त खुफिया सूचनाओं से नौशेरा सेक्टर के दूसरी ओर आतंकवादियों की मौजूदगी का संकेत मिला था। घुसपैठ के सभी संभावित मार्गों पर निगरानी रखी जा रही थी। उन्होंने कहा कि इलाके की निगरानी के लिए जमीनी और हवाई निगरानी उपकरण लगाए गए थे। रक्षा प्रवक्ता ने कहा, "क्षेत्रीय गश्त भी बढ़ा दी गई, जिसमें आतंकवादियों की घुसपैठ को रोकने के लिए अहम इलाकों में सैनिकों को तैनात किया गया। उन्होंने बताया कि आठ सितंबर की रात करीब 7.30 बजे निगरानी दलों ने इलाके में कुछ लोगों की संदिग्ध हरकतें देखीं। प्रवक्ता ने बताया, इसके बाद भीषण गोलीबारी हुई। गोलीबारी रातभर जारी रही।

पेज 1 का शेष

जांच...

यह डब्ल्यूएचओ द्वारा रिपोर्ट किए गए वर्तमान सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल का हिस्सा नहीं है, जो कि एमपीओएक्स के क्लेड 1 के संबंध में है। मामला पहले के जोखिम आकलन के अनुरूप है और इसे स्थापित प्रोटोकॉल के अनुसार प्रबंधित किया जा रहा है, इसमें कहा गया है कि स्थिति पर नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए संपर्क ट्रेसिंग और निगरानी सहित सार्वजनिक स्वास्थ्य उपाय सक्रिय रूप से लागू हैं।

उप्र सरकार ने...

यह स्पष्ट है कि एक अनुभाग अधिकारी ने छह जून तक जेल अधिकारियों से हमारे आदेशों की सूचना देने वाले ईमेल को नहीं खोला, जब आदर्श आचार संहिता समाप्त हो गई। इसका मतलब यह है कि तब तक फाइलें एक इंच भी आगे नहीं बढ़ीं। न्यायालय ने कहा, समूचा राज्य तंत्र सो रहा था...जो उसके आदेशों की स्पष्ट अवहेलना है।

एसयू-30...

और सार्वजनिक और निजी उद्योग शामिल होंगे। रक्षा मंत्रालय ने कहा, डिलीवरी कार्यक्रम के अंत तक, एचएएल 54 प्रतिशत से अधिक का औसत हासिल करने के लिए स्वदेशीकरण सामग्री को 63 प्रतिशत तक बढ़ा देगा। इसमें कहा गया है कि इससे एयरो-इंजन की मरम्मत और ओवरहाल कार्यों की स्वदेशी सामग्री को बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

मोदी व प्रिंस...

अगस्त 2015 में मोदी की यूएई की ऐतिहासिक यात्रा के बाद, दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाया गया था। दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार के लिए भारतीय रुपए और दिरहम (संयुक्त अरब अमीरात की मुद्रा) के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए फरवरी 2022 में एक व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) और जुलाई 2023 में एक स्थानीय मुद्रा निपटान (एलसीएस) प्रणाली पर हस्ताक्षर किए। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2022-23 में लगभग 85 अरब अमेरिकी अमरीकी डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार के साथ दोनों देश एक-दूसरे के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से हैं। 2022-23 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के मामले में भी यूएई, भारत में शीर्ष चार निवेशकों में शामिल है। यूएई में करीब 35 लाख भारतीय रहते हैं। पिछले साल भारत की अध्यक्षता में हुए जी20 शिखर सम्मेलन में यूएई को बतौर विशेष आमंत्रित देश न्योता दिया गया था। भारत की अध्यक्षता के दौरान जी20 समूह के लिए विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में यूएई को आमंत्रित किया गया था।

विदेश में...

राजनीति से प्यार, सम्मान और विनम्रता गायब है, जहां उन्होंने यह मानने के लिए आरएसएस की भी आलोचना की कि भारत 'एक विचार' है। विपक्ष के नेता ने रविवार को अमेरिका की अपनी वर्तमान यात्रा पर भारतीय प्रवासियों के साथ अपनी पहली बातचीत के दौरान डलास में यह टिप्पणी की। डलास में टेक्सास विश्वविद्यालय में छात्रों के साथ बातचीत के दौरान, राहुल ने भारत में विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत, अमेरिका और पश्चिम के अन्य देश बेरोजगारी की समस्या का सामना कर रहे हैं, जबकि चीन में ऐसा नहीं है, वह वैश्विक उत्पादन में उसका वर्चस्व कायम है। पूर्व कांग्रेस प्रमुख ने यह भी कहा कि भारत में कौशल की कोई कमी नहीं है और अगर देश उत्पादन के लिए खुद को तैयार करना शुरू कर दे तो वह चीन के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है। तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए भाटिया ने कहा कि राहुल चीन के खिलाफ एक भी शब्द नहीं बोल सकते या बयान नहीं दे सकते। भाजपा नेता ने कहा, 'वह भारत को कमजोर करते हैं... वह चीन के साथ खड़े हैं।'

कालिंदी एक्सप्रेस...

साथ ही अचानक आपातकालीन ब्रेक लगने से ट्रेन पटरी से उतर भी सकती थी। ट्रेन करीब 20 मिनट तक घटनास्थल पर रुकी रही और जांच के लिए इसे बिल्हौर स्टेशन पर रोका गया। चंद्र ने बताया कि सूचना मिलने पर वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे और मामले की जांच शुरू की। मामले को सुलझाने में उनकी मदद के लिए फोरेंसिक टीम को भी बुलाया गया। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) भी मामले की जांच कर रहा है। उन्होंने बताया कि घटनास्थल के पास क्षतिग्रस्त सिलेंडर के अलावा पेट्रोल से भरी बोतल और माचिस सहित कई संदेहास्पद चीजें भी बरामद की गई है। संयुक्त पुलिस आयुक्त ने कहा कि उन लोगों की पहचान करने का प्रयास किया जा रहा है, जिन्होंने ट्रेन को पटरी से उतारने के इरादे से गैस सिलेंडर और अन्य आपत्तिजनक सामग्री पटरियों पर रखी थीं। सिंह ने बताया कि घटना में आतंकवादियों का हाथ होने की आशंका के मद्देनजर आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) ने भी मामले की अलग से जांच शुरू की है। राज्य के पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने रेलवे ट्रैक पर रसोई गैस सिलेंडर पाए जाने के बाद आतंकवाद रोधी दस्ते के भी मौके पर पहुंचने के बारे में लखनऊ में संवाददाताओं को बताया, हम सभी पहलुओं को देखेंगे और बिना पूरी जांचपड़ताल किए, इस पर कुछ भी कहना अभी संभव नहीं है। उन्होंने कहा, हमारे सारे वरिष्ठ अधिकारियों ने मौके का मुआयना किया है। हम लोग चीजों को गंभीरता से देख रहे हैं और जिस तरह के तथ्य प्रकाश में आएंगे हम उसे मीडिया को अवगत करेंगे। पुलिस के अनुसार मामले की जांच के लिए पुलिस के वरिष्ठ रैंक के अधिकारी की अध्यक्षता में एक विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित करने का भी निर्णय लिया गया। एसआईटी हाल ही में पनकी में करीब 20 दिन पहले हुए साबरमती एक्सप्रेस के पटरी से उतरने के मामले की जांच करेगी। इस बीच खुफिया ब्यूरो, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) और उप्र पुलिस के आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने रेलवे ट्रैक का सर्वेक्षण किया। इस बीच अपर पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) हरीश चंद्र ने पुष्टि की है कि उन्होंने 4-5 ग्राम विस्फोटक पाउडर के अलावा पेट्रोल और बाती से भरी बोतलें, माचिस और एलपीजी सिलेंडर बरामद किए हैं, जिन्हें ट्रेन को पटरी से उतारने के लिए पटरियों पर रखा गया था। उन्होंने कहा कि घटनास्थल पर बुलाए गए फोरेंसिक विशेषज्ञों ने विस्फोटक पाउडर की जांच की और वे सुझाव देंगे कि फोरेंसिक जांच किस केंद्रीकृत प्रयोगशाला से कराई जानी चाहिए। अधिकारी ने आगे कहा, इस निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी कि साजिश के पीछे आतंकवादी समूह हैं या नहीं, क्योंकि पुलिस इसके पीछे किसी भी संभावना से इनकार नहीं कर सकती। इस बीच, बसपा प्रमुख मायावती ने मामले की जांच की मांग की है। उन्होंने एक्स पर कहा, "कानपुर में रेलवे पटरी पर गैस सिलेंडर आदि रखकर रेल दुर्घटना कराने के षडयंत्र का विफल होना संतोषजनक। इसकी उच्च स्तरीय जांच-पड़ताल के बाद दोषियों के विरूद्ध सख्त कार्वाई जरूरी, ताकि जन व रेल सुरक्षा बनी रहे। इस बीच, आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि रेलवे ने इस संबंध में शिवराजपुर में अज्ञात लोगों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता, विस्फोटक अधिनियम और रेलवे अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज कराई है। आरोप है कि पेट्रोल से भरी बोतल के अलावा एलपीजी सिलेंडर को पटरी पर रखकर विस्फोट की कोशिश की गई। उन्होंने बताया कि मामले की जांच के लिए वरिष्ठ अधिकारियों की अगुवाई में पांच टीम गठित की गई हैं। पुलिस उपायुक्त (पश्चिमी) राजेश कुमार सिंह ने बताया कि पुलिस टीमें मामले की विस्तृत जांच करेंगी और इसमें शामिल लोगों के खिलाफ कार्वाई शुरू करेंगी। उन्होंने बताया कि सहायक पुलिस उपायुक्त को भी साजिशकर्ताओं के बारे में जानकारी जुटाने और मामले को सुलझाने में पुलिस टीमों की मदद करने के लिए कहा गया है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि आसपास के इलाकों में जमातियों की तलाश करने और उनसे पूछताछ करने का भी फैसला किया गया है। उन्होंने बताया कि मौके से मिठाई का एक डिब्बा मिलने के बाद पुलिस की एक टीम कन्नौज भी भेजी गई है। उम्मीद है कि इससे पुलिस को मामले की जांच में मदद मिलेगी।

कैंसर की...

कि स्वास्थ्य और जीवन बीमा प्रीमियम को जीएसटी से मुक्त रखा जाए। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भी इस मुद्दे पर सीतारमण को पत्र लिखा था। वित्त मंत्री सीतारमण ने वित्त विधेयक पर चर्चा का जवाब देते हुए कहा था कि जीएसटी प्राप्ति का 75 प्रतिशत राज्यों को जाता है और विपक्षी सदस्यों को अपने राज्य के वित्त मंत्रियों से जीएसटी परिषद में प्रस्ताव लाने के लिए कहना चाहिए। जीएसटी परिषद ने सोमवार को हुई बैठक में कैंसर की दवाओं पर कर की दर 12 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत और नमकीन पर 18 प्रतिशत से घटाकर 12 प्रतिशत करने का फैसला किया।

राहुल चीन को बढ़ावा दे रहे, भारत को कमतर दिखाते हैं : हिमंत

भाषा। रांची

असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने सोमवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर चीन को बढ़ावा देने और भारत को कमतर दिखाने का आरोप लगाया। शर्मा ने यहां बिरसा मुंडा हवाई अड्डे पर संवाददाताओं से कहा, राहुल गांधी अलग-अलग तरीकों से चीन को बढ़ावा देते हैं। भारत को कमजोर दिखाते हुए वह चीन को सर्वश्रेष्ठ देश के रूप में पेश करने की कोशिश करते हैं। लेकिन, चीन में न तो लोकतंत्र है और न ही लोगों के लिए धार्मिक स्वतंत्रता है। लेकिन गांधी इस बारे में बात नहीं करते। झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के चुनाव सह-प्रभारी शर्मा दो दिवसीय यात्रा पर यहां पहुंचे। गांधी ने रविवार को डलास में टेक्सास विश्वविद्यालय में छात्रों के साथ बातचीत के दौरान विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा कि वैश्विक उत्पादन में चीन का प्रभुत्व है इसलिए वह बेरोजगारी का सामना नहीं कर रहा है, जबकि भारत और अमेरिका समेत पश्चिमी देश बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहे हैं। पूर्व कांग्रेस प्रमुख ने यह भी कहा कि भारत में कौशल की कोई कमी नहीं है और अगर देश उत्पादन के लिए खुद को तैयार करना शुरू कर दे तो वह चीन के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है। शर्मा की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पार्टी की झारखंड इकाई के पूर्व अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा, हर कोई जानता है कि चीन को कौन बढ़ावा देता है। शर्मा को इस तरह के बयान देकर देश के लोगों को गुमराह नहीं करना चाहिए। उन्हें पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए। एक सवाल के जवाब में असम के मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस के 12-14 विधायक और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के दो-तीन विधायक भाजपा के संपर्क में हैं। उन्होंने कहा, लेकिन, आगामी विधानसभा चुनाव के लिए हमारे पास उनके लिए जगह नहीं है। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन और झामुमो के पूर्व विधायक लोबिन हेम्ब्रम हाल ही में भाजपा में शामिल हुए। आबकारी कांस्टेबल अभ्यर्थियों की हाल ही में हुई मौतों को लेकर उन्होंने कहा कि भाजपा ने मृतकों के परिजनों के लिए नौकरी और 50 लाख रुपए मुआवजे की मांग की है। शर्मा ने कहा, झारखंड के मुख्यमंत्री ने अभ्यर्थियों की मौत के लिए कोविड वैक्सीन को जिम्मेदार ठहराया है, लेकिन मुख्यमंत्री ने खुद वैक्सीन लगवाई थी और लोगों से कहा था कि कोविड वैक्सीन सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि वे भर्ती अभियान में अपने प्रियजनों को खोने वाले दो परिवारों से मिलेंगे।झारखंड आबकारी कांस्टेबल भर्ती के लिए 22 अगस्त को शुरू हुई शारीरिक दक्षता परीक्षा को 12 अभ्यर्थियों की मौत के बाद रोक दिया गया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इन मौतों के कारण तीन सितंबर से पांच सितंबर तक भर्ती अभियान को स्थगित करने का आदेश दिया था। लगभग 1.14 लाख अभ्यर्थियों के लिए भर्ती अभियान का शेष भाग संशोधित मानदंडों के साथ 10 सितंबर को फिर से शुरू किया जाएगा।

पटना में एक स्थानीय भाजपा नेता की हत्या, तेजस्वी ने नीतीश सरकार पर किया तंज

पटना। पटना शहर के चौक थाना इलाके में सोमवार की सुबह एक स्थानीय भाजपा नेता की एक मोटरसाइकिल पर सवार दो अज्ञात सशस्त्र हमलावरों द्वारा गोली मारकर कथित तौर पर हत्या कर दी गई।मृतक की पहचान स्थानीय भाजपा नेता मुन्ना शर्मा के रूप में की गई है।पटना जिला पुलिस द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, सोमवार की सुबह लगभग 6.15 बजे मुन्ना शर्मा को पटना शहर के चौक थाना इलाके के एक रेस्तरां के पास कुछ अज्ञात सशस्त्र हमलावरों ने गोली मार दी। घटना के बाद हमलावर एक मोटरसाइकिल पर सवार होकर फरार हो गए। पुलिस के अनुसार, जख्मी शर्मा को उनके परिजन अस्पताल ले गए, जहां उन्होंने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।हमलावरों का पता लगाने के लिए पुलिस घटनास्थल एवं आस-पास के सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है।राजद नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने इस घटना को लेकर एक वीडियो साझा करते हुए सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, बिहार में सत्ता के संरक्षण में अपराध फल-फूल रहा है। अपराधी जब चाहे, जहां चाहे, किसी को भी गोली मारकर भाग जा रहे हैं। वीडियो में भाजपा नेता को गोली मारकर भागते अपराधी। राजग के कर्ता-धर्ता बढ़ते बेलगाम अपराध से बेखबर हैं। इधर-उधर में मस्त, व्यस्त और पस्त मुख्यमंत्री से बिहार बिल्कुल भी नहीं संभल रहा।

अमेरिका ने सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत के साथ साझेदारी की घोषणा की

नई दिल्ली। अमेरिकी विदेश विभाग ने सोमवार को अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी सुरक्षा एवं नवाचार (आईटीएसआई) कोष के तहत वैश्विक सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र में विविधता लाने के लिए भारत के साथ साझेदारी की घोषणा की। साझेदारी की शुरुआत में भारत के मौजूदा सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र और नियामकीय ढांचे के साथ ही कार्यबल और बुनियादी ढांचे की जरूरतों का व्यापक आकलन किया जाएगा। विदेश विभाग ने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय के तहत भारत के सेमीकंडक्टर मिशन के साथ साझेदारी दोनों देशों के लिए लाभदायक है। यह भारत के सेमीकंडक्टर उद्योग की विस्तार क्षमता को भी रेखांकित करती है। इसके तहत अमेरिकी विदेश विभाग भारत के सेमीकंडक्टर मिशन, इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय के साथ साझेदारी करेगा।

सरकार अगले 2-3 माह में नई सहकारिता नीति की घोषणा करेगी : सचिव

नई दिल्ली। सहकारिता मंत्रालय के एक शीर्ष अधिकारी ने सोमवार को कहा कि नई राष्ट्रीय सहकारिता नीति लगभग तैयार है और अगले 2-3 महीनों में इसकी घोषणा की जाएगी। सहकारिता सचिव आशीष कुमार भूटानी ने एक कार्यक्रम के दौरान संवाददाताओं से कहा, हम नई राष्ट्रीय सहकारिता नीति को अंतिम रूप देने के अंतिम चरण में है। नीति की घोषणा अगले 2-3 महीनों में की जाएगी। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु की अध्यक्षता वाली 47 सदस्ईय समिति ने अंशधारकों के साथ परामर्श के बाद नीति का मसौदा तैयार किया है। उन्होंने कहा, अब नीति को अंतिम रूप देने के लिए आगे की चर्चा की जा रही है। सचिव ने यह भी बताया कि अगले साल फरवरी तक लगभग 65,000 कार्यात्मक प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पीएसीएस) को कम्प्यूटरीकृत कर दिया जाएगा।

गुवाहाटी में छात्रावास के कमरे में मृत मिला आईआईटी का छात्र

गुवाहाटी। गुवाहाटी में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के छात्रावास के एक कमरे में सोमवार को कंप्यूटर विज्ञान का एक छात्र मृत मिला। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि उत्तर प्रदेश निवासी छात्र का शव ब्रह्मपुत्र छात्रावास के उसके कमरे में मिला। वह कंप्यूटर विज्ञान में तीसरे वर्ष का छात्र था। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि जांच जारी है और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। इस साल गुवाहाटी आईआईटी में किसी छात्र की मौत की यह चौथी घटना है। नौ अगस्त को एक छात्रा का शव कथित तौर पर उसके कमरे में फंदे से लटका मिला था। एक प्रवक्ता ने कहा, गुवाहाटी आईआईटी को बेहद दुख के साथ सूचना देनी पड़ रही है कि हमारे समुदाय के एक छात्र की मौत हो गई है।

फूड एंड बेकरी एक्सपो 13 से

नोएडा। राजधानी में बहुप्रतीक्षित फूड एंड बेकरी एक्सपो 2024 का आयोजन आगामी 13-15 सितंबर 2024 को अवध शिल्प ग्रामलखनऊ में किया जाएगा। फूड सेक्टर का यह प्रमुख बीटूबी इवेंट, एसजी फूडीज़ इंफोटेक एलएलपी और फूड इंडस्ट्रीज वेलफेयर एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। यह एक्सपो बेकरी उद्योग से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों का केंद्र बनेगाए जहां बेकरी मशीनरी और उपकरणों के निर्माताओं के साथ-साथ पैकेजिंग सामग्री के आपूर्तिकर्ता भी शामिल होंगे। फूड इंडस्ट्री वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गिरीश गुप्ता ने एक्सपो को लेकर अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा कि फूड एंड बेकरी एक्सपो 2024 सिर्फ एक आयोजन नहीं, बल्कि भारत में खाद्य उद्योग को आगे बढ़ाने का एक बड़ा मंच है।

अमित शाह मुंबई में शिंदे और अजित पवार से मिले

कई गणेश पंडाल में दर्शन किए

भाषा। मुंबई

महाराष्ट्र में आगामी विधानसभा चुनाव से पहले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री अजित पवार से मुंबई हवाई अड्डे पर संक्षिप्त मुलाकात की और कई गणेश पंडाल में दर्शन किए। बैठक में क्या बातचीत हुई, इस पर कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। लेकिन सूत्रों के मुताबिक, शाह ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दोनों सहयोगियों को आश्वासन दिया कि राज्य विधानसभा चुनाव के लिए महायुति सहयोगियों के बीच विधानसभा सीट का सम्मानजनक वितरण होगा। शिंदे शिवसेना के प्रमुख हैं, जबकि अजित पवार राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के अध्यक्ष हैं और दोनों सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन में भाजपा के सहयोगी हैं। भाजपा के पूर्व अध्यक्ष और पार्टी के प्रमुख चुनाव रणनीतिकार शाह दो दिवसीय मुंबई दौरे पर हैं, जहां उन्होंने एक मीडिया संगठन द्वारा निर्मित वृत्तचित्र को जारी करने के लिए रविवार शाम एक कार्यक्रम में भाग लिया। इसके बाद उन्होंने दक्षिण मुंबई में राज्य सरकार के सह्याद्री गेस्ट हाउस में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की राज्य इकाई की कोर कमेटी के सदस्यों से मुलाकात की। मुंबई से रवाना होने से पहले शाह ने सोमवार को शिंदे, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, अजित पवार, राकांपा के कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल और अन्य अहम नेताओं से मुलाकात की। शाह मुंबई में प्रसिद्ध लालबागचा राजा गणेश पंडाल जा कर भगवान गणेश के दर्शन किए और पूजा-अर्चना की।मुंबई के लालबाग इलाके में सबसे प्रसिद्ध गणेश पंडाल में भगवान गणेश के दर्शन के दौरान शाह के साथ महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े भी थे।शाह बाद में बांद्रा वेस्ट गणेश पंडाल भी गए, जो भाजपा की मुंबई इकाई के अध्यक्ष आशीष शेलार से संबद्ध है।इससे पहले सुबह, शाह यहां मुख्यमंत्री शिंदे और फडणवीस के आधिकारिक आवास पर गए और उनके घरों पर स्थापित गणेश प्रतिमाओं के दर्शन किए।शाह के मुंबई दौरे का यह दूसरा दिन है। रविवार रात को उन्होंने मुख्यमंत्री शिंदे के साथ ही उपमुख्यमंत्री फडणवीस और अजित पवार से मुलाकात की थी।

राम मंदिर निर्माण से सरकारी खजाने को मिलेंगे 400 करोड़ रुपए

इंदौर (भाषा)। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के महासचिव चंपत राय ने सोमवार को अनुमान जताया कि अयोध्या में भगवान राम की जन्मभूमि पर बने मंदिर के परिसर में जारी निर्माण कार्यों से वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के तौर पर सरकारी खजाने में करीब 400 करोड़ रुपए जमा होंगे। राय ने इंदौर में अपने नागरिक अभिनंदन समारोह में कहा, मेरा अनुमान है कि राम मंदिर निर्माण कार्य में सरकार को जीएसटी के रूप में करीब 400 करोड़ रुपए तक मिल जाएंगे। हालांकि, इस कर वसूली का वास्तविक आंकड़ा निर्माण कार्य पूरा होने के बाद सरकार ही बता सकेगी। उन्होंने बताया कि 70 एकड़ पर विकसित हो रहे राम मंदिर परिसर में कुल 18 मंदिर बनने हैं जिनमें महर्षि वाल्मीकि, शबरी और तुलसीदास के मंदिर भी शामिल हैं। राय ने कहा कि राम मंदिर निर्माण कार्य में सरकार को मिलने वाले करों में एक रुपए की भी कमी नहीं आएगी और शत प्रतिशत कर अदा किया जाएगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अयोध्या में राम मंदिर समाज के आम लोगों के सहयोग से बन रहा है। राय ने कहा कि उत्तर प्रदेश की इस धार्मिक नगरी में ऐसी व्यवस्थाएं की गई हैं कि प्रति दिन दो लाख श्रद्धालुओं के आने पर भी किसी भी व्यक्ति को कोई परेशानी नहीं होगी।

चंपत राय, विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं। उन्होंने कहा कि अयोध्या में राम जन्मभूमि पर मंदिर बनाने के आंदोलन में न जाने कितने लोगों, उनके परिवारों और रिश्तेदारों को कष्ट हुआ होगा। राय ने कहा, यह यज्ञ (आंदोलन) आजादी की 1,000 साल की लड़ाई से कम नहीं है। वहां जितने कष्ट सहे गए और बलिदान हुए हैं, वैसा ही राम जन्मभूमि मुक्ति के इस यज्ञ में भी हुआ है। यह (आंदोलन) लोक कल्याण के लिए हुआ है। राय, अयोध्या के राम मंदिर परिसर में बनने वाले शिव मंदिर के लिए शिवलिंग तय करने के उद्देश्य से रविवार को मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के बकावा गांव गए थे। उन्होंने बताया कि वह भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के एक अधिकारी के सुझाव पर एक वास्तुकार के साथ बकावा गए थे। नर्मदा नदी के किनारे पर बसा हुआ यह गांव सुंदर शिवलिंग निर्माण के लिए मशहूर है। इस गांव के घर-घर में बनने वाले शिवलिंग देश-विदेश के मंदिरों में स्थापित किए जाते हैं।

न्यायालय ने तृणमूल सांसद अभिषेक उनकी पत्नी की याचिका खारिज की

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने पश्चिम बंगाल में अवैध कोयला खनन से संबंधित एक कथित घोटाला मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच के सिलसिले में उसके समन के खिलाफ तृणमूल कांग्रेस नेता अभिषेक बनर्जी एवं उनकी पत्नी रुजिरा बनर्जी की एक याचिका सोमवार को खारिज कर दी। न्यायमूर्ति बेला त्रिवेदी और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की एक पीठ ने सोमवार को फैसला सुनाया। पीठ ने 13 अगस्त को फैसला सुरक्षित रखा था।

एलन मस्क बन सकते हैं दुनिया के पहले ट्रिलिनियर

● होड़ में अदाणी, अंबानी भी शामिलः रिपोर्ट

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक कार विनिर्माता टेस्ला और रॉकेट कंपनी स्पेसएक्स के मुखिया एलन मस्क वर्ष 2027 तक दुनिया के पहले ट्रिलिनियर बन सकते हैं। इसका मतलब है कि उनकी संपत्ति 1,000 अरब डॉलर से अधिक हो जाएगी। इन्फॉर्मा कनेक्ट अकादमी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय उद्योगपति गौतम अदाणी इसके अगले साल (2028) यह दर्जा हासिल कर सकते हैं, जबकि एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति मुकेश अंबानी वर्ष 2033 में इस मुकाम तक पहुंच सकते हैं। रिपोर्ट कहती है कि 237 अरब अमेरिकी डॉलर की कुल संपत्ति के साथ दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति मस्क को दुनिया का पहला खरबपति बनने के लिए तीन वर्षों में 110 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने की जरूरत है। रिपोर्ट के मुताबिक, अदाणी के विविध कारोबारों वाले समूह की वृद्धि 123 प्रतिशत की मौजूदा औसत वार्षिक दर से जारी रही तो वह वर्ष 2028 तक दुनिया के दूसरे ट्रीलिनियर बन सकते हैं। अदाणी इस समय 100 अरब डॉलर से कुछ कम की संपत्ति के साथ दुनिया के धनी लोगों की सूची में 13वें स्थान पर हैं।

भारत घरेलू उद्योगों के अनुरूप विभिन्न देशों के साथ एफटीए में बदलाव कर रहाः जितिन

भाषा। नई दिल्ली

भारत घरेलू उद्योगों को लाभ पहुंचाने के लिए दक्षिण कोरिया, मलेशिया और विभिन्न अन्य आसियान देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) को संशोधित कर रहा है। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री जितिन प्रसाद ने सोमवार को यहां एसीएमए (वाहन कलपुर्जो विनिर्माता संघ) के 64वें वार्षिक सत्र में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि ब्रिटेन और यूरोपीय संघ के साथ एफटीए का नेतृत्व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कर रहे हैं। मंत्री ने कहा, यह (एफटीए) वाहन कलपुर्जा उद्योग के लिए बड़ी भूमिका निभाएगा। उन्होंने आगे कहा, हम दक्षिण कोरिया, मलेशिया और आसियान देशों के साथ अपने एफटीए को संशोधित कर रहे हैं, जो हमारे उद्योग की मांगों के अनुरूप होंगे। प्रसाद ने वाहन कलपुर्जा उद्योग से अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों में निवेश बढ़ाने का भी आग्रह किया। उन्होंने कहा, हम अनुसंधान एवं विकास में पर्याप्त निवेश नहीं कर रहे हैं। मेरा अनुमान है कि यह निवेश किए जा रहे राजस्व का एक प्रतिशत है। इस दिशा में निवेश बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने निर्यात को बढ़ावा देने, आयात पर निर्भरता कम करने और वृद्धि सुनिश्चित करने के महत्व पर भी जोर दिया।

जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को बहाल किया जाएगा, भले ही इसमें सालों लग जाएं : फारूक

भाषा। श्रीनगर

नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने सोमवार को कहा कि अनुच्छेद 370 की बहाली की मांग जम्मू-कश्मीर के लोगों की आवाज है और पूर्ववर्ती राज्य के विशेष प्रावधान को निश्चित रूप से बहाल किया जाएगा, भले ही इसमें कई साल लग जाएं। अब्दुल्ला की इस टिप्पणी से एक दिन पहले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि जब तक भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सत्ता में है, तब तक अनुच्छेद 370 को बहाल करना असंभव है। अब्दुल्ला ने बारामूला जिले में संवाददाताओं से कहा, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि उन्हें (भाजपा को) इसे रद्द करने में कितने साल लगे? हमें इसे बहाल करने में कई साल लग सकते हैं, लेकिन हम इसे निश्चित रूप से बहाल करेंगे। यह पूरे जम्मू-कश्मीर की आवाज है, यह लोगों की आवाज है। नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष ने जम्मू क्षेत्र में हाल में हुए आतंकवादी हमलों का जिक्र करते हुए कहा कि भाजपा ने दावा किया था कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद का मूल कारण अनुच्छेद 370 है, लेकिन इसे रद्द किए जाने के बाद भी हमले हो रहे हैं। उन्होंने कहा, उनका कहना था कि अनुच्छेद 370 की वजह से आतंकवाद है...मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि फिर यह आतंकवाद कहां से आ रहा है? उन्हें जवाब देना चाहिए। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में जो कुछ भी हो रहा है उसके लिए नई दिल्ली जिम्मेदार है। उन्होंने कहा, उस आईसी814 विमान अपहरण के लिए कौन जिम्मेदार है, जिसे कंधार ले जाया गया था? (जैश-ए-मोहम्मद प्रमुख मसूद) अजहर जैसे लोग, जो वहां हैं और अब सब कुछ संचालित कर रहे हैं, मैंने उनसे (नई दिल्ली से) कहा था कि उन्हें (इन आतंकवादियों को) न छोड़ें, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी। यहां जो कुछ भी हो रहा है, उसके लिए नई दिल्ली जिम्मेदार है। कांग्रेस नेता विकार रसूल वानी ने टिप्पणी की थी कि नेशनल कांफ्रेंस ने लोगों का खून चूसा है। इस बारे में सवाल किए जाने पर अब्दुल्ला ने कहा कि इससे गठबंधन पर कोई असर नहीं पड़ेगा। अब्दुल्ला की पार्टी ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव से पूर्व कांग्रेस के साथ गठबंधन किया है। उन्होंने कहा, उन्हें जो कहना है कहने दीजिए।

सरकार के साथ बातचीत से कभी पीछे नही हटेः मीरवाइज नीत हुर्रियत

श्रीनगर। मीरवाइज उमर फारूक के नेतृत्व वाली हुर्रियत कांफ्रेंस ने सोमवार को कहा कि वह सरकार के साथ बातचीत से कभी पीछे नहीं हटी है, क्योंकि उसका मानना है कि जम्मू-कश्मीर में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए बातचीत ही एकमात्र रास्ता है।हुर्रियत ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा रविवार को की गई टिप्पणी पर प्रतिक्रिया दी है। सिंह ने कहा था कि 2016 में हिज्बुल मुजाहिदीन कमांडर बुरहान वानी के मारे जाने के पश्चात भड़की हिंसा के बाद, केंद्रीय गृह मंत्री के तौर पर उन्होंने अलगाववादियों से मिलने के लिए संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया था, लेकिन अलगाववादियों ने अपने दरवाजे बंद कर लिए थे।जम्मू क्षेत्र के रामबन में एक चुनावी रैली में सिंह ने कहा, मैंने हुर्रियत कांफ्रेंस से मुलाकात के लिए संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया क्योंकि हम शांति बहाली के वास्ते उनसे बातचीत के लिए तैयार थे। शरद यादव अन्य लोगों के साथ हुर्रियत नेताओं से मिलने गए, लेकिन उन्होंने अपने दरवाजे बंद कर लिए। लोग निर्दोष और नाबालिग बच्चों के खिलाफ दर्ज मामलों को वापस लेने की मांग कर रहे थे और मैंने (तत्कालीन मुख्यमंत्री) महबूबा से बात की और उनसे बच्चों को रिहा करने को कहा। हमने सब कुछ किया, लेकिन जिस तरह से उन्हें (हुर्रियत नेताओं को) जवाब देना चाहिए था, उन्होंने ऐसा नहीं किया। एक बयान में हुर्रियत ने कहा, रिकॉर्ड को दुरुस्त करने के लिए कुछ तथ्यों को दोहराए जाने की जरूरत है। हुर्रियत ने कहा, सितंबर 2016 में मीरवाइज चश्माशाही उप-जेल में हिरासत में थे। जेल अधिकारियों ने उन्हें महबूबा मुफ्ती का एक पत्र सौंपा था, जो उन्होंने पीडीपी अध्यक्ष के तौर पर लिखा था, न कि मुख्यमंत्री के तौर पर। इसमें उनसे गुजारिश की गई थी कि वह विपक्षी सांसदों के प्रतिनिधिमंडल से मिलें और उनसे बात करें। दौरे पर आए विपक्षी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य एवं एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी उप-जेल में मीरवाइज से मिलने आए थे ।

क्विक न्यूज

भारत को 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा के लिए 30 लाख करोड़ रुपए निवेश की जरूरत

गांधीनगर। भारत को 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा के लक्ष्य को हासिल करने के लिए 30 लाख करोड़ रुपए के निवेश की जरूरत है। केंद्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री प्रल्हाद जोशी ने सोमवार को यह बात कही। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नवीकरणीय ऊर्जा के लिए एक वैश्विक शिखर सम्मेलन - चौथा रि-इनवेस्ट 2024 का उद्घाटन करेंगे। जोशी ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा निवेशक सम्मेलन और प्रदर्शनी (रि-इनवेस्ट) का चौथा संस्करण 16 से 18 सितंबर तक गांधीनगर के महात्मा मंदिर सम्मेलन और प्रदर्शनी केंद्र में आयोजित किया जाएगा। उन्होने कहा कि भारत को 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के लिए 30 लाख करोड़ रुपए के निवेश की जरूरत है। इससे पहले यह सम्मेलन तीन बार आयोजित किया गया है, जिनमे एक वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए और दो नई दिल्ली में आयोजित किए गए थे। इस बार सम्मेलन का आयोजन गुजरात में किया जा रहा है।

भारत, जापान वित्तीय सहयोग बढ़ाने, द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर सहमत

नई दिल्ली। भारत और जापान ने वित्तीय सहयोग बढ़ाने और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर सहमति जताई है। वित्त मंत्रालय ने सोमवार को बयान मे यह जानकारी दी। आधिकारिक बयान के मुताबिक, टोक्यो मे आयोजित दूसरे भारत-जापान वित्त संवाद में दोनों देशों ने वित्तीय संबंधों की मजबूती पर चर्चा की। इस दौरान दोनों देशों ने एक-दूसरे की वृहद-आर्थिक स्थिति पर अपनी राय से भी अवगत कराया। वित्त मंत्रालय ने कहा कि इस बैठक मे भारत और जापान ने अन्य देशों मे सहयोग, द्विपक्षीय सहयोग और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा की। प्रतिभागियों ने विनियमन एवं निगरानी, वित्तीय डिजिटलीकरण और दोनों देशों में अन्य नीतिगत पहल सहित वित्तीय क्षेत्र के मुद्दों पर विचार साझा किए। बैठक मे दोनों देशों के प्रतिनिधियों के साथ जापान के वित्तीय सेवा उद्योग के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। इस दौरान भारत में निवेश बढ़ाने से संबंधित विभिन्न वित्तीय नियामकीय मुद्दों पर चर्चा की गई। बयान के मुताबिक, दोनों पक्ष वित्तीय सहयोग को बढ़ावा देने और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए चर्चा जारी रखने पर सहमत हुए और वार्ता का अगला दौर नई दिल्ली में आयोजित करने की संभावना पर रजामंदी जताई। दूसरा भारत-जापान वित्त संवाद टोक्यो में छह सितंबर को आयोजित किया गया।

रांची से 13 वर्षीय लड़की को लखनऊ ले जाकर ट्रक चालक ने किया दुष्कर्म

रांची। रांची से 13 वर्षीय एक लड़की को कथित तौर पर ट्रक से लखनऊ ले जाया गया और रास्ते में ट्रक चालक ने कई बार उससे दुष्कर्म किया तथा बाद में उसे सड़क किनारे छोड़ दिया। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि रविवार को रांची के तमार थाने में मामला दर्ज किए जाने के बाद दो लोगों को गिरफ्तार किया गया। लड़की के परिजनों ने बताया कि वह 16 अगस्त को स्कूल से वापस नही लौटी, जिसके बाद उन्होंने गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई। तमार थाने के प्रभारी रोशन कुमार के अनुसार, लड़की ने जांचकर्ताओं को बताया कि 16 अगस्त को उसका एक परिचित युवक उसे बुंडू बस स्टैंड लेकर गया और बाद में उसे एक अन्य युवक पटना ले गया, जिसे वह जानती थी। थाना प्रभारी ने लड़की के बयान का हवाला देते हुए कहा, दूसरे युवक ने उसे पटना मे एक ट्रक चालक के पास छोड़ दिया और भाग गया। ट्रक चालक ने कथित तौर पर उसके साथ दुष्कर्म किया और उसे लखनऊ में सड़क किनारे छोड़ दिया। उन्होंने कहा, हमने रविवार को दर्ज प्राथमिकी के आधार पर दो लोगों को गिरफ्तार किया है। उसके बयान में कई कड़ियां गायब है। हम विभिन्न तरीकों से उन्हे जोड़ने का प्रयास कर रहे है।

नासा ने पृथ्वी-अवलोकन डेटा उपलब्ध कराने के लिए भारतीय कंपनी से अनुबंध किया

नई दिल्ली। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने पृथ्वी-अवलोकन डेटा और सेवाएं प्राप्त करने के वास्ते एक नए अनुबध के लिए भारतीय निजी अंतरिक्ष यान कंपनी पिक्सल को चुना है। पृथ्वी अवलोकन और हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग मे विशेषज्ञता रखने वाली पिक्सल कंपनी नासा के 47.6 करोड़ अमेरिकी डॉलर के कमर्शियल स्मॉलसैट डेटा एक्विजिशन प्रोग्राम ऑन-रैंप। मल्टीपल अवार्ड अनुबंध के लिए चुनी गई आठ कंपनियों में से एक है। इस अनुबंध के तहत ए कंपनियां अमेरिकी एजेंसी की अनुसंधान एवं अनुप्रयोग गतिविधियों को समर्थन देने के लिए वाणिज्यिक स्रोतों से नासा को पृथ्वी अवलोकन डेटा उपलब्ध कराएंगी, जिससे धरती पर जीवन को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। नासा ने एक बयान में कहा, अनुबंध का लक्ष्य नासा को एजेंसी और अमेरिका की अन्य सरकारी तथा अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा प्राप्त पृथ्वी अवलोकन को बढ़ाने या पूरक बनाने के वास्ते सभी के लाभ के लिए एक किफायती तरीका प्रदान करना है।

स्टोवक्राफ्ट सेहत का रखेगा ध्यान

नोएडा। घरेलू और रसोई समाधानों में अग्रणी स्टोवक्राफ्ट, अपनी नवीनतम पेशकश, पिजन एयरफ्यूजन एयर-फ्रायर रोटिसरी ओवन के की घोषणा करते हुए उत्साहित है। यह अत्याधुनिक उपकरण एक रसोई पावरहाउस है, जो एक एयर फ्रायर और एक ओटीजी की कार्यक्षमताओं का संयोजन करता है, जो उन्नत रोटिसरी क्षमताओं से परिपूर्ण है और एक कॉम्पैक्ट डिजाइन में उपलब्ध है। अपनी 12-लीटर बड़ी क्षमता के साथ, एयरफ्यूजन स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भारतीय परिवारों और गुणवत्ता से समझौता किए बिना बहुमुखी प्रतिभा और सुविधा चाहने वाले पाक प्रेमियों के लिए तैयार किया गया है। इस अवसर पर, राजेंद्र गांधी, स्टोव क्राफ्ट लिमिटेड के प्रबंध निदेशकने कहा, हम अपने ग्राहकों के लिए इनोवेटिव एयरफ्यूजन पेश करने के लिए उत्साहित हैं। यह उपकरण नवाचार, गुणवत्ता और स्वास्थ्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। इसे स्वादिष्ट, तेल-मुक्त भोजन प्रदान करते हुए खाना पकाने को सरल बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे यह एक हर रसोई में जरूरी चीज बन गई है। एयरफ़्यूज़न 9 आसान प्री-सेट कुकिंग रेसिपी के साथ आता है, जैसे फ्रेंच फ्राइज़, पिज़्ज़ा, बेकिंग, रोटिसरी और डिहाइड्रेटर7 एयरफ्यूजन अब पूरे भारत में 75000 से अधिक रिटेल स्टोर्स, 200 से अधिक पिजन एक्सक्लूसिव रिटेल आउटलेट्स, अमेज़न, फ्लिपकार्ट आदि पर खरीदने के लिए उपलब्ध है।

85 प्रतिशत युवा सुबह थकान का अनुभव करते है

आगरा। सुप्राडिन बायर्स कंज्यूमर हेल्थ डिविजन का भारत का अग्रणी मल्टी विटामिन ब्रैंड ने 10 शहरों में सुप्राडिन फटीग सर्वे किया था। इस सर्वे के तहत किये गये अध्ययन में पता चला कि भारत के 85 प्रतिशत युवा जब सोकर उठते हैं तो उन्हें थकान महसूस होती है। इस स्टडी में और भी कुछ चौंकाने वाले परिणाम मिले हैं। यह सर्वे नेशनल न्यूट्रीशन वीक में जारी किया गया और वन नेशन 100 प्रतिशत न्यूट्रीशन के लिये सुप्राडिन के मिशन को आगे बढ़ाता है। इसका लक्ष्य पोषण की बढ़ती कमी पर जागरूकता पैदा करना और लोगों के बीच खुद की देखभाल को बढ़ावा देना है। बायर कंज्यूमर हेल्थ डिविजिन में भारत, बांग्लादेश और श्रीलंका के कंट्री हेड संदीप वर्मा ने इस सर्वे के नतीजों पर अपनी बात रखते हुए कहा कि सुप्राडिन ने पोषण पर बातचीत को बढ़ावा दिया है और हम सूक्ष्म.पोषकतत्वों की कमी को दूर करने के महत्व की जमकर हिमायत करते रहे हैं। हमारा सुप्राडिन फटीग सर्वे कामकाजी लोगों के बीच थकान की अधिकता बताता है और इससे उनकी उत्पादकता पर सीधा असर होता है। प्रोफेसर डॉ केतन के मेहता सीनियर कंसल्टेन्ट फिजिशियन, कार्डियोपल्मोनोलॉजिस्ट एण्ड डायबिटोलॉजिस्ट मुबंई ने कहा कि देश के युवाओं में बढ़ती थकान हमारे देश के लिये एक बड़ी चिंता का विषय ह, और कई डॉक्टरों ने इस पर गौर किया है।

भारत जल्द से जल्द चाहता है इजराइल और फलस्तीन के बीच युद्धविराम : जयशंकर

भाषा। रियाद

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने गाजा में मौजूदा स्थिति को भारत की सबसे बड़ी चिंता बताते हुए सोमवार को कहा कि भारत इस क्षेत्र में जल्द से जल्द संघर्ष विराम का समर्थन करता है। गाजा पट्टी में इजराइल और हमास के बीच पिछले 11 महीनों से युद्ध जारी है। जयशंकर ने सऊदी अरब की राजधानी में रणनीतिक वार्ता के लिए पहली भारत-खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) मंत्रिस्तरीय बैठक में यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा, गाजा की वर्तमान स्थिति अब हमारी सबसे बड़ी चिंता है। इस संबंध में

●विदेश मंत्री ने भारत-खाड़ी सहयोग परिषद मंत्रिस्तरीय बैठक में यह टिप्पणी की

भारत का रुख सैद्धांतिक और एक समान रहा है। हम आतंकवाद और बंधक बनाने की घटनाओं की निंदा करते हैं, लेकिन निर्दोष नागरिकों की लगातार हो रही मौतों से हमें गहरा दुख है। जयशंकर ने कहा कि किसी भी कार्वाई में मानवीय कानून के सिद्धांतों को ध्यान में रखना चाहिए। उन्होंने कहा, हम जल्द से जल्द युद्ध विराम का समर्थन करते हैं। पिछले साल सात अक्टूबर को गाजा पट्टी पर शासन करने वाले हमास ने इजराइल पर हमला किया, जिसमें 1,200 लोग मारे गए और 250 अन्य का अपहरण कर लिया गया। स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, इजराइल ने गाजा में हमले किए, जिससे व्यापक तबाही हुई और लगभग 40,000 लोग मारे गए। जयशंकर ने कहा कि भारत लगातार दो-राष्ट्र समाधान के माध्यम से फलस्तीनी मुद्दे के समाधान के लिए खड़ा है। उन्होंने कहा कि भारत ने फलस्तीनी संस्थानों और क्षमताओं के निर्माण में भी योगदान दिया है। विदेश मंत्री ने कहा, जहां तक मानवीय स्थिति का सवाल है, हमने राहत प्रदान की है तथा संयुक्त राष्ट्र राहत और कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) को अपना सहयोग बढ़ाया है। जीसीसी एक प्रभावशाली समूह है, जिसमें संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, बहरीन, ओमान, कतर और कुवैत शामिल हैं। वित्त वर्ष 2022-23 में जीसीसी देशों के साथ भारत का कुल व्यापार 184.46 अरब अमेरिकी डॉलर रहा। जयशंकर ने कहा कि रणनीतिक वार्ता के लिए पहली भारत-जीसीसी मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेना उनके लिए बहुत खुशी की बात है। उन्होंने कहा कि यह बैठक न केवल उपलब्धियों पर विचार करने का अवसर है, बल्कि भविष्य के लिए एक महत्वाकांक्षी और दूरगामी मार्ग तैयार करने का अवसर भी है। उन्होंने कहा, भारत और जीसीसी के बीच संबंध इतिहास, संस्कृति और साझा मूल्यों के समृद्ध ताने-बाने में निहित हैं।

इजराइल ने सीरिया में भीषण गोलीबारी की, 18 लोगों की मौत, 40 घायल

भाषा। दमिश्क,

इजराइल ने रविवार देर रात सीरिया के कई इलाकों में हमले किए जिसमें कम से कम 18 लोगों की मौत हो गई जबकि 40 से अधिक लोग घायल हो गए। सरकारी मीडिया ने इसकी जानकारी दी। सीरिया की सरकारी समाचार एजेंसी सना ने बताया कि रविवार देर रात मध्य सीरिया के कई इलाकों में इजराइली हमले हुए, जिसके बाद हमास प्रांत में एक राजमार्ग क्षतिग्रस्त हो गया और आग लग गई, जिसके बाद सोमवार सुबह दमकलकर्मी आग पर काबू करने के लिए जूझते दिखे। पश्चिमी हमास प्रांत के मस्याफ नेशनल हॉस्पिटल द्वारा दी गई शुरुआती रिपोर्ट के अनुसार मरने वालों की संख्या चार

थी। अस्पताल प्रमुख फैसल हैदर के हवाले से सना ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि मरने वालों की संख्या 14 हो गई है जबकि 40 अन्य घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। ब्रिटेन से संचालित युद्ध निगरानी संस्था सीरियन ऑब्सर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स की रिपोर्ट के अनुसार एक हमले में मस्याफ में एक वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र और उन अन्य स्थलों को निशाना बनाया गया जहां ईरानी मिलीशिया और विशेषज्ञ सीरिया में हथियार विकसित करने के लिए ठहरे थे। स्थानीय मीडिया ने तटीय शहर टार्टस के आसपास भी हमले की सूचना दी। इजराइल की सेना की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। इजराइल ने हाल के वर्षों में युद्धग्रस्त सीरिया के सरकारी नियंत्रण वाले हिस्सों में सैकड़ों हमले किए हैं, लेकिन उसने कभी इन हमलों को स्वीकार नहीं किया है। ए हमले अक्सर सीरियाई सेना या ईरान समर्थित समूहों को निशाना बनाकर किए जाते हैं।

खैबर पख्तूनख्वा में विस्फोट में छह लोग घायल

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत उत्तर-पश्चिमी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम से जुड़े कार्यकर्ताओं को ले जा रहे एक वाहन को निशाना बनाकर किए गए बम विस्फोट में तीन पुलिसकर्मियों सहित कम से कम छह लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। विस्फोट के कारण दक्षिणी वजीरिस्तान जिले के वाना कस्बे में तीन पोलियो कार्यकर्ता और तीन पुलिसकर्मी घायल हो गए। घायलों को तुरंत अस्पताल ले जाया गया और उनकी हालत स्थिर बताई गई है। पुलिस की टुकड़ियां विस्फोट स्थल पर पहुंची और आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए तलाशी अभियान चलाया। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में पिछले 16 वर्षों में पोलियो का पहला मामला में पिछले सप्ताह दर्ज किया, जो देश से इस घातक वायरस को खत्म करने के राष्ट्रीय प्रयासों के लिए एक झटका है। पाकिस्तान में 2021 में पोलियो का केवल एक मामला सामने आया था। इस साल अब तक बलूचिस्तान से 12, सिंध से तीन और पंजाब और इस्लामाबाद से एक-एक मामला सामने आने की खबर है।

पाकिस्तान में भीड़ के साथ झड़प में 13 पुलिसकर्मी घायल

कराची। पाकिस्तान में सिंध प्रांत के बादिन जिले में एक युवक के लापता होने के विरोध मे प्रदर्शन कर रही भीड़ के साथ झड़प में कम से कम 13 पुलिसकर्मी घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी।यह घटना शनिवार को अल्लाह खान मगसी गांव में घटी।पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, पुलिसकर्मी उस समय घायल हो गए जब उन्होंने मगसी कबीले के गुस्साए आदिवासियों की भीड़ को तितर-बितर करने की कोशिश की जो अपने समुदाय के एक युवक के लापता होने को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। युवक को पुलिस ने मोटरसाइकिल चोरी के सिलसिले में पकड़ा था और शनिवार को वह हवालात से गायब हो गया।भीड़ उस समय हिंसक हो गई जब पुलिस ने दावा किया कि युवक को हथियारबंद लोगों के एक समूह ने मुक्त करा दिया था और वे उसे अपने साथ ले गए।वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जुबैर अहमद ने कहा, भीड़ ने पुलिस पर ईंटों और लाठियों से हमला किया और उन्होंने पुलिस थाने तथा थाने में खड़े वाहनों को भी नुकसान पहुंचाया। उन्होंने बताया कि जब पुलिस ने लोगों की भीड़ को तितर-बितर करने की कोशिश की तो झड़प में 13 पुलिसकर्मी घायल हो गए और उन्हें अस्पताल भेजा गया है।

महाराजा चार्ल्स ने महारानी एलिजाबेथ की पुण्यतिथि पर गिरजाघर में प्रार्थना की

लंदन। महाराजा चार्ल्स तृतीय ने अपनी मां महारानी एलिजाबेथ द्वितीय की पुण्यतिथि के अवसर पर रविवार को स्कॉटलैंड के रॉयल बाल्मोरल एस्टेट के पास गिरजाघर में प्रार्थना की। चार्ल्स (75) और उनकी पत्नी कैमिला गर्मियों की छुट्टियां स्कॉटिश हाइलैंड्स में बिता रहे हैं, जहां दिवंगत महारानी का आठ सितंबर, 2022 को 96 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। चार्ल्स और कैमिला को महारानी की दूसरी बरसी पर क्रैथी किर्क के छोटे से ग्रेनाइट गिरजाघर में रविवार को सुबह की प्रार्थना के लिए आते देखा गया। चार्ल्स अपनी मां की मृत्यु के बाद दो वर्ष पहले राजगद्दी पर बैठे थे।

सुनवाई उच्च न्यायालय में स्थानांतरित कराने में विफल रहे नेता प्रतिपक्ष

सिंगापुर। सिंगापुर के भारतीय मूल के नेता प्रतिपक्ष प्रीतम सिंह एक संसदीय समिति से झूठ बोलने के आरोपों पर मुकदमे की सुनवाई सोमवार को उच्च न्यायालय में कराने में विफल रहे। उनके वकीलों ने उनके मामले की तुलना भारतीय मूल के पूर्व परिवहन मंत्री एस ईश्वरन के मामले से की। वर्कर्स पार्टी (डब्ल्यूपी) के 48 वर्षीय प्रमुख पर नवंबर 2021 में एक विशेषाधिकार समिति की बैठक में झूठ बोलने के दो आरोप है। मामला सिंह की पार्टी की पूर्व सांसद रईसा खान से जुड़े झूठ बोलने के विवाद से संबंधित है।

जयशंकर ने खाड़ी देशों के विदेश मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय बैठकें की

भाषा। रियाद

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोमवार को खाड़ी देशों के अपने समकक्षों के साथ बैठकें कीं जिस दौरान उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति की समीक्षा की तथा उन्हें और अधिक गहरा करने के तरीकों पर विचार-विमर्श किया। जयशंकर भारत-खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के विदेश मंत्रियों की पहली बैठक में शामिल होने के लिए तीन देशों की यात्रा के पहले चरण में रविवार को सऊदी अरब की राजधानी पहुंचे। जीसीसी एक प्रभावशाली समूह है जिसमें संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, सऊदी अरब, ओमान, कतर और कुवैत शामिल हैं। जीसीसी देशों के साथ भारत का कुल व्यापार 2022-23 में 184.46 अरब

डॉलर रहा। जयशंकर ने सोमवार को कतर के प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान बिन जासिम अल सानी से मुलाकात की जो विदेश मंत्री का प्रभार भी संभाल रहे हैं।उन्होंने एक्स पर लिखा, कतर के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान बिन जासिम अल सानी से अच्छी मुलाकात के साथ दिन की शुरुआत की। भारत-कतर के द्विपक्षीय रिश्तों को आगे बढ़ाने पर विचार-विमर्श किया। क्षेत्रीय घटनाक्रमों पर उनके दृष्टिकोण तथा आकलन की सराहना करता हूं। जयशंकर ने सऊदी अरब के विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान अल सऊद के साथ द्विपक्षीय बैठक की और द्विपक्षीय रिश्तों में प्रगति पर चर्चा की।उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, सऊदी अरब के विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान से आज रियाद में मुलाकात की। हमारे द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति का जायजा लिया और वैश्विक एवं क्षेत्रीय मुद्दों पर अपने दृष्टिकोण साझा किए। जयशंकर ने रियाद में ओमान के विदेश मंत्री बद्र अलबुसईदी से भी मुलाकात की और उन्होंने द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने बहरीन के विदेश मंत्री अब्दुल लतीफ बिन राशिल अल जयानी से भी मुलाकात की। उन्होंने एक्स पर एक अन्य पोस्ट में कहा, बहरीन के विदेश मंत्री डॉ अब्दुल लतीफ बिन राशिद अल जयानी से मुलाकात करके खुश हूं। हमारे रिश्ते और बहरीन में भारतीय समुदाय के योगदान पर उनके सकारात्मक मूल्यांकन की प्रशंसा करता हूं। विदेश मंत्री ने कुवैत के अपने समकक्ष अब्दुल्ला अली अल-याहया से भी द्विपक्षीय मुलाकात की। उन्होंने लिखा, कुवैत के विदेश मंत्री अब्दुल्ला अली अल-याहया से एक बार फिर मिलकर प्रसन्न हूं। कुवैत में पिछले दिनों हमारी कारगर बैठक को याद किया। हमारे संयुक्त आयोग की एक बैठक जल्द करके भारत-कुवैत द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने पर चर्चा की। नई दिल्ली में विदेश मंत्रालय ने जयशंकर की यात्रा शुरू होने से पहले शनिवार को कहा था कि भारत और जीसीसी के गहन और बहुआयामी संबंध हैं जिनमें व्यापार और निवेश तथा ऊर्जा के क्षेत्र, सांस्कृतिक तथा लोगों के संबंध शामिल हैं।

लंदन में अफगानिस्तान का दूतावास बंद होगा

लंदन। ब्रिटेन सरकार ने सोमवार को कहा कि लंदन स्थित अफगानिस्तान के दूतावास को बंद किया जा रहा है, क्योंकि देश के तालिबान शासकों ने इसे मान्यता नहीं दी है। ब्रिटेन के विदेश कार्यालय ने कहा, तालिबान द्वारा अपने कर्मचारियों को बर्खास्त करने के बाद दूतावास को बंद किया जा रहा है। ब्रिटेन तालिबान सरकार को मान्यता नहीं देता है। राजदूत जल्मई रसूल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि दूतावास मेजबान देश के आधिकारिक अनुरोध पर 27 सितंबर को अपना कार्यालय बंद कर देगा। न तो ब्रिटिश सरकार और न ही राजदूत ने बताया कि दूतावास के कर्मचारियों का क्या होगा। अफगानिस्तान में अगस्त 2021 में तालिबान सत्ता पर काबिज हुआ। यूरोप और उसके बाहर कई दूतावासों ने काम जारी रखा लेकिन अफगानिस्तान ने उन पर तालिबान सरकार के साथ सहयोग नहीं करने का आरोप लगाया है।

भाजपा और आरएसएस चाहते हैं महिलाएं घर पर रहें : राहुल गांधी

भाषा। वाशिंगटन

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने टेक्सास में भारतीय-अमेरिकी समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय राजनीति में प्रेम, सम्मान और विनम्रता का अभाव है। उन्होंने साथ ही आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) चाहते हैं कि महिलाएं घर पर ही रहें। राहुल ने लोकसभा में विपक्ष का नेता बनने के बाद भारतीय प्रवासी समुदाय के साथ अपने पहले संवाद के दौरान डलास में रविवार को ए टिप्पणियां कीं।गांधी ने एक अन्य कार्यक्रम में कहा कि महिलाओं के प्रति भारतीय पुरुषों के रवैए में बदलाव की जरूरत है। गांधी (54) ने कहा कि वह महिला आरक्षण विधेयक समेत राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के समर्थक हैं। गांधी ने कहा कि अगर महिलाएं कोई व्यवसाय शुरू करना चाहती हैं तो उन्हें आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए और उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए, जैसा पुरुषों के साथ किया जाता है। कांग्रेस नेता ने कहा, भाजपा और आरएसएस का मानना है कि महिलाओं को एक खास भूमिका तक ही सीमित रखा जाना चाहिए।

राहुल गांधी कोई पप्पू नहीं हैं : सैम पित्रोदा

वाशिंगटन। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सैम पित्रोदा ने कहा है कि विपक्ष के नेता राहुल गांधी कोई पप्पू नहीं है और भारतीय जनता पार्टी जो प्रचार करती है उसके विपरीत वह उच्च शिक्षित, पढ़े-गुने और रणनीतिकार हैं। इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष पित्रोदा ने रविवार को डलास में टेक्सास विश्वविद्यालय में छात्रों को पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष का परिचय देते हुए यह टिप्पणी की।पित्रोदा ने कहा, उनके (गांधी के) पास एक ऐसा दृष्टिकोण है जो भाजपा द्वारा लाखों-करोड़ों रुपए खर्च करके प्रचारित किए जाने वाले दृष्टिकोण से बिलकुल अलग है। मै आपको बता दूं कि वह कोई पप्पू नहीं है। वह उच्च शिक्षित, पढ़े-गुने, किसी भी विषय पर गहन सोच रखने वाले रणनीतिकार है। अमेरिका की यात्रा पर गए गांधी को उनके विरोधी कई वर्षों से पप्पू कहकर संबोधित करते रहे है।

चीन ने रूस के साथ संयुक्त नौसैनिक और वायुसैनिक अभ्यास का ऐलान किया

बीजिंग। चीन के रक्षा मंत्रालय ने सोमवार को इस महीने रूस के साथ संयुक्त नौसैनिक और वायुसैनिक अभ्यास करने का ऐलान किया जो उनकी सेनाओं के बीच घनिष्ठता को रेखांकित करता है। इस बीच रूस यूक्रेन पर अपने आक्रमण पर जोर दे रहा है। मंत्रालय ने कहा कि नॉर्दर्न यूनाइटेड-2024 अभ्यास जापान सागर और सुदूर उत्तर में स्थित ओखोटस्क सागर में होगा, लेकिन कोई विवरण नहीं दिया गया है। इसमें कहा गया है कि नौसैनिक और हवाई अभ्यास का उद्देश्य दोनों देशों के बीच रणनीतिक सहयोग में सुधार करना और सुरक्षा खतरों से संयुक्त रूप से निपटने की उनकी क्षमता को मजबूत करना है। मंत्रालय के बयान में यह भी कहा गया है कि दोनों नौसेनाएं पांचवीं बार प्रशांत महासागर में एक साथ उतरेंगी और रूस के ग्रेट ओशन-24 अभ्यास में एक साथ भाग लेंगी।

वियतनाम में तूफान से मरने वालों की संख्या हुई 59

भाषा। हनोई

● बाढ़ के पानी में बही बस

उत्तरी वियतनाम में तूफान के कारण हुई अधिक बारिश के चलते सोमवार को बाढ़ आ गई, जिसमें एक पुल टूट गया और एक बस बह गई। सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी। सरकारी मीडिया के अनुसार दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश में इस प्राकृतिक आपदा में 59 लोगों की जान जा चुकी है। वियतनाम में शनिवार को आए तूफान में नौ लोगों की मौत हो गई और इसके परिणामस्वरूप आई बाढ़ और भूस्खलन के दौरान 50 अन्य लोगों की जान जा चुकी है। उत्तरी वियतनाम में कई नदियों का जल स्तर खतरनाक स्तर पर है। सोमवार सुबह पहाड़ी काओ बांग प्रांत में भूस्खलन के कारण 20 लोगों को ले जा रही एक यात्री बस बाढ़ के पानी में बह गई, जिसके बाद बचाव दल को तैनात किया गया, लेकिन भूस्खलन के कारण घटनास्थल तक जाने का रास्ता अवरुद्ध हो गया। फु थो प्रांत में सोमवार सुबह एक स्टील का पुल ध्वस्त हो गया, जिसके बाद बचाव अभियान जारी है। खबरों के अनुसार 10 कार और ट्रक तथा दो मोटसाइकिल नदी में गिर गईं। तीन लोगों को नदी से बाहर निकाल कर अस्पताल में भर्ती कराया गया है, लेकिन 13 अन्य लापता हैं।

अमेरिका और भारत का तीसरा इंडस-एक्स सम्मेलन सोमवार से शुरू होगा

वाशिंगटन। इंडस-एक्स के दो दिवसीय शिखर सम्मेलन का तीसरा संस्करण सोमवार को शुरू होगा, जिसमें भारत और अमेरिका रक्षा नवाचार में साझेदारी को मजबूत करने के तरीकों पर विचार करेंगे। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में यह बात कही गई। यूएस-इंडिया स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप फोरम की एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि भारत-अमेरिका डिफेंस एक्सिलरेशन इकोसिस्टम (इंडस-एक्स) शिखर सम्मेलन 9-10 सितंबर को कैलिफोर्निया के पालो ऑल्टो में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में आयोजित किया जाएगा। विज्ञप्ति के अनुसार सम्मेलन में वाशिंगटन और नई दिल्ली के प्रमुख रक्षा नीति निर्माता एक साथ जुटेंगे और रक्षा नवाचार क्षेत्र को आगे बढ़ाने में निजी पूंजी की महत्वपूर्ण भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

दिल का दौरा और हृदय गति रुकने में क्या अंतर है?

भाषा। गोल्ड कोस्ट

जुलाई 2023 में, उभरते हुए अमेरिकी बास्केटबॉल स्टार ब्रॉनी जेम्स अभ्यास के दौरान कोर्ट में ही गिर पड़े और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। प्रसिद्ध एलए लेकर्स के खिलाड़ी रहे लेब्रोन जेम्स के बेटे 18 वर्षीय एथलीट को हृदय गति रुकने की स्थिति का सामना करना पड़ा था।कई मीडिया संस्थानों ने इस घटना को गलत तरीके से दिल का दौरा कहा या इन शब्दों का परस्पर प्रयोग किया।हृदय गति रुकना और दिल का दौरा, हृदय से जुड़ी अलग-अलग लेकिन परस्पर-संबंधित अवधारणाएं हैं।हृदय किस प्रकार काम करता है, इसकी कुछ पृष्ठभूमि जानने के बाद हम देख सकते हैं कि वे किस प्रकार भिन्न हैं तथा किस प्रकार संबंधित हैं।

हृदय को समझना-हृदय एक मांसपेशी है जो पंप के रूप में काम करने के लिए सिकुड़ती है। जब यह सिकुड़ती है तो यह रक्त को - जिसमें ऑक्सीजन और पोषक तत्व होते हैं - हमारे शरीर के सभी ऊतकों तक पहुंचाती है। हृदय की मांसपेशियों को पंप के रूप में प्रभावी ढंग से काम करने के लिए, उसे कोरोनरी धमनियों द्वारा पहुंचाई जाने वाली रक्त आपूर्ति की आवश्यकता होती है। यदि ए धमनियां अवरुद्ध हैं, तो हृदय की मांसपेशियों को आवश्यक रक्त नहीं मिल पाता।इससे हृदय की मांसपेशी घायल हो सकती है या मर सकती है, और परिणामस्वरूप हृदय ठीक से पंप नहीं कर पाता।दिल का दौरा या हृदय गति रुकना ?सरल शब्दों में कहें तो, दिल का दौरा, जिसे तकनीकी रूप से मायोकार्डियल इन्फार्क्शन कहा जाता है, हृदय की मांसपेशी में चोट लगने या उसकी मृत्यु का वर्णन करता है।हृदय गति रुकना, जिसे कभी-कभी अचानक हृदय गति रुकना भी कहा जाता है, तब होता है जब हृदय धड़कना बंद कर देता है, या दूसरे शब्दों में कहें तो प्रभावी पंप के रूप में काम करना बंद कर देता है।दूसरे शब्दों में, दोनों ही हृदय के ठीक से काम न करने से संबंधित हैं, लेकिन अलग-अलग कारणों से।

उनके लक्षण कैसे हैं?

क्योंकि हृदय गति रुकने के कारण हृदय की प्रभावी पंपिंग अचानक बंद हो जाती है, इसलिए सबसे आम संकेत और लक्षण है अचानक चेतना का खत्म हो जाना, नब्ज या दिल की धड़कन का बंद हो जाना, सांस रुक जाना, तथा त्वचा का पीला या नीला पड़ जाना।लेकिन दिल के दौरे के सामान्य संकेतों और लक्षणों में सीने में दर्द या बेचैनी शामिल है, जो शरीर के अन्य हिस्सों जैसे हाथ, पीठ, गर्दन, जबड़े या पेट में भी हो सकती है। इसके अलावा सांस लेने में तकलीफ, मतली, चक्कर आना और पसीना आना भी आम बात है। **इसका संदेश क्या है?** दिल का दौरा और हृदय गति रुकना हालांकि दोनों ही हृदय से संबंधित विकार है, लेकिन उनके तंत्र और परिणाम अलग-अलग है।दिल का दौरा घर में पानी की आपूर्ति करने वाली पाइपलाइन में रुकावट की तरह है। लेकिन हृदय गति रुकना घर की वायरिंग में बिजली की खराबी की तरह है।

हैरिस ने लोगों को नेशनल ग्रैंड पैरेंट्स डे की बधाई दी, नाना-नानी को याद किया

वाशिंगटन। भारतीय मूल की डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार कमला हैरिस ने रविवार को भारत में अपने नाना-नानी के साथ बिताए बचपन की मधुर यादों को साझा करते हुए सभी दादा-दादी एवं नाना-नानी को नेशनल ग्रैंड पैरेंट्स डे की बधाई दी, जो अगली पीढ़ी को आकार देने और प्रेरित करने में मदद करते हैं। हैरिस ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर पोस्ट में कहा, जब छोटी थी तो भारत में अपने नाना-नानी से मिलने जाया करती थी। मेरे नाना मुझे सुबह की सैर पर ले जाते थे। इस दौरान वह मुझसे समानता के लिए और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई के महत्व पर चर्चा करते। वह एक सेवानिवृत्त नौकरशाह थे जो भारत की आजादी की लड़ाई का हिस्सा रहे थे।

क्विक न्यूज

एनएबी इमरान खान के खिलाफ तोशाखाना 2 भ्रष्टाचार मामले को आगे नहीं बढ़ाएगी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो ने सोमवार को अदालत को सूचित किया कि वह उच्चतम न्यायालय के हालिया फैसले के बाद जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ तोशाखान 2 भ्रष्टाचार मामले को आगे नही बढ़ाएगा।शीर्ष अदालत ने पिछले हफ्ते राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) के नियमों में संशोधन को बहाल कर दिया, जिससे इसका अधिकार सिर्फ 50 अरब रुपए से अधिक के कथित भ्रष्टाचार के मामलों में मुकदमा चलाने तक सीमित हो गया। एनएबी ने इस साल खान (71) और उनकी पत्नी बुशरा बीबी (50) के खिलाफ दायर तोशाखाना 2 मामला दर्ज किया गया था जो इस आरोप पर आधारित है कि उन्होंने कई कीमती उपहारों को सरकारी खज़ाने में जमा कराने के बजाय अपने पास रख लिया। आरोप यह भी है कि दंपति ने इसे फायदे के लिए बेच दिया, जिससे सरकारी खजाने को लगभग 13 अरब रुपए का नुकसान हुआ।

इमरान के खिलाफ सैन्य अदालत में मुकदमा चलाने पर फैसला गुण-दोष के आधार पर लिया जाएगा : मंत्री

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के सूचना मंत्री अत्ताउल्लाह तरार ने सोमवार को कहा कि जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ सैन्य अदालत में मुकदमा चलाने के बारे में कोई भी फैसला मामले के गुण-दोष के आधार पर किया जाएगा। तरार की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है, जब पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के नेताओं ने एक दिन पहले इस्लामाबाद में एक विशाल रैली को संबोधित करते हुए सरकार से इमरान को तत्काल रिहा करने की मांग की थी, जो एक साल से अधिक समय से रावलपिंडी की अडियाला जेल में बंद है। मंत्री ने एक संवाददाता सम्मेलन में एक सवाल के जवाब में कहा, इमरान के खिलाफ सैन्य अदालत में मुकदमा चलाने का फैसला साक्ष्यों के आधार पर मामले के गुण-दोष को देखते हुए किया जाएगा। पाकिस्तान सरकार के शीर्ष अधिकारी नौ मई 2023 की हिंसा में कथित संलिप्तता के लिए इमरान के खिलाफ सैन्य अदालत में मुकदमा चलाए जाने के संकेत देते आए है।

वैश्विक सहकारिता सम्मेलन24 का आयोजन भारत में

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन के 130 साल के लंबे इतिहास में पहली बार इफ्को की पहल पर भारत द्वारा आईसीए महासभा और वैश्विक सहकारिता सम्मेलन की मेजबानी की जाएगी। आईसीए निदेशक मंडल की 28 जून 2023 को ब्रूसेल्स में आयोजित बैठक के दौरान इफ्को ने आईसीए महासभा और वैश्विक सम्मेलन की मेजबानी भारत में करने का प्रस्ताव रखा था जिसे निदेशक मंडल के सदस्यों ने सहर्ष मंजूर कर लिया। इसके पश्चात संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया कि भारत में वैश्विक सहकारिता सम्मेलन के दौरान संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का आधिकारिक शुभारंभ भी होगा। माननीय सहकारिता मंत्रीए भारत सरकार अमित शाह की गरिमामयी उपस्थिति में 25 नवंबर 2024 को शाम 3 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ होगा। वे मुख्य अतिथि के रूप में वैश्विक सहकारिता सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करेंगे। इस कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 पर एक स्मारक डाक टिकट भी जारी किया जाएगा। भारत के माननीय प्रधानमंत्री से इस कार्यक्रम के विधिवत उद्घाटन के लिए अनुरोध किया गया है। जेरोन डगलस महानिदेशक आईसीए ने प्रेस को सूचित किया है कि 25 से 30 नवंबर 2024 तक भारत मंडपमए आईटीपीओए प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम का विषय होगा सहकारिता सबकी समृद्धि का द्वार जेरोन डगलस ने जोर देकर कहा कि इफ्को आईसीए का प्रमुख साझेदार है और इस आयोजन की मेजबानी कर रहा है।

प्रभावी परिचर्चा और साहित्यिक विमर्श के साथ जेएलएफ ह्यूस्टन का समापन

ह्यूस्टन। जयपुर साहित्य उत्सव (जेएलएफ) के सातवें संस्करण का ह्यूस्टन में भव्य आयोजन किया गया जिसमें तीन दिन तक प्रभावी बातचीत, दमदार प्रस्तुतियों और विचारों का उत्सव मनाया गया। विश्व स्तर पर प्रसिद्ध इस साहित्योत्सव में अनेक अंतरराष्ट्रीय स्तर के लेखकों, विचारकों और स्थानीय रचनाकारों ने भाग लिया। साहित्यकारों ने नारीवाद, जलवायु परिवर्तन, साहित्य की सर्जनात्मक शक्ति और व्यक्तिगत और वैश्विक विमर्श के बीच के अंतरसंबंध जैसे सामयिक मुद्दों पर नए दृष्टिकोण प्रस्तुत किए।पहले दिन की शुरुआत रोथको चैपल के सहयोग से प्रतिष्ठित म्यूजियम ऑफ फाइन आर्ट्स में शानदार अंदाज में हुई, जिसमें टीमवर्क आर्ट्स के निर्माता सूरज ढींगरा और प्रबंध निदेशक संजय रॉय ने भूमिका प्रस्तुत की। पहले सत्र में सितार पर शुभेंद्र राव और भारतीय सेलो पर सास्किया राओडे हास ने तबले पर सुब्रतो भट्टाचार्य के साथ भारतीय शास्त्रीय प्रस्तुति दी।

राष्ट्रपति अब्देलमदजीद तेब्बौने अल्जीरिया में भारी बहुमत से फिर से निर्वाचित

अल्जीयर्स। अल्जीरिया के राष्ट्रपति अब्देलमदजीद तेब्बौने अल्जीरिया के राष्ट्रपति चुनाव में विजई घोषित हुए है। कम मतदान और चुनाव में अनियमितताओं के दावों के बीच उन्होंने भारी बहुमत से जीत दर्ज की है। अल्जीरिया में हुए चुनाव में बेहद कम मतदान हुआ था और चुनाव के नतीजों को लेकर खबरों में विसंगतियां थीं। देश के स्वतंत्र चुनाव प्राधिकरण ने रविवार को घोषणा की कि तेब्बौने ने शनिवार के मतदान में 94.7 प्रतिशत मतों से जीत दर्ज की जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी इस्लामिस्ट अब्देलाली हसानी शेरिफ को सिर्फ 3.2 प्रतिशत मत और समाजवादी यूसुफ औचिचे को महज 2.2 प्रतिशत वोट मिले। रविवार को नतीजे सामने आने के बाद तेब्बौने के विरोधियों ने परिणाम पर सवाल खड़े किए।

प्रयोगशालाओं की स्थापना के लिए 4 मिलियन का निवेश

दिल्ली। स्वास्थ्य और खुशहाली में अत्याधुनिक, अगली पीढ़ी का समर्थन प्रदान करने के लिए अपनी वैज्ञानिक क्षमताओं को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए वैश्विक स्वास्थ्य और खुशहाली समर्थक कंपनी के रूप मेंए एमवे ने 4 मिलियन डॉलर के निवेश के साथ आज औपचारिक रूप से भारत भर में अपनी चार अत्याधुनिक अनुसंधान और विकास आर एंड डी प्रयोगशालाओं की शुरुआत की। उन्नत प्रौद्योगिकी, समकालीन विज्ञान और वैज्ञानिक विचार नेतृत्व का उपयोग करके ये प्रयोगशालाएं सुरक्षित, प्रभावी, विशिष्ट और उच्च गुणवत्ता वाले स्वास्थ्य और खुशहाली के उत्पादों को विकसित करके उद्योग मानकों को पुनर्परिभाषित करने के लिए तैयार हैं, जिनका उद्देश्य भारत और दुनिया भर में लोगों के स्वास्थ्य और खुशहाली का समर्थन करना है। यह दुनिया भर में एमवे के चार अनुसंधान और विकास आर एंड डी केंद्रों में से एक है और इसमें पोषण विज्ञान पर भारी ध्यान दिया गया है। यह रणनीतिक कदम एमवे के उपभोक्ताओं की बदलती स्वास्थ्य और खुशहाली से जुड़ी आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रयासों के अनुरूप है।

पोप फ्रांसिस कैथोलिक बहुल देश ईस्ट तिमोर पहुंचे

दिली। पोप फ्रांसिस ईस्ट तिमोर को उसके खूनी तथा दर्दनाक अतीत से उबरने के लिए प्रोत्साहित करने तथा इंडोनेशियाई शासन से आजादी के दो दशकों बाद उसके विकास का जश्न मनाने के लिए सोमवार को इस दक्षिण पूर्व एशियाई देश में पहुंचे। पोप फ्रांसिस दक्षिणपूर्व एशिया और ओशिनिया की अपनी यात्रा के तीसरे चरण में पापुआ न्यू गिनी से दिली पहुंचे। वह तिमोर के नेताओं और राजनयिकों से मुलाकात करेंगे।

हॉकी में भारत की लगातार दूसरी जीत

एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी : जापान को 5-1 से हराया

भाषा। हुलुनबुइर (चीन)

सुखजीत सिंह के दो गोल की मदद से गत चैंपियन भारत ने सोमवार को यहां पुरुष एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी टूर्नामेंट के लीग मैच में जापान को 5-1 से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की। सुखजीत ने दूसरे और 60वें मिनट में गोल किए जबकि अभिषेक (तीसरे), संजय (17वें) और उत्तम सिंह (54वें) अन्य गोल करने वाले भारतीय खिलाड़ी रहे। मात्सुमोतो काजुमासा ने 41वें मिनट में जापान के लिए एक गोल किया। रविवार को अपने शुरुआती राउंड-रॉबिन लीग मैच में चीन को 3-0 से हराने वाली चार बार की चैंपियन भारतीय टीम को दो पेनल्टी कॉर्नर मिले जबकि जापान की टीम ने पांच पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए। भारत ने मैच के दूसरे मिनट में ही सुखजीत के शानदार मैदानी गोल की बदौलत बढ़त हासिल कर ली। सर्कल के दाईं ओर खड़े संजय ने क्रॉस किया जिसे सुखजीत ने तेजी से डिफ्लेक्ट कर दिया।भारत ने अगले मिनट में बढ़त दोगुनी कर दी जब अभिषेक ने कई जापानी डिफेंडरों को चकमा देते हुए गोलकीपर को हैरान करके गोल कर दिया।दूसरे क्वार्टर में भी यही आक्रामक सिलसिला जारी रहा जब संजय ने 17वें मिनट में शानदार पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदला। हाफ टाइम तक 3-0 की बढ़त के साथ भारत अच्छी स्थिति में था जबकि जापान ने शुरुआती झटकों से उबरकर वापसी करने की कोशिश की। टूर्नामेंट के पिछले चरण में तीसरे स्थान पर रहने वाली जापानी टीम ने 21वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर हासिल करने के लिए हमले तेज किए। लेकिन जापान के ड्रैग फ्लिकर भारतीयों के सामने नाकाम रहे।भारतीय टीम ने तेजी से जवाबी हमला किया और इस दौरान जुगराज सिंह ने फ्री हिट हासिल की, पर इसका कोई फायदा नहीं मिला। दूसरे क्वार्टर में एक गोल से भारत ने दबदबा बनाए रखा। इस दौरान उन्होंने 11 बार सर्कल में प्रवेश किया और गोल पर तीन शॉट लगाए। हाफ-टाइम ब्रेक के बाद भारत ने फुर्ती बनाए रखने की कोशिश की। लेकिन जापान ने उन्हें कोई गोल नहीं करने दिया।फिर जापान के लिए 41वें मिनट में काजुमासा ने मैदानी गोल कर दिया। भारतीय गोलकीपर कृष्ण पाठक गोल को रोकने के लिए कुछ खास नहीं कर सके।भारत के लिए चौथे गोल का श्रेय जर्मनप्रीत सिंह के अच्छे स्टिक वर्क को जाता है जिन्होंने बेहतरीन मैदानी गोल करने में उत्तम सिंह की मदद की।फिर अभिषेक की सहायता से सुखजीत ने 60वें मिनट में अपने नाम एक और गोल किया। मैच के नायक अभिषेक ने कहा, आज पूरी टीम ने प्रयास किया और हमने बेसिक्स पर ध्यान दिया। हमने अच्छा आक्रमण किया और सुनिश्चित किया कि हम गोल पर ध्यान लगाए रखें। हरमनप्रीत सिंह की अगुआई वाली टीम बुधवार को पिछले चरण की उपविजेता टीम मलेशिया से भिड़ेगी। मंगलवार को आराम का दिन है। छह टीमों के बीच राउंड-रॉबिन लीग के बाद शीर्ष चार टीमें 16 सितंबर को खेले जाने वाले सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी। फाइनल 17 सितंबर को होगा।

पाक खिलाड़ियों को वीजा मिला, सैफ चैंपियनशिप में भाग लेंगे

लाहौर। भारतीय उच्चायोग से वीजा मिलने के बाद पाकिस्तान का 12 सदस्यीय दल दक्षिण एशियाई एथलेटिक्स महासंघ (सैफ) जूनियर चैंपियनशिप में हिस्सा लेने के लिए सोमवार को चेन्नई के लिए रवाना हो गया। एक अधिकारी ने पुष्टि की कि शनिवार को वीजा मिलने के बाद एथलीट और अधिकारी चेन्नई के लिए रवाना हो गए हैं। अधिकारी ने कहा, पाकिस्तान का दल वाघा सीमा के रास्ते रवाना हो गया है, जहां से वे अमृतसर जाएंगे और वहां से विमान से चेन्नई पहुंचेंगे जहां दक्षिण एशियाई जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप आयोजित की जा रही है। बाद में इस प्रतियोगिता के आयोजक भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) ने कहा कि पाकिस्तानी दल वाघा सीमा पर पहुंच गया है। एएफआई ने टीम की तस्वीर के साथ ट्वीट किया, पाकिस्तान की जूनियर एथलेटिक्स टीम और अधिकारी आज अमृतसर में वाघा सीमा पर पहुंच गए हैं। खिलाड़ी 11 सितंबर से चेन्नई में शुरू होने वाली सैफ जूनियर चैंपियनशिप में भाग लेंगे।

पंत टेस्ट में महान खिलाड़ी बनने की राह पर, थोड़ा सुधार की जरूरत: गांगुली

भाषा। कोलकाता

भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली का मानना है कि ऋषभ पंत टेस्ट क्रिकेट में सर्वकालिक महान खिलाड़ी बनने की राह पर हैं, लेकिन साथ ही उन्हें छोटे प्रारूपों में अपने प्रदर्शन में सुधार करने की जरूरत है। दिसंबर 2022 में कार दुर्घटना में चोटिल होने के बाद पंत को रविवार को पहली बार भारतीय टेस्ट टीम में शामिल किया गया है और पूरी उम्मीद है कि बांग्लादेश के खिलाफ 19 सितंबर से चेन्नई में शुरू होने वाले पहले टेस्ट मैच के लिए उन्हें अंतिम एकादश में शामिल किया जाएगा।पंत ने इस साल के शुरू में सीमित ओवरों के प्रारूप में वापसी की थी और इनमें अच्छा प्रदर्शन किया था।गांगुली ने यहां एक प्रचार कार्यक्रम के दौरान कहा, मैं ऋषभ पंत को भारत के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट बल्लेबाजों में से एक मानता हूं। उनकी टेस्ट क्रिकेट में वापसी से मैं हैरान नहीं हूं। वह भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में खेलते रहेंगे। उन्होंने कहा, अगर वह इसी तरह प्रदर्शन करता रहा तो टेस्ट क्रिकेट के सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में शामिल हो जाएगा। मेरा मानना है कि उसे छोटे प्रारूपों में बेहतर प्रदर्शन करने की जरूरत है। वह प्रतिभाशाली है और मुझे यकीन है कि वह जल्द ही ऐसा करने में सफल रहेगा। मोहम्मद शमी को टखने के ऑपरेशन के कारण टीम में शामिल नहीं किया गया लेकिन गांगुली को विश्वास है कि यह तेज गेंदबाज इस साल के आखिर में होने वाले ऑस्ट्रेलियाई दौरे से पहले पूरी तरह फिट हो जाएगा।उन्होंने कहा, मैं जानता हूं कि मोहम्मद शमी चोटिल होने के कारण टीम में शामिल नहीं है लेकिन वह जल्द ही वापसी करेगा क्योंकि भारत को ऑस्ट्रेलिया का दौरा करना है। भारत का आक्रमण अभी बहुत अच्छा है। गांगुली ने कहा, मैं भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे का इंतजार कर रहा हूं।

यश को राष्ट्रीय टीम में जगह मिलने से परिवार गौरवान्वित

कोलकाता। चंद्रपाल दयाल ने लगभग एक साल तक दोपहर में अपने घर से बाहर निकलना छोड़ दिया था क्योंकि इंडियन प्रीमियर लीग में उनके बेटे यश दयाल के खिलाफ रिंकू सिंह के बल्ले से निकले लगातार पांच छक्कों के बाद उन्हें स्कूल के बच्चों के ताने सुनने पड़ते थे। प्रयागराज के कर्बला मस्जिद के पास स्थित उनके घर के पास से दोपहर के समय जब स्कूल की बस गुजरती थी तो बच्चे रिंकूसिंह... रिंकूसिंह... पांच छक्के...पांच छक्के का नारा लगाते हुए जाते थे। बच्चों का यह बर्ताव चंद्रपाल को अहमदाबाद की उस निराशाजनक शाम की यादों को ताजा कर देता था।

राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे नटराज और अनीश सहित शीर्ष तैराक

मंगलुरु,। ओलंपियन श्रीहरि नटराज, फ्रीस्टाइल विशेषज्ञ अनीश गौड़ा और हर्षिता जयराम मंगलवार से यहां शुरू हो रही 77वीं सीनियर राष्ट्रीय तैराकी चैंपियनशिप में हिस्सा लेने वाले प्रमुख तैराकों में शामिल होंगे। यह टूर्नामेंट 13 सितंबर को समाप्त होगा लेकिन भारतीय तैराकों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक के लिए ए क्वालीफिकेशन मार्क दाव पर लगा होगा। कर्नाटक इस प्रतियोगिता का गत विजेता है जिसमें 31 राज्यों के 500 से अधिक तैराक भाग लेंगे। हाल में पेरिस ओलंपिक की 100 मीटर बैकस्ट्रोक स्पर्धा में भाग लेने वाले नटराज ने कहा कि वह इस प्रतियोगिता में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहते है।

इंग्लैंड के लिए 100वां अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने पर हैरी केन का होगा सम्मान

लंदन। इंग्लैंड के फुटबॉल टीम कप्तान हैरी केन को मंगलवार को वेम्बली में फिनलैंड के खिलाफ नेशंस लीग मैच से पहले अपने देश के लिए 100वां मैच खेलने के अवसर पर सोने की टोपी प्रदान की जाएगी।इंग्लैंड की टीम मंगलवार को फिनलैंड के खिलाफ खेलेगी।बायर्न म्यूनिख का यह दिग्गज स्ट्राइकर इस मुकाबले में 100 मैच खेलने वाला इंग्लैंड का 10वां खिलाड़ी बनेगा। वह 2014 में वेन रूनी के बाद इस उपलब्धि को हासिल करने वाले देश के पहले खिलाड़ी होंगे।

जूनियर सुब्रतो कप फाइनल में मेघालय का मुकाबला मणिपुर से होगा

नई दिल्ली। बैगनसन की हैट्रिक गोल की मदद से मिंगकेन क्रिश्चियन एचएसएस, मेघालय ने सोमवार को यहां गवर्नमेंट सेकेंडरी स्कूल, अरुणाचल प्रदेश को 7-0 से रौंद कर 63वें सुब्रतो कप जूनियर बालक अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया। मिंगकेन क्रिश्चियन एचएसएस के सामने बुधवार को यहां के अंबेडकर स्टेडियम में खेले जाने वाले फाइनल में टी.जी. इंग्लिश स्कूल विष्णुपुर, मणिपुर की चुनौती होगी। टी.जी. इंग्लिश स्कूल ने दिन के दूसरे सेमीफाइनल में श्रीलंका स्कूल फुटबॉल एसोसिएशन को एक गोल से हराया।

रोनाल्डो के रिकॉर्ड 132वें गोल से जीता पुर्तगाल

लंदन। क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने फिर से साबित किया कि वह 39 वर्ष के होने के बावजूद पुर्तगाल के लिए क्यों महत्वपूर्ण है।इस स्टार स्ट्राइकर ने मध्यांतर के बाद स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप में मैदान पर कदम रखा और 88वें मिनट में निर्णायक गोल किया। इससे पुर्तगाल ने नेशन्स कप फुटबॉल टूर्नामेंट में स्कॉटलैंड को 2-1 से हराया।पांच बार वर्ष के विश्व में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए रोनाल्डो का यह अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में 132वां गोल था जो विश्व रिकॉर्ड है।

सीरिया ने भारत को हराकर इंटरकॉन्टिनेंटल कप जीता

हैदराबाद। सीरिया ने रणनीतिक रूप से दमदार खेल दिखाते हुए सोमवार को यहां इंटरकॉन्टिनेटल कप फुटबॉल टूर्नामेंट मे भारतीय टीम को 3-0 से हराकर खिताब अपने नाम किया।सीरिया के लिए महमूद अल असवाद (सातवें), दालेहो ईरानदुस्त (76वें) और पाब्लो सब्बाग (90+6 मिनट) ने गोल दागे। भारत को इससे पहले तीन सितंबर को मॉरीशस ने गोलरहित बराबरी पर रोका था, जबकि सीरिया ने मॉरीशस को 2-0 से हराया था।

सिनर बने अमेरिकी ओपन चैंपियन, अमेरिका का इंतजार बढ़ा

टेलर फ्रिट्ज़ को सीधे सेटों में हराया

भाषा। न्यूयॉर्क

पिछले दिनों डोपिंग मामले में दोष मुक्त होने वाले दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी यानिक सिनर ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज़ को सीधे सेटों में हराकर अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट में पुरुष एकल का खिताब जीता।सिनर ने आर्थर ऐश स्टेडियम में खेले गए फाइनल में 12वीं वरीयता प्राप्त फ्रिट्ज़ के खिलाफ अपने बेसलाइन के खेल का शानदार नमूना पेश किया और 6-3, 6-4, 7-5 से जीत दर्ज करके अमेरिका का वर्ष के इस अंतिम ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट में पुरुष एकल का खिताब जीतने का पिछले 21 वर्षों से चला आ रहा इंतजार बढ़ा दिया।इटली के 23 वर्षीय सिनर ने कहा, मेरे लिए यह ट्रॉफी काफी मायने रखती है क्योंकि मेरे करियर का पिछला कुछ समय काफी मुश्किल भरा था। सिनर के करियर का यह दूसरा ग्रैंड स्लैम खिताब है। उन्होंने इस साल के शुरू में ऑस्ट्रेलियाई ओपन में भी पुरुष एकल की ट्रॉफी जीती थी। फ्रिट्ज़ के पास अमेरिका का इंतजार खत्म करने का मौका था लेकिन फाइनल में उनकी सिनर के सामने एक नहीं चली जिससे दर्शक काफी मायूस हुए।एंडी रोडिक अमेरिका के आखिरी खिलाड़ी थे जिन्होंने अमेरिकी ओपन में पुरुष एकल का खिताब जीता था। उन्होंने 2003 में यहां ट्रॉफी जीती थी। फ्रिट्ज़ पहली बार किसी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के फाइनल में खेल रहे थे। वह 2009 के बाद किसी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचने वाले अमेरिका के पहले पुरुष खिलाड़ी थे। उनसे पहले ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट में पहुंचने वाले आखिरी खिलाड़ी भी रोडिक थे जो 2009 में विंबलडन में रोजर फेडरर से हार गए थे। फ्रिट्ज़ ने कहा, अमेरिकी ओपन के फाइनल में किसी अमेरिकी का होना अविश्वसनीय है। मुझे पूरे सप्ताह दर्शकों का भरपूर समर्थन मिला। इसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। उन्होंने कहा, मैं जानता हूं कि हम लंबे समय से चैंपियन का इंतजार कर रहे हैं। इसलिए मुझे अफसोस है कि मैं इस बार यह इंतजार खत्म नहीं कर पाया। लेकिन मैं अपना प्रयास जारी रखूंगा और उम्मीद है कि अगले साल इसे खत्म करने में सफल रहूंगा।

सिनर ने शीर्ष पर अपनी बढ़त दोगुनी की, फ्रिट्ज एटीपी रैंकिंग में शीर्ष 10 में पहुंचे

न्यूयॉर्क। अमेरिकी ओपन के पुरुष चैम्पियन यानिक सिनर ने सोमवार को जारी एटीपी रैंकिंग में नंबर एक स्थान पर अपनी बढ़त दोगुनी करने में सफल रहे जबकि उपविजेता टेलर फ्रिट्ज शीर्ष 10 में और महिला उप विजेता जेसिका पेगुला डब्ल्यूटीए रैंकिंग मे तीसरे नंबर पर पहुंची। वही महिला चैंपियन आर्यना सबालेंका डब्ल्यूटीए रैंकिंग मे इगा स्वियातेक के पीछे दूसरे नंबर पर रही। सबालेंका ने 2024 में दो ग्रैंड स्लैम खिताब जीते है, उन्होंने जनवरी में ऑस्ट्रेलियन ओपन जीता था। नोवाक जोकोविच तीसरे राउंड मे एलेक्सी पोपिरिन से पराजित होने के बाद रैंकिंग मे दूसरे स्थान से चौथे स्थान पर खिसक गए। अलेक्जेंडर ज्वेरेव दूसरे नंबर पर और उनके बाद कार्लोस अल्काराज तीसरे स्थान पर है। डेनियल मेदवेदेव पांचवे और एंड्री रूबलेव छठे स्थान पर बने हुए है।

ईस्ट दिल्ली बना दिल्ली प्रीमियर लीग का चैंपियन

नई दिल्ली। ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने रविवार को यहां खेले गए फाइनल में साउथ दिल्ली सुपरस्टार पर तीन रन की रोमांचक जीत से दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल) टी20 क्रिकेट टूर्नामेंट का खिताब जीता।ईस्ट दिल्ली ने पहले बल्लेबाजी करते हुए मयंक रावत की 39 गेंद पर नाबाद 78 रन की पारी की मदद से पांच विकेट पर 183 रन का चुनौती पूर्ण स्कोर बनाया। साउथ दिल्ली की टीम उसके जवाब में नौ विकेट पर 180 रन ही बना पाई।मयंक रावत ने अपनी पारी में सात चौके और छह छक्के लगाए। उनके अलावा हिम्मत सिंह ने 20 और हार्दिक शर्मा ने 21 रन का योगदान दिया। साउथ दिल्ली की तरफ से राघव सिंह और कुलदीप यादव ने दो-दो विकेट लिए।

बांग्लादेश के खिलाफ राहुल को मिलेगा अनुभव का लाभ

भाषा। नई दिल्ली

इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू श्रृंखला में सरफराज खान के साहसिक रवैए ने सभी को प्रभावित किया लेकिन बांग्लादेश के खिलाफ भारत के सत्र की शुरूआती टेस्ट श्रृंखला के लिए अंतिम एकादश का चयन करने की बात आएगी तो केएल राहुल का अनुभव उन्हें फायदा दिलाएगा। टीम प्रबंधन और चयन समिति का पूरा ध्यान नवंबर-दिसंबर में होने वाले ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है और राहुल को 50 टेस्ट मैचों के खेलने का अनुभव है जिससे उन्हें फायदा होगा। टीम प्रबंधन के लिए यह एक युवा खिलाड़ी (सरफराज) की निडरता तथा टेस्ट कप्तान रहे एक अनुभवी खिलाड़ी के बीच चयन है जो एक दशक से राष्ट्रीय टीम का हिस्सा है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने गोपनीयता की शर्त पर कहा, बाहर के लोगों को यह समझ में नहीं आता कि टीम कैसे काम करती है और किस तरह की व्यवस्था होती है। केएल ने अपने पिछले तीन टेस्ट मैच दक्षिण अफ्रीका में शतक बनाया जो हाल के समय में सर्वश्रेष्ठ टेस्ट पारियों में से एक है और चोट लगने से पहले हैदराबाद में अपने पिछले टेस्ट में 86 रन बनाए। उन्होंने कहा, उन्हें टीम से बाहर नहीं किया गया बल्कि वह चोटिल हो गए। इसलिए वह फिट और उपलब्ध हैं, उन्होंने दलीप में अर्धशतक बनाया, उन्हें मैच खेलने का मौका मिला और वह खेलेंगे।घरेलू क्रिकेट के स्टार सरफराज ने इंग्लैंड के खिलाफ राजकोट में अपने पहले मैच में दो अर्धशतक और धर्मशाला में उसी प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ एक और अर्धशतक लगाकर शुरूआत की, जिसमें उन्होंने तेज और धीमे दोनों गेंदबाजों के खिलाफ सटीक फुटवर्क और सुधार दिखाया। सूत्र ने कहा, सरफराज ने सब कुछ सही किया है। अगर कोई भी खिलाड़ी चोटिल होता है तो उन्हें खिलाया जाएगा। लेकिन राहुल के अनुभव की कोई सानी नहीं है। उन्होंने कहा, टीम प्रबंधन सिर्फ बांग्लादेश को ही नहीं देख रहा है बल्कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ श्रृंखला पर भी ध्यान लगाए है, जहां पिछला अनुभव मायने रखता है। राहुल चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया के पिछले दो टेस्ट दौरों में नहीं खेल पाए थे लेकिन 2014 में उन्होंने सिडनी में शतक बनाया था। हालांकि 50 टेस्ट के बाद राहुल का औसत 35 से कम है जो इतना अच्छा नहीं है। लेकिन सिडनी, लॉर्ड्स, ओवल, सेंचुरियन जैसे बड़े विदेशी मैदानों पर रन बनाना कर्नाटक के इस खिलाड़ी को आगे रखता है। निरंतरता की बात ऋषभ पंत और ध्रुव जुरेल के बीच भी लागू रहेगी।

क्विक न्यूज

श्रीलंका ने आठ विकेट की जीत के साथ इंग्लैंड को सूपड़ा साफ करने से रोका।

लंदन। सलामी बल्लेबाजी पथुम निसंका (नाबाद 127) की आक्रामक शतकीय पारी के दम पर श्रीलंका ने तीन मैचों की श्रृंखला के आखिरी टेस्ट के चौथे दिन सोमवार को यहां आठ विकेट की जीत के साथ इंग्लैड को सूपड़ा साफ करने से रोक दिया। इंग्लैड की धरती पर यह श्रीलंका की सिर्फ चौथी जीत है। इंग्लैड की टीम ने श्रृंखला 2-1 से जीत ली, लेकिन जुलाई में वेस्टइंडीज को 3-0 से हराने वाली यह टीम लगातार दूसरी श्रृंखला मे क्लीन स्वीप करने से चूक गई। श्रीलंका ने द ओलल मैदान पर दिन की शुरुआत एक विकेट पर 94 रन से की थी और उसे जीत के लिए और 125 रन की जरूरत थी। टीम ने दिन के पहले सत्र मे ही आक्रामक अंदाज मे बल्लेबाजी कर इसे हासिल कर लिया। श्रीलंका के मैच के तीसरे दिन रविवार को इंग्लैंड की दूसरी पारी को 34 ओवर में 156 रन पर समेट कर जीत की नीव रखी थी। टीम ने 40.3 ओवर में जीत के लिए मिले 219 रन के लक्ष्य को हासिल कर लिया। निसंका ने 124 गेंद की पारी में 13 चौके और दो छक्के जड़े। उन्होंने 107 गेंद में अपना शतक पूरा करने के बाद हाथ ऊपर उठा कर जश्न मनाया। उन्होंन इसके बाद अपने बल्ले को चूमा और आकाश की तरफ देखने लगे।

भारतीय टीम ने बधिर निशानेबाजी विश्व कप में सात स्वर्ण सहित 21 पदक जीते: एनआरएआई

नई दिल्ली। भारतीय राष्ट्रीय राइफल महासंघ (एनआरएआई) ने सोमवार को बताया कि भारत ने जर्मनी के हनोवर में दूसरी विश्व बधिर निशानेबाजी चैंपियनशिप में सात स्वर्ण सहित 21 पदक जीतकर तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। रविवार को समाप्त हुए टूर्नामेंट में भारत ने सात रजत और इतने ही कांस्य पदक भी जीते।एनआरएआई की एक विज्ञप्ति के अनुसार, यूक्रेन सात स्वर्ण, पांच रजत और छह कांस्य के साथ दूसरे स्थान पर और मेजबान जर्मनी दो स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य पदक के साथ तीसरे स्थान पर रहा। स्पर्धा के आखिरी दिन माहित संधू ने महिलाओं की 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन (3पी) मे स्वर्ण पदक जीता। अभिनव देशवाल ने पुरुषों की 25 मीटर स्टैंडर्ड पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक हासिल किया, जबकि चेतन हनमंत सपकाल ने इसी स्पर्धा में कांस्य पदक हासिल किया। भारतीय टीम मे 13 निशानेबाज शामिल थे जिन्होंने चैंपियनशिप की 16 मे से 15 स्पर्धाओ में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में 16 देशो के 70 प्रतिभागी थे। पिस्टल निशानेबाज देशवाल ने पांच पदक (एक स्वर्ण और चार रजत) जीतकर सर्वाधिक व्यक्तिगत पदकों जीते। संधू ने चार (तीन स्वर्ण और एक रजत) पदक अपने नाम किया जबकि धनुष श्रीकांत ने दो स्वर्ण पदक जीते। धनुष ने 10 मीटर एयर राइफल के व्यक्तिगत और मिश्रित स्पर्धा का स्वर्ण जीता। अनुया प्रसाद (महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल) और शौर्य सैनी (पुरुषों की 50 मीटर थ्री पी) ने भारतीय टीम के लिए अन्य स्वर्ण पदक जीते। भारतीयों ने इस आयोजन में कई बधिर विश्व रिकॉर्ड और चैम्पियनशिप रिकॉर्ड कायम किए।

एसए20 में इम्पैक्ट प्लेयर नियम जल्दबाजी होगी: स्मिथ

चेन्नई। एसए20 लीग कमिश्नर और दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान ग्रीम स्मिथ का कहना है कि यह टूर्नामेंट इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के इम्पैक्ट प्लेयर नियम जैसी नई चीजों के प्रयोग के लिए खुला है लेकिन फिलहाल वह खेल प्रेमियो के लिए इसे सरल रखने पर ध्यान लगाए है। आईपीएल का इम्पैक्ट प्लेयर नियम टीमों को मैच के किसी भी समय अपनी पसंद के एक खिलाड़ी को बदलने की अनुमति देता है। इसे पिछले सत्र में आईपीएल में शुरू किया गया था जिस पर राय विभाजित थी कि क्या यह हरफनमौला खिलाड़ियो की भूमिका को कम कर रहा है क्योंकि टीमें ज्यादातर मौकों पर बड़े हिट लगाने वाले खिलाड़ियों को चुनती हैं। स्मिथ ने कहा कि एसए20 अभी के लिए सरल और पारंपरिक क्रिकेट पर डटे रहने का इरादा रखता है। अगले साल जनवरी-फरवरी मे होने वाले एसए20 के तीसरे सत्र से पहले स्मिथ ने पीटीआई से कहा, आईपीएल और इसके इम्पैक्ट प्लेयर नियम की तुलना मे हम कम प्रयोग कर रहे है। हम टूर्नामेंट को मजबूत बनाए रखते हुए यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि लोग इसके क्रिकेट पहलू को समझें।

पैरालंपिक खेलों का समापन, चीन का रहा दबदबा

पेरिस। खूबसूरत लाइट शो और फ्रांस के इलेक्ट्रॉनिक संगीत के साथ रविवार को यहां पेरिस पैरालंपिक खेलो का समापन हो गया।जीन-मिशेल जें ने स्टेड डी फ्रांस मे पार्टी की शुरुआत की। उन्होंने अपने संगीत से खिलाड़ियों, स्वयंसेवकों और दर्शकों को थिरकने के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम के आखिर में लाइट शो का आयोजन किया गया जिसे देखकर दर्शक मंत्र मुग्ध हो गए। खेलो के आखिरी दिन दो विश्व रिकॉर्ड बने। मोरक्को की फातिमा एज़ाहरा एल इदरीसी ने दृष्टिबाधित धावकों के लिए महिला मैराथन में नया विश्व रिकॉर्ड बनाया जबकि नाइजीरिया की फोलाशेड ओलुवाफेमियायो ने महिला पैरा पावरलिफ्टिंग मे अपना ही विश्व रिकॉर्ड तोड़ा। इन खेलों मे चीन का दबदबा रहा जबकि भारत ने भी रिकॉर्ड 29 पदक जीते। भारत ने सात स्वर्ण, नौ रजत और 13 कांस्य पदकों के रिकॉर्ड के साथ पेरिस पैरालंपिक खेलों का समापन किया और पदक तालिका मे 18वें स्थान पर रहा।भारत तोक्यो मे पिछले पैरालंपिक खेलों में पांच स्वर्ण, आठ रजत और छह कांस्य पदक के साथ 24वें स्थान पर था।

पीकेएल का आगाज तेलुगु टाइटंस और बेंगलुरु बुल्स के बीच मुकाबले से होगा

नई दिल्ली। प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के 11वें सत्र का आगाज 18 अक्टूबर को हैदराबाद मे तेलुगु टाइटंस और बेंगलुरु बुल्स के बीच मुकाबले के साथ होगा। आयोजकों ने सोमवार को यह जानकारी दी।लीग का आयोजन तीन शहरो मे होगा। हैदराबाद के गाचीबोवली इंडोर स्टेडियम मे 18 अक्टूबर से नौ नवंबर तक इसके शुरुआती चरण का आयोजन होगा।पीकेएल के आयोजक मशाल स्पोर्ट्स ने कहा कि इसके बाद 10 नवंबर से एक दिसंबर तक दूसरे चरण का आयोजन नोएडा इंडोर स्टेडियम में होगा। तीसरा चरण तीन दिसंबर से 24 दिसंबर तक पुणे के बालेवाड़ी बैडमिंटन स्टेडियम मे होगा। शुरुआती मैच मे स्टार रेडर पवन सेहरावत की मौजूदगी वाली तेलुगु टाइटंस का मुकाबला बेंगलुरु बुल्स से होगा।

भारत के पिछले दो टेस्ट दौरों में ऑस्ट्रेलिया को उसकी मांद में हराने से प्रतिद्वंद्विता बढ़ी: ख्वाजा

नई दिल्ली। आस्ट्रेलिया के सीनियर बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा को लगता है कि भारत ने पिछली दो टेस्ट श्रृंखलाओ मे उनकी टीम को उसकी मांद मे हराकर दोनो टीमो के बीच प्रतिद्वंद्विता बढ़ा दी है। दोनो टीमे 22 नवंबर से शुरू होने वाली पांच मैचो की श्रृंखला मे आमने सामने होंगी। भारत ने ऑस्ट्रेलिया को उसके पिछले दो दौरों (2018-19 और 2020-21) मे 2-1 के समान अंतर से हराया था। बल्कि भारत ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी की पिछली सभी चार श्रृंखलाएं जीती है जिसमे 2016-17 और 2022-23 मे अपनी सरजमी पर मिली जीत भी शामिल है जिसमे भी नतीजा 2-1 का रहा था। ख्वाजा ने कहा, भारतीयों के लिए हमेशा ऑस्ट्रेलिया को हराना अहम रहा है।

कुंवर ग्लोबल स्कूल ओवरऑल विजेता, लखनऊ अकादमी अव्वल

पदक विजेताओं के नाम इस प्रकार हैंस्वर्ण - विहान यादव, काजल पाण्डेय, काव्या सिंह, अर्पिता मौर्या, प्रज्ञायंशी सिंह, नित्रा सिंह, आफिया परवीन, अर्पिता मौर्या, इकरामा, अनमोल यादव, शौर्य प्रताप सिंह, हर्षित, अंश यादव, अंश वर्मा, नैतिक वाल्मीकि, मायरा कुशवाहा, साक्षी दीक्षित, वैभव पटेल, मेहुल शुक्ला, काव्या दिवाकर, आयुष कुमार, अर्चित अवस्थी।,रजत अंकिता त्रिपाठी, अग्रिया सिंह, शांभवी श्रीवास्तव, अवंतिका तिवारी, देवांशु कुमार गिरि, अंश कुमार गौतम, कृतार्थ शुक्ला, रेयांश अस्थाना, कृष्णम। कांस्य- देवांश मिश्रा, सौभाग्य श्रीवास्तव, आदित्य कुमार यादव, दिव्यांशी शर्मा, अदिति तिवारी, सृष्टि सिंह।

लखनऊ। कुंवर ग्लोबल स्कूल ने लखनऊ ओपन इंटर स्कूल ताइक्वांडो चैंपियनशिप-2024 में 108 अंक के साथ ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी अपने नाम कर ली। दूसरी ओर क्लब/ अकादमी श्रेणी में लखनऊ ताइक्वांडो अकादमी 182 अंक के साथ ओवरऑल विजेता बनी। लखनऊ जिला ताइक्वांडो एसोसिएशन के तत्वावधान में सनराइज ताइक्वांडो अकादमी द्वारा राजाजीपुरम मिनी स्टेडियम में रविवार को आयोजित चैंपियनशिप में कुंवर ग्लोबल स्कूल की टीम 108 अंक के साथ पहले स्थान पर रही। इस श्रेणी में सेंट एंजनीज स्कूल 72 अंक के साथ दूसरे व सिद्धांत वर्ल्ड स्कूल 69 अंक के साथ तीसरे स्थान पर रहा। क्लब/ अकादमी श्रेणी में लखनऊ ताइक्वांडो अकादमी 182 अंक के साथ पहले स्थान पर रही। सनराइज ताइक्वांडो अकादमी 159 अंक के साथ दूसरे स्थान पर रही जबकि लखनऊ ताइक्वांडो क्लब को 123 अंक के साथ तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। विशेष पुरस्कारों में एक्टिव पार्टिसिपेशन अवार्ड सेंट एंथोनी पब्लिक स्कूल व बेस्ट डिस्पिलिन्ड टीम अवार्ड उत्कर्ष श्रीवास्तव पब्लिक स्कूल को मिला। चैंपियनशिप के समापन व पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ के कोषाध्यक्ष डा.सैयद रफत जुबैर रिजवी एवं अति विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन के अध्यक्ष शैलेश कुमार शैलू ने पदक विजेताओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के तौर पर पूर्व पार्षद शिवपाल सांवरिया व गोमती हेल्थी न्यूट्रीएंट्स प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक राजकुमार बत्रा की भी गरिमामयी मौजूदगी रही।समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन व लखनऊ जिला ताइक्वांडो एसोसिएशन के सचिव राजकुमार ने बताया कि इस चैंपियनशिप में लखनऊ के 50 क्लब/स्कूल/अकादमी के 700 से अधिक खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर लखनऊ ताइक्वांडो संघ के कोषाध्यक्ष मोहित कुमार व अध्यक्ष आनंद मणि जुगरान, आयोजन समिति के चेयरमैन मुख्तार अहमद, अध्यक्ष मोहसिन खान व सचिव बिलाल खान सहित अन्य मौजूद थे।

लवकुश नगर गौरी वारियर्स ने जीत से शुरू किया अभियान

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट

लखनऊ। वाल्मीकि विकास सेवा संस्थान के तत्वावधान में डीपी फाउंडेशन द्वारा आयोजित 23वां आदिकवि महर्षि वाल्मीकि टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट में सोमवार को उद्घाटन मैच में लवकुश नगर गौरी वारियर्स ने पीएमसी स्पोर्ट्स क्लब को 40 रन से हराकर अपना अभियान शुरू किया। एलडीए स्टेडियमए अलीगंज पर खेले गए मुकाबलों में दिन के अन्य मैचों में सीतापुर क्रिकेट क्लब ने टाइगर क्लब को 6 विकेट एवं नेशनल क्रिकेट क्लब ने डालीगंज क्रिकेट क्लब को 3 विकेट से हराया।पहले मैच में लवकुश नगर गौरी वारियर्स ने पीएमसी के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में 5 विकेट पर 122 रन बनाए। अविनाश व मन्नू ने 27-27 रन का योगदान किया। पीएमसी से अक्षत को 2 विकेट की सफलता मिली। जवाब में पीएमसी स्पोर्ट्स क्लब निर्धारित ओवर में 82 रन ही बना सका। टीम से गौरव व विशाल ही 15.15 रन बनाकर कुछ प्रतिरोध कर सके। लवकुश नगर गौरी वारियर्स से मैन ऑफद मैच छोटू को 3 विकेट की सफलता मिली।दिन के दूसरे मैच में सीतापुर क्रिकेट क्लब ने मैन ऑफ द मैच अनूप 2 विकेट 30 रन के आलराउंड खेल से टाइगर क्लब को 6 विकेट से हराया। टाइगर क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 6 विकेट पर 104 रन बनाए। कप्तान सुरेंद्र ने 12 गेंदों पर 4 छक्के से सबसे ज्यादा 28 रन बनाए। मोंटी ने 18 व अर्पित ने 16 रन का योगदान किया।सीतापुर क्रिकेट क्लब से अनूप को 2 विकेट की सफलता मिली। जवाब में सीतापुर क्रिकेट क्लब ने निर्धारित ओवर में 4 विकेट पर 109 रन बनाकर मैच जीत लिया। अनूप ने 16 गेंदों पर 30 रनए अनुराग ने 28 रन व अंकित ने 19 रन बनाकर टीम को जीत दिलाई।तीसरे मैच में नेशनल क्रिकेट क्लब ने मैन ऑफद मैच रौनित नाबाद 30 की पारी से डालीगंज क्लब को 3 विकेट से शिकस्त दी। डालीगंज क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 81 रन बनाए। दीपू 17 व कमल 15 रन बनाए। जवाब में नेशनल क्रिकेट क्लब ने 9.2 ओवर में 7 विकेट पर 82 रन बनाकर मैच जीत लिया। जीत में कप्तान रौनित ने नाबाद 30 व अंकित ने 11 रन बनाए। डालीगंज क्लब से रॉबिन को 4 विकेट की सफलता मिली।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोनः 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादकः शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः विजय प्रकाश सिंह। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।